Rs. 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जुलाई 2010

- हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और क़ुरआन
  –किशनलाल अग्रवाल
- क़ुरआन, हिन्दूशास्त्र और राजनीतिशास्त्र
  –अभिजीत कुमार
- अंधकार, प्रकाश और क़ुरआनी शिक्षाएं
  –सैयद वक़ार अहमद हुसैनी

RASHTRIYA TECHNICAL INSTITUTE

An ISO 9001-2008 Certified Institute

देश विदेश में नौकरी हेतू प्रशिक्षण केन्द्र



Quality Controller



Instrument Technician



Industrial Safety



Excavator Operator



JCB Operator



Mobile Crane



Plant Electrician



Welding

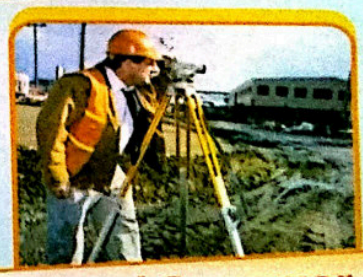

Land Surveyor



Auto Cad & Draftsman

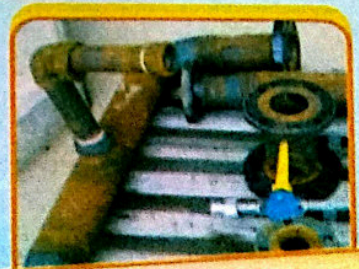

Pipe Fitter & Fabricator



Water Treatment

- Arc 6G Welding
- Tig (Argon) 6G Welding
- Store Keeper
- Forklift Oprt.
- Plant Air Condition
- English Spoken

Note
सभी Course में English Spoken और Computer की Training मुफ्त दी जा रही है।

Address:- Near Hanuman Mandir, Opst. Gandhi Maidan, Azadnagar, Jamshedpur Jharkhand, Phone- 0657-2364067, 9334858068, 9334617411. www.rtijsr.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 20 अंक 2 जुलाई 2010

उन्होंने सच को झुठला दिया, जबकि वह उनके पास आया । अत: जिस चीज़ की वे हंसी उड़ाते रहे हैं, जल्द ही उसके संबंध में उन्हें ख़बरें मिल जाएंगी । (कुरआन, 6:5)

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं
संपादकीय मामलों के लिए लिखें–
संपादक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार
एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–
प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
फोन–(011)–26949430
ई मेल kantimasik@gmail.com

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-
वार्षिक रु० 160/-
दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल
यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

नोट–चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

इसलिए अरमान क़ातिल के अभी निकले नहीं
मरने वाले मर गये चुपचाप कुछ तड़पे नहीं

जिसने जो चाहा उसे अपना बताकर ले लिया
जानते थे सब, किसी से हम कभी लड़ते नहीं

जब्र[1] था तारीख़[2] का या और कोई बात थी
मस्अले[3] उलझे कुछ ऐसे, आज तक सुलझे नहीं

जाने क्या-क्या ले गये और दे गये हैं बस फ़रेब
अजनबी मेहमान मेरे सुब्ह तक ठहरे नहीं

मुझको ये एहसास मैं इतना भी झुक कर क्यों मिला
और हज़रत को ये गुस्सा हाथ क्यों चूमे नहीं

उसके बेटे की भी क्यों तारीफ़ उससे कीजिए
जाने अब उनकें मरासिम[4] कैसे हैं कैसे नहीं

तब्सरा[5] हम भी करेंगे तैरने वालों पे आज
गरचे पानी में कभी हम आज तक उतरे नहीं

फ़न से जो फ़नकार ख़ाली थे वो क्या पाते मक़ाम
यार लोगों ने उभारा तो, मगर उभरे नहीं

इस अयादत[6] से तसल्ली भी हुई तकलीफ़ भी
कुछ तरस खा कर मुझे देखा मगर बोले नहीं

आह ये बेफ़ैज़[7] अह्ले-शानो-शौकत[8] ऐ 'हफ़ीज़'
ऐसे महलों की तरह हैं, जिनमें दरवाज़े नहीं ।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. दमन, ज़ोर-ज़बरदस्ती 2. इतिहास 3. समस्याएं 4. आचार-व्यवहार 5. टिप्पणी 6. रोगी का हाल पूछने और उंसे तसल्ली देने के लिए उसके पास जाना 7. अनुपकारी 8. ठाठ-बाट वाले ।



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
मध्य मार्ग अपनाना और थोड़े पर संतोष (हदीस प्रभा)		6
फ़त्वों का विरोध क्यों ? (संपादकीय)		7
सनातन धर्म का अन्तिम संदेष्टा अवतरित (आपके पत्र)		8
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और क़ुरआन (उद्‌गार)	–किशनलाल अग्रवाल	11
हज़रत उम्मे अला अंसारिया रज़ि॰ (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	13
मीरयूला लैला ज़ीसनी (प्रकाश की ओर)		15
क़ुरआन, हिन्दू धर्म-ग्रंथ और राजनीतिशास्त्र (अध्ययन)	–अभिजीत कुमार	19
पलाश वन दहकते हैं (पुस्तक-समीक्षा)		21
सत्याग्रह (कहानी)	–मुंशी प्रेमचन्द	23
अंधकार, प्रकाश और क़ुरआन की शिक्षाएं	–सैयद वक़ार अहमद हुसैनी	26-27
अमजदी बेगम (इतिहास के झरोखे से)	–डॉ॰ आबिदा समीउद्दीन	31
विश्व घटना-चक्र	–मुशर्रफ़ अली	39
दुष्यंत की ग़ज़लें		41
पेड़ न काटें, पेड़ लगाएं (कविता)	–आसिफ़ ख़ान 'आदिल'	41
ईश्वर है सबका स्वामी (कविता)	–अलाउद्दीन हमज़ा रहमानी	41
फूड पॉइज़निंग (स्वास्थ्य चर्चा)	–ज़िल्ले रहमान	43
पुस्तक प्रकाशन (कैरियर)	–संपादन प्रभाग	44
आतंकवादी (लघुकथा)	–डॉ॰ पूरन सिंह	45
ख़ुदा (कविता)	–देवेन्द्र कुमार मिश्र	45
चंगेज़ ख़ां और मुसलमान	–एहसान शौक़	47
मौसमों का महत्व (बालवीथी)		49

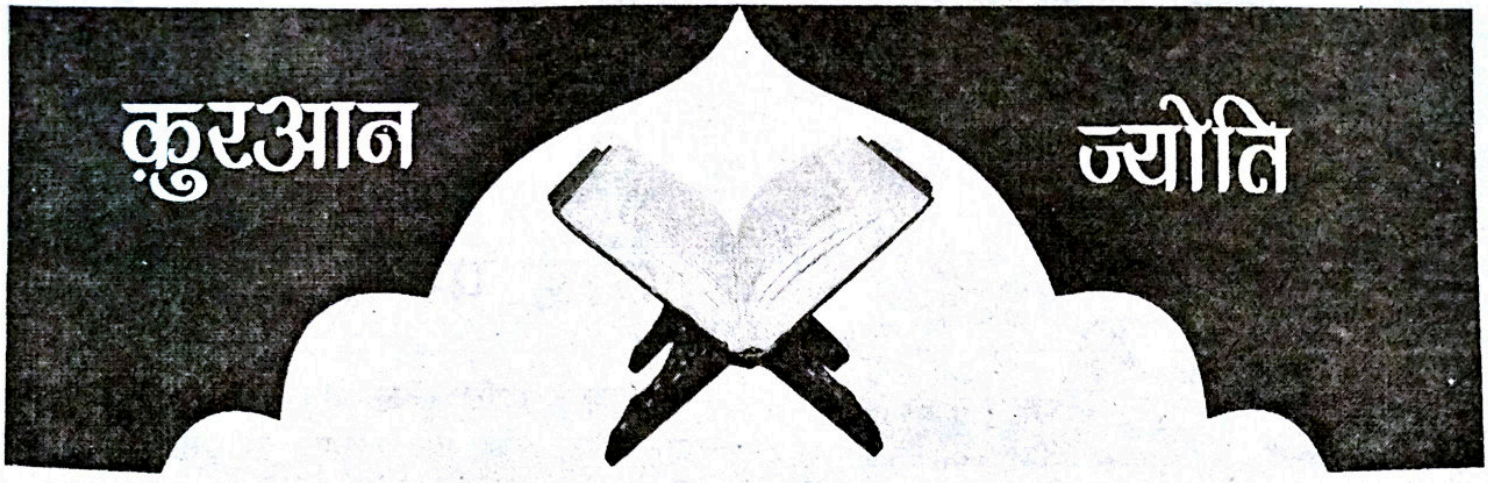

तुम लोग अल्लाह को छोड़कर जिन्हें पुकारते हो वे तो केवल बन्दे हैं, जैसे तुम बन्दे हो। इनसे दुआएं मांग के देखो, ये तुम्हारी दुआओं का जवाब दें अगर इनके बारे में तुम्हारे विचार सही हैं। क्या ये पैर रखते हैं कि उनसे चलें ? क्या ये हाथ रखते हैं कि उनसे पकड़ें ? क्या ये आंखें रखते हैं कि उनसे देखें ? क्या ये कान रखते हैं कि उनसे सुनें ?[148] ऐ मुहम्मद (सल्ल०), इनसे कहो कि "बुला लो अपने ठहराये हुए साझीदारों को, फिर तुम सब मिलकर मेरे ख़िलाफ़ तदबीरें करो और मुझे कदापि मोहलत न दो, मेरा समर्थक और सहायता करने वाला वह अल्लाह है जिसने यह किताब उतारी है, और वह नेक आदमियों का समर्थन करता है।[149] इसके विपरीत तुम जिन्हें अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो वे न तुम्हारी सहायता कर सकते हैं और न स्वयं अपनी सहायता ही करने के क़ाबिल हैं, बल्कि अगर तुम उन्हें सीधी राह पर आने के लिए कहो तो वे तुम्हारी बात सुन भी नहीं सकते। देखने में तुमको ऐसा नज़र आता है कि वे तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं, मगर वास्तव में वे कुछ भी नहीं देखते।"

–क़ुरआन, 7 : 194-198

---

148. यहां एक बात साफ़ तौर पर समझ लेनी चाहिए। शिर्क वाले धर्मों में तीन चीज़ें अलग-अलग पायी जाती हैं–एक तो वे मूर्ति, चित्र या प्रतीक (Objects of Worship), जिनकी पूजा होती है। दूसरे, वे लोग या आत्माएं या प्रतीक जो वस्तुतः उपास्य ठहराये जाते हैं और जिनकी नुमाइंदगी मूर्तियों और चित्रों आदि की शक्ल में की जाती है। तीसरे, वे अक़ीदे और धारणाएं जो इन शिर्क वाली इबादतों और कर्मों की तह में काम कर रही होती हैं। क़ुरआन विभिन्न तरीक़ों से इन तीनों चीज़ों पर चोट लगाता है। इस स्थान पर उसकी आलोचना का रुख़ पहली चीज़ की तरफ़ है, अर्थात उन मूर्तियों पर आपत्ति की जा रही है जिनके सामने मुशरिक अपनी पूजा की रस्में अदा करते और अपने चढ़ावे चढ़ाते थे और प्रार्थनाएं करते थे।

149. यह जवाब है मुशरिकों की उन धमकियों का जो वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देते थे। वे कहते थे कि अगर तुम हमारे इन माबूदों (उपास्यों) का विरोध करने से न रुके और उनकी तरफ़ से लोगों के अक़ीदे व उनकी धारणाओं को इसी तरह ख़राब करते रहे तो तुम पर उनका प्रकोप टूट पड़ेगा और वे तुम्हें उलट कर रख देंगे।

पवित्र क़ुरआन
को इंटरनेट पर पढ़िए
www.quranhindi.com



मध्य-मार्ग अपनाना और थोड़े पर संतोष

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) एक दिन या एक रात निकले, तो हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) और हज़रत उमर (रज़ि॰) ने बाहर निकलने पर विवश किया ?'' उन्होंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल, भूख ने । आपने कहा : ''मैं भी, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, उसी चीज़ ने मुझे भी बाहर निकलने पर विवश किया है जिसके कारण तुम दोनों बाहर निकले हो । उठो ।'' दोनों आपके साथ खड़े हो गये, फिर अनसार में से एक व्यक्ति के यहां गये । उस समय वह अपने घर पर नहीं थे । जब उनकी पत्नी ने आपको देखा, तो कहा : आपका हार्दिक स्वागत है । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उससे कहा : ''फलां कहां है ?'' स्त्री ने कहा : हमारे लिए मीठा पानी लेने गये हैं । इतने में अनसारी आ गये । उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को और आपके साथियों को देखा, तो कहा : प्रशंसा है अल्लाह की ! आज कोई नहीं जिसके यहां मेरे मेहमानों से बढ़कर अच्छे और प्रतिष्ठित मेहमान हों । फिर वह गये और इनके लिए खजूर की एक टहनी ले आये–जिसमें पकी हुई ताज़ा गदरीयी हुई और रसीली खजूरें लगी हुई थीं, और कहा कि आप लोग खायें और छुरी पकड़ी । इस पर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''देखना दूध वाली बकरी को ज़ब्ह न करना ।'' अनसारी ने उनके लिए बकरी ज़ब्ह की । उन्होंने बकरी का गोश्त खाया और खजूर की उस शाख़ से खजूरें खायीं और पानी पिया । फिर जब सबका पेट भर गया और तरो-ताज़ा हो गये, तो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) और हज़रत उमर (रज़ि॰) से कहा : ''उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, क़ियामत के दिन तुमसे अवश्य ही इन नेमतों के बारे में पूछा जाएगा । भूख ने तुम्हें घर से निकाला, फिर तुम्हें लौटने से पहले यह नेमत उपलब्ध हो गयी ।'' –मुस्लिम

● हज़रत ख़ालिद बिन उमैर अल-अदवी (रज़ि॰) कहते हैं कि उत्बह बिंन ग़ज़वान जो बसरा के अमीर (हाकिम) थे उन्होंने हमें संबोधित करते हुए भाषण किया । उन्होंने अल्लाह की प्रशंसा और सराहना की, फिर कहा : तदनंत, निश्चय ही दुनिया ने अपनी समाप्ति की घोषणा कर दी है और वह मुंह फेरकर भाग रही है । उसका बस उतना ही अंश रह गया है जैसे किसी बर्तन के तल में पानी पी लेने के बाद पानी के कुछ क़तरे रह गये हों । उन्हीं को बर्तन वाला संचित कर रहा है । तुम इस दुनिया से उस घर की तरफ़ जाने वाले हो जिसका क्षय नहीं होने का । अत: जो चीज़ तुम्हारे पास सबसे उत्तम है उसको लेकर जाओ । हमें बताया गया है कि जहन्नम के किनारे से एक पत्थर गिराया जाएगा, वह सत्तर साल तक जहन्नम में नीचे की तरफ़ गिरता जाएगा लेकिन वह जहन्नम की अंतिम गहराई तक न पहुंच सकेगा । अल्लाह की क़सम, उसे अवश्य ही भरा जाएगा, तो क्या तुमको इस पर आश्चर्य होता है ? और हमें बताया गया है कि जन्नत के किवाड़ों में से दो किवाड़ों के बीच की दूरी चालीस साल की यात्रा के बराबर होगी । और उस पर एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब वह लोगों की भीड़ से भर जाएगी । मुझे याद है कि मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के साथ सात व्यक्तियों में से सातवां व्यक्ति था । हमारे पास खाने के लिए पेड़ के पत्तों के अतिरिक्त कुछ भी न था, यहां तक कि (पत्ते चबाते-चबाते) हमारे मसूढ़े जख़्मी हो गये । मैंने एक चादर ली और उसे दो टुकड़े करके अपने और साअद बिन मालिक के बीच बांटा । चादर के आधे हिस्से को तो मैंने तहबन्द बनाकर बांध लिया और उसके आधे हिस्से का तहबन्द साअद बिन मालिक ने बनाया । और आज हाल यह है कि हममें से हर एक व्यक्ति किसी न किसी नगर का अमीर है । मैं इस बात से अल्लाह की पनाह मांगता हूं कि मैं अपने मन में अपने को महान समझूं, जबकि मैं अल्लाह की दृष्टि से छोटा हूं । –मुस्लिम

(रियाजुस्सालिहीन' से)

संपादकीय

फ़त्वों का विरोध क्यों ?

किसी भी धर्म को जीवंत, शुद्ध और प्रासंगिक बनाये रखने के लिए धर्मादेश (फ़त्वा) की उपयोगिता हर काल और परिस्थिति में महसूस की जाती रही है । इस्लाम में धर्मविधान और धर्मादेशों को सही ढंग से जानने-समझने की आरंभ से ही परम्परा रही है । पवित्र कुरआन में ज्ञान प्राप्त करने का प्रबोधन होने के साथ ही कामों को सलाह-मशविरे से अंजाम देने का प्रावधान है । व्यवहार में यह होता है कि जब भी कोई समस्या आयी या धर्म-प्रावधान को समझने में परिस्थितिवश कोई शंका पैदा हुई तो उसे दूर करने के लिए आदरणीय धर्मशास्त्रियों (मुफ़्तियों) की ओर रुजू किया जाता रहा है । इसके लिए मुस्लिम समुदाय ने दारुल इफ़्ता (धर्मादेश केन्द्र) की स्थापना की, जो शताब्दियों से अस्तित्व में हैं और जनता की सेवा में लगे हुए हैं । इन धर्मादेशों के कारण इन पर अमल करने वाले लोग कुमार्गगमन से बच जाते हैं और शान्तिमय, सभ्य समाज की स्थापना में अपना योगदान करते हैं । लेकिन यह बात यहां अवश्य स्पष्ट होनी चाहिए कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दारुल इफ़्ता के अतिरिक्त व्यक्ति के जो भी उद्‌गार होते हैं, वे अपने विचार होते हैं चाहे वे धर्मानुसार ही क्यों न हों, उन्हें 'फ़त्वा' नहीं ठहराया जा सकता । वर्तमान की प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने फ़त्वा के वास्तविक स्वरूप को ही विकृत करने की कोशिश की है और हर विचार को फ़त्वा कह दिया जाता है । इन अनुचित प्रस्तुति से स्पष्ट है भ्रमकारी वातावरण पैदा होता है और इस्लामी शिक्षाओं के बारे में ग़लतफ़हमियां और भ्रांतियां उत्पन्न होती हैं । इनसे अवश्य बचा जाना चाहिए ।

पिछले कुछ सप्ताहों से भारतीय मीडिया में 'फ़त्वों' को लेकर कई प्रकार की सामग्रियां पाठकों, दर्शकों के सामने परोसी जाती रही हैं, जिनका उद्देश्य अगर कुछ हो सकता है तो वह है—इस्लाम और मुसलमानों के बारे में ग़लतफ़हमियां फैलाना । जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि मीडिया की नज़र में हर वह विचार फ़त्वा बन जाता है जो किसी मुद्दे से संबंधित हो । जबकि होना यह चाहिए कि दारुल इफ़्ता के फ़त्वे ही फ़त्वे कहलाये जा सकते हैं, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिगत राय/विचार का स्वरूप फ़त्वे का नहीं हो सकता । फिर इन फ़त्वों पर आपत्ति क्यों ? ये तो इन्सान की बेहतरी और समाज में शान्ति, न्याय, शिष्टता और शालीनता आदि उच्च गुणों की स्थापना के लिए हैं । इनसे समाज को अत्याचार, अनाचार, कुमार्गगमन और बुरे संस्कारों व कर्मों से पाक किया जा सकता है और व्यवहार में होता भी यही है । आज शराब, जुआ, अश्लीलता, नग्नता और कुल मिलाकर नैतिक पतन का जो आलम है उसे देखकर किसी की भी सहज रूप से यह पुकार हो सकती है कि क्या कोई उपाय है समाज को बुराइयों से बचाने का ? जी हां, इसका उपाय है इस्लाम की शिक्षाओं पर अमल । फिर फ़त्वों पर आपत्ति क्यों ? धर्मादेश पर न चलने के लिए प्रेरित करना और स्वेच्छाचारिता को बढ़ावा देने की कोशिश करना क्या मानवता विरोधी नहीं है ? इन प्रश्नों पर मीडिया को गंभीरता से विचार करके अपनी इस कार्यशैली पर रोक लगानी चाहिए ।

सनातन धर्म का अन्तिम सन्देष्टा अवतरित

मानव समाज को अपने उत्थान-पतन के लिए महामानव, महापुरुष, पैग़म्बर एवं नबी की आवश्यकता पड़ती रही है । वह ईश्वर ही है जो मानव समाज की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए समय-समय पर अपना संदेशवाहक भेजता रहा है । भले ही वह एक भूभाग में सम्मानित या उपदेष्टा रहा हो पर उसकी महत्ता पूरे विश्व के लिए होती है ।

इन महापुरुषों की अनुपस्थिति में हम धर्म के सच्चे स्वरूप से अनभिज्ञ अंधे शिष्य की भांति अंधे कूप में गिरते हैं । इससे बचने के लिए हमें धर्म के सत्य स्वरूप का ज्ञान होना अति आवश्यक है । यह ज्ञान ईश्वरीय वाणी को प्रतिपादित करने वाले पवित्र ग्रंथ से ही प्राप्त हो सकता है । मूल रूप से यह ग्रंथ वेद, बाइबल तथा कुरआन है । ईश्वर ने समय-समय पर अपने सन्देशवाहकों पर आकाशवाणी के माध्यम से मानव विकास के मूल रहस्यों को प्रतिपादित किया, यही मूल मंत्र इन पवित्र ग्रंथों में संग्रह किये गये हैं ।

सृष्टि रचना के प्रारंभ से अब तक जितने भी सन्देष्टा आये वे पहले वाले सन्देष्टा तथा उनकी शिक्षाओं की पुष्टि करते रहे और कहते रहे कि वे कुछ नया लेकर नहीं आये हैं, बल्कि अपने अग्रज की शिक्षाओं को आगे बढ़ाने तथा उसमें अनुयायियों द्वारा स्वार्थपूर्ण किये गये फेर-बदल को शुद्ध रूप देने आये हैं । इससे यह स्वत: ही सिद्ध हो जाता है कि मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही सन्देशवाहक ईश्वर का सन्देश लाते रहे परन्तु पुस्तक के रूप में उन वचनों को शुद्धत: संग्रहित कर लेने की व्यवस्था उपलब्ध न होने के कारण समयान्तर के साथ विघटनकारी लोगों द्वारा उसमें फेर-बदल कर दिया जाता रहा । उसे ही शुद्ध रूप देने के लिए दूसरे सन्देष्टा की आवश्यकता पड़ी । यह प्रक्रिया तब तक चली जब तक उन सन्देशों को पूर्ण रूप से शुद्ध रूप में सुरक्षित संग्रह कर लेने की समुचित व्यवस्था न हो गयी । आधुनिक युग में जब किसी भी वस्तु को संग्रहित कर लेने की व्यवस्था विकसित हो चुकी तो ऐसे में एक अन्तिम सन्देष्टा की आवश्यकता पड़ी, जो पूर्वत सन्देशवाहकों की पुष्टि करे तथा इस प्रक्रिया पर पूर्ण विराम लगाए ।

क्या वह अन्तिम सन्देशवाहक आएगा ? या आ चुका है ! अगर वह आ चुका है तो वह कौन है ?

आइए हम सनातन धर्म की प्राचीन पुस्तक वेद से प्रारंभ कर आधुनिक पुस्तक पवित्र कुरआन तक संक्षेप में इसकी पुष्टि करने की कोशिश करें । इस प्रक्रिया का प्रारंभ किस सन्देशवाहक ने किया तथा पूर्ण विराम किस सन्देष्टा ने लगाया ? प्रारंभिक सन्देष्टा तथा अन्तिम सन्देष्टा के मध्य अनेक सन्देष्टा अवतरित हुए परन्तु उन सब का यहां विस्तृत

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 200 I with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are Construction of Prayer Hall & Purchase one more school bus, Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(ProfZ.H.Khan) Chairman

(Prof M. B. Zaman) Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

वर्णन असंभव है ।

स्वार्थी धर्म पुरोहितों द्वार ईशदूत के विश्व से ओझल होते ही उनकी शिक्षाओं में फेर-बदल कर दिया जाता रहा । उन सन्देशों को किसी एक भूभाग तथा समुदाय विशेष के लिए घोषित कर दिया जाता रहा । यद्यपि वह सन्देश विश्वव्यापी होते थे ।

सनातन धर्म जहां प्रथम सन्देशवाहक के विषय में जानकारी देता है वहीं अन्तिम सन्देष्टा के विषय में भी भविष्यवाणी करता है । भविष्य पुराण प्र॰स॰प्र॰ख॰ चतुर्थ अ॰ 18/19 बाबा आदम तथा माता हव्वा के वृत्तांत का उल्लेख उसी प्रकार करता है जिस प्रकार आधुनिक ग्रंथ पवित्र कुरआन में वर्णित है । आदम ही वह पहले व्यक्ति हैं जो ईश्वर द्वारा पैदा किये गये परन्तु कलि द्वारा ठग लिए जाने के कारण उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया गया और पृथ्वी पर भेजा गया । अतः आदम ही पहला व्यक्ति तथा पहला सन्देष्टा है जो अपनी संतानों को उपदेश देने के लिए भेजा गया ।

आदमो नाम पुरुषः पत्नी हव्यवती स्मृता ।
विष्णु कर्मयतो जातौ मलेच्छ वंश प्रवर्धनौ...।।

इसी एकतानता में परवर्ती ईशदूतों का वर्णन भी मिलता है । आदम के श्रेष्ठ संतानों से गुज़रते हुए न्यूह (नूह) नामक सन्देष्टा के समयकाल में जल प्लावन द्वारा प्रलय के वर्णन का वृत्तांत भी मिलता है । साथ-साथ अविराम (इबराहीम) तथा हारन (हारून) नामक सन्देष्टा का वर्णन भी उसी प्रकार मिलता है जिस प्रकार बाद के धर्म ग्रंथ बाइबल तथा कुरआन में है ।

अविराम (इबराहीम्) के विवरण के पश्चात ईसा मसीह का वर्णन है जब आप स्वयं अपने आपको कुंआरी मां के गर्भ से उत्पन्न एक सन्देष्टता घोषित करते हैं और कहते हैं कि मैं सत्य के व्रत में परायण उपदेशक हूं, सत्य के नष्ट तथा मर्यादाहीन हो जाने पर मैं मसीह यहां आया हूं, मेरे द्वारा स्थापित धर्म को सुनो । ईश्वर अचल है जैसा कि सूर्य ।

इस प्रकार ईशदूतों के आने की प्रक्रिया चलती रही, व्यवस्था का विकास होता रहा तथा वह समय भी आ गया जब सन्देष्टा के सन्देशों को सुरक्षित तथा शुद्ध रूप में संग्रहित किया जा सके । अब आवश्यकता तथा इन्तिज़ार था तो सिर्फ़ अन्तिम सन्देष्टा का जिसके विषय में सनातन धर्म भविष्यवाणी करता है ।

वेद-पुराण अन्तिम सन्देष्टा को कहीं कल्कि अवतार तो कहीं नराशंस (प्रशंसित) के नाम से अवतरित होने का इशारा करता है । अथर्वेद 20वें काण्ड 127वां सूक्त का प्रथम मंत्र तो नराशंस के आने का समय निर्धारण भी करता है ।

"नराशंस वेदावतरण के पूर्व नहीं अपितु वेदावतरण के बाद की स्थिति में स्तुत्य होगा ।"

(अर्थ॰ 20वां का॰ 127 सूक्त)

भविष्य पुराण नराशंस की पहचान भी बताता है कि वह जन्म से ख़तना किया होगा, चोटी से हीन, दाढ़ी रखने वाला, ऊंची बात करने वाला, शुद्ध पशुओं का आहार करने वाला होगा । कुशों से जैसे संस्कार होता है वैसा उसका मूसल से संस्कार होगा ।

"लिंगछेदी शिखाहीनः श्मश्रुधारी स दूषकः ।
उच्चलापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मम...।।

वह नराशंस सवारी के रूप में ऊंटों का प्रयोग करेगा तथा बारह पत्नियों वाला होगा ।

उष्ट्रायस्प प्रवाहणो...
...वधूमन्तो द्विर्दश... (अर्थ॰ 20/127/2)

अतः इस आधार पर जब हम अपने अध्ययन को आगे बढ़ाते हैं तो अन्तिम सन्देष्टा के जन्म की पुष्टि हो जाती है । जब हम वेदों में वर्णित नराशंस की निशानियों पर दृष्टिपात करते हैं तो अरब के मरुस्थल में एक व्यक्ति मिलता है जो आज से लगभग 1400 वर्ष पूर्व जन्म ले चुका है । उस अन्तिम सन्देष्टा का नाम मुहम्मद (प्रशंसित) है ।

वेद में यह वर्णित है कि अन्तिम सन्देष्टा जन्म से ख़तना किया हुआ होगा, ऊंट की सवारी करेगा, 12 पत्नियों वाला होगा, शुद्ध पशुओं का आहार करेगा इत्यादि पहचान मुहम्मद साहब पर पूर्ण रूप से घटित होती है, जो उनके अन्तिम सन्देष्टा होने का प्रमाण है ।

जब वेद, बाइबल, कुरआन सभी धार्मिक ग्रंथ अपने इस अन्तिम सन्देष्टा की पुष्टि कर चुके हैं तथा अन्तिम सन्देष्टा अपने पूर्ववर्ती सन्देशवाहकों की पुष्टि करते हैं तो फिर यह अलग-अलग पंथ किस प्रकार और कहां से आ गये । क्या सन्देशवाहकों के क्रम ने अपने से पूर्व के सन्देशवाहकों की पुष्टि नहीं की ? निस्संदेह

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com

की । फिर भी विश्व का एक ही पंथ न होकर अलग-अलग कैसे हो गया ? इससे यह स्वत: ही सिद्ध नहीं हो जाता कि स्वार्थी पुरोहितों द्वारा स्वार्थवश एक अलग पंथ की स्थापना कर ली गयी ।

अविराम इबराहीम न्यूह (नूह) का धर्म भी वही धर्म था जिसकी स्थापना आदम ने की थी । क्या ईसा का धर्म भी वही नहीं था ? परन्तु स्वार्थी क़िस्म के समर्थकों ने इसे अलग पंथ ईसाई धर्म के नाम से स्थापित कर लिया ।

समय निरन्तर अग्रसर रहा, धर्म में बुराइयां बढ़ गयीं, धर्म के नाम पर अत्याचार होने लगा, चारों तरफ़ अंधकार छा गया यही वह समय था अन्तिम सन्देष्टा के जन्म लेने का । अन्तिम सन्देष्टा ने जन्म लिया विश्व को अंधेरे से उजाले की तरफ़ लाया, अपने से पूर्व के सन्देष्टाओं की पुष्टि की और कहा कि मैं कोई नया धर्म लेकर नहीं आया हूं परन्तु पहले के सन्देशवाहकों की पुष्टि करता हूं तथा उनकी शिक्षाओं में की गयी मिलावट को शुद्ध रूप देने आया हूं । अत: मेरी बात सुनो, जो मैं कहता हूं वही सत्य है, हम सबका दादा अविराम इबराहीम एक है । मैं ही अन्तिम सन्देष्टा नराशंस हूं ।

इस प्रकार वेद-पुराणों द्वारा प्रमाणित अन्तिम सन्देष्टा नराशंस/मुहम्मद ने एक ऐसा आन्दोलन चलाया कि मानवजाति के सम्पूर्ण चरित्र को बदल डाला ।

यही वह अन्तिम सन्देष्टता है जिसके बारे में वेद-पुराण भविष्यवाणी कर चुका है कि उसका मूसल से संस्कार होगा । अत: मानवजाति को अन्तिम सन्देष्टता का इन्तिज़ार ख़त्म हो चुका । वह अन्तिम सन्देशवाहक अरब के मरुस्थल में लगभग 1400 वर्ष पूर्व जन्म ले चुका है ।

भीष्म प्रसाद गुप्त
झूंसी, इलाहाबाद

अपराध के कारण दूर हों

केन्द्र शासन द्वारा न्यायालयों में बढ़ते प्रकरणों पर चिंता जतायी जा रही है । ठीक इसी प्रकार उसे बढ़ते अपराधों पर भी गहरी चिंता दिखायी जानी चाहिए जोकि निराकरण हेतु न्यायालय की शरण में जाते हैं । न्याय के प्रभावित होने तथा अधिकारों के हनन से बदले की भावनाएं, अपराधों के रूप में जन्म लेती हैं । अधिकार प्राप्ति के आन्दोलन हिंसा में बदल जाते हैं । धर्मों पर लांछन से धार्मिक स्वतंत्रता प्रभावित होती है, जिससे साम्प्रदायिक दंगे भड़कते हैं । शराब व्यवसन से घरेलू एवं चिरपरिचितों से झगड़े एवं हत्याएं बढ़ रही हैं । पश्चिम की सभ्यता अपनाने के कारण नैतिक पतन हो रहा है, जिस कारण महिलाएं स्वयं ही यौन अपराधों में बलात्कार का शिकार हो रही हैं । फिल्मों तथा चरित्रहीन सीरियलों से यौन अपराधों को बढ़ावा मिल रहा है । असंतुलित विरासत का बंटवारा भी अपराधों के कारण बन रहे हैं । विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत करने हेतु चोरी एवं भ्रष्टाचार को अपनाया जा रहा है । क़र्ज़ का ब्याज, अवसाद, आत्महत्याओं तथा पारिवारिक विसंगतियों को जन्म दे रहा है । अतएव ऐसे छोटे-बड़े अपराधों के कारणों को दूर करने के लिए व्यापक अभियान चलाया जाना चाहिए तथा जन्म से मृत्यु तक के नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ।

मलिक
नागपुर

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से मंडला	प्रात: 7:20
सिवनी से छिंदवाड़ा	प्रात: 7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट	प्रात:10:30
मंडला से सिवनी	दिन 12:50
बालाघाट से सिवनी	सायं 6:00
सिवनी से नैनपुर	सायं 5:40
नैनपुर से सिवनी	दिन 12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें-

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और क़ुरआन

किशनलाल अग्रवाल
(हरदा, म॰प्र॰)

एक संदेशवाहक जो सृष्टि के लिए ईश्वर का संदेश लाता है, फ़ारसी में उसे 'पैग़ाम-बर' या 'पैग़म्बर' कहते हैं और अरबी में 'रसूल' कहते हैं । हर वह महापुरुष जो ईश्वर का संदेश लाता है वह रसूल या नबी है । लेकिन 'रसूल' और 'नबी' में थोड़ा अन्तर होता है ।[1]

आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का जन्म मक्का शहर के एक इज़्ज़तदार क़बीले क़ुरैश में 11 नवम्बर 567 ई॰ को सोमवार के दिन हुआ । आप (सल्ल॰) के पिता हज़रत अब्दुल्लाह का देहांत आप (सल्ल॰) के जन्म से पहले ही हो चुका था । आप (सल्ल॰) दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब और मां हज़रत आमिना की छत्रछाया में पले-बढ़े । अरब की परम्परा के अनुसार दाई हलीमा उन्हें अपने साथ ले गयीं, अपना दूध पिलाया और शुरू में वे उन्हीं के साथ रहे और गांव के स्वच्छ वातावरण में उनका लालन-पालन हुआ । उनकी अम्मी हज़रत आमिना का देहांत भी जल्दी हो गया । दादा भी जल्द ही चल बसे । फिर आप (सल्ल॰) की ज़िम्मेदारी चचा हज़रत अबू तालिब ने संभाली ।

आप (सल्ल॰) एक शांति प्रिय व्यक्ति थे । रक्तपात व झगड़ों के ख़िलाफ़ थे । मक्का के क़बीलों में होने वाले आपसी झगड़ों से आप बहुत दुखी रहते थे । आपको 'मूर्तिपूजा' व शिर्क (बहुईश्वरवाद) से घृणा थी । इसी अधेड़बुन में आप (सल्ल॰) मक्का से तीन मील दूर स्थित 'हिरा' नामी पहाड़ी गुफ़ा में जाकर चिंतन-मनन करने लगे । रमज़ान के महीने में वहीं आपको एक फ़रिश्ता दिखा और इन्हें पहली 'वह्य' पढ़ायी :

''अपने 'रब' का नाम लेकर पढ़ । जिसने पैदा किया इन्सान को जमे हुए रक्त से । पढ़ो तुम्हारा रब बड़ा महान है । जिसने 'क़लम' के द्वारा सिखाया । मनुष्य को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था ।''

इसके बाद आप (सल्ल॰) निरंतर गुफ़ा में जाने लगे । 6 महीने तक कोई वह्य नहीं आयी । इसके बाद वह्य अवतरित होने का सिलसिला चल पड़ा । 'वह्य' के संकलन को ही ''क़ुरआन'' कहते हैं । क़ुरआन अर्थात पढ़ना । क़ुरआन का एक नाम 'फ़ुरकान' भी है ।

मक्का में 40 वर्ष की उम्र से शुरू होकर 23 वर्षों तक वह्य आने का सिलसिला चलता रहा । इस तरह अल्लाह ने आपको 'नबी' बनाया व 'किताब' देकर रसूल (पैग़म्बर) बनाया ।

क़ुरआन में तौहीद (एकेश्वरवाद) व आख़िरत (क़ियामत या महाप्रलय का दिन) पर ख़ास ज़ोर दिया गया है ।

तौहीद

1. संसार बिना ईश्वर के नहीं है ।
2. संसार में अनेक ईश्वर भी नहीं हैं ।
3. ईश्वर केवल एक है वही कर्ता, पालक और नियंता है ।
4. ईश्वर का कोई बेटा-बेटी (संतान) नहीं है ।
5. ईश्वर भी किसी का बेटा-बेटी (संतान) नहीं है ।

अत: इस्लाम की मूल शिक्षा है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) और आख़िरत पर ईमान लाकर अल्लाह के कृतज्ञ बनें एवं कुफ़्र व शिर्क (बहुदेव-अनेकेश्वरवाद) से दूर रहें ।

मूर्तिपूजा का हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) द्वारा घोर विरोध किया गया । रमज़ान 8 हि॰ में जब उन्होंने मक्का पर विजय प्राप्त की, तब वहां पहले से मौजूद 360 मूर्तियों को बाहर फिकवा दिया गया ।

क़ुरआन में ईमान लाने वालों को आश्वासन दिया गया है कि धरती पर रहते हुए उन्हें अच्छी रोज़ी और अन्य सुख-सामग्री प्राप्त होगी तथा आख़िरत में बाग़ों व जल स्रोतों के बीच रहने को, रेशमी वस्त्र पहनने, सुन्दर रूपवती और बड़ी-बड़ी आंखों वाली, समवयस्क स्त्रियां, अच्छे मेवे, मिष्ठान्न व समस्त मनोकूल भोग सामग्री प्राप्त होगी । इस

1. **रसूल** : जिसे ईश्वर से नया धर्म-विधान या आचारशास्त्र या कोई 'किताब' मिली हो 'रसूल' कहलाता है ।
नबी : हर पैग़म्बर को 'नबी' कह सकते हैं ।

तरह जहन्नम की अग्नि से सुरक्षित रहेंगे, जबकि कुफ़्र करने वालों को निश्चित रूप से जहन्नम की आग में जलते रहना होगा । तब कोई सगे-संबंधी किसी के काम नहीं आएंगे ।

ईमान लाने वालों को नसीहत की गयी है कि कुफ़्र करने वालों के पीछे न पड़ें । उन्हें अल्लाह के रहमो-करम पर छोड़ दें । उनका हिसाब वह स्वयं लेगा, जब आख़िरत में वे रब के पास हाज़िर होंगे । ये वही काफ़िर लोग होंगे जिन्होंने अल्लाह के नबियों व रसूलों पर कभी विश्वास नहीं किया । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) व अन्य रसूलों (नबियों) को जो पागल या दीवाना कहते थे । आयतों को मनगढ़ंत या कल्पना कहते थे । ऐसे काफ़िरों के साथ क्या सलूक किया जाएगा यह तो रसूल या नबी ख़ुद भी नहीं जानते थे । वे तो केवल वह्य के अनुसार स्वयं चलते थे व औरों को सचेत करते थे । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) व कुरआन दोनों ''आख़िरी नबी'' व ''आख़िरी किताब'' है । अब तो सिर्फ़ क़ियामत ही आनी है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पहले अनेक रसूलों (व नबियों) का धरती पर आगमन हो चुका है जिनमें प्रथम हज़रत आदम (अलैहि०) थे । उनके बाद जो अनेक नबी हुए हैं उनमें कुछ मुख्य नबी ये हैं :

1. हज़रत ज़करिया (अलैहि०) पुत्र यहया ।
2. हज़रत ईसा (अलैहि०)।
3. हज़रत इबराहीम (अलैहि०) भाई हारून ।
4. हज़रत शुऐब (अलैहि०)।
5. हज़रत इस्माईल (अलैहि०)।
6. हज़रत इदरीस (अलैहि०)।
7. हज़रत मूसा (अलैहि०)।
8. हज़रत नूह (अलैहि०)।
9. हज़रत सालेह (अलैहि०)।
10. हज़रत लूत (अलैहि०) आदि ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) जब ईश्वर के आदेश का प्रचार करने लगे तब इन्हें व इनसे सहमत लोगों को जीवन भर विरोधियों का मुक़ाबला करना पड़ा । प्रसिद्धि व विरोध साथ-साथ बढ़ते गये । आपने बहुत कष्ट उठाये । कुरआन उतरता रहा । आप (सल्ल०) व उनके अनुयायियों ने धैर्य नहीं खोया । यहां तक कि मदीने की ओर हिजरत करनी पड़ी । 20 जून 622 ई० को इन्हें मारने की योजना थी ।

कुरआन ईश्वरीय संदेश है और आचारसंहिता भी है । सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, न्याय आदि विषयों पर सूत्र संकेत भी है । इतिहास भी है । पूर्व पैग़म्बरों का वर्णन भी इसमें किया गया है ।

इसके द्वारा आप (सल्ल०) ने शांति, सुलह, भाईचारा, एकेश्वरवाद, सम्मान, विनय, धैर्यशीलता, ईश्वर की सत्ता में विश्वास, समानता, आदि का पैग़ाम दिया है । ईमान वालों के लिए जन्नत के सुख की गारंटी एवं काफ़िरों के लिए जहन्नम के दुख-कष्टों का डरावा है ।

सार संक्षेप यह कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का पैग़ाम कुरआन के अनुसार इस पर ईमान लाने वालों यानी मुसलमानों को, अल्लाह ही इस सृष्टि में एकमात्र 'इलाह' (पूज्य) है, अन्य कोई नहीं । यह दृढ़तापूर्वक मानते हुए प्रतिदिन पांच वक़्त की नमाज़ क़ायम करने का व ज़कात देने का प्रयास करना चाहिए । रमज़ान के महीने में रोज़ा एवं जीवन में कम से कम एक बार हज यात्रा करने का प्रयास करना चाहिए । अपने पास के धन की अधिकता में से कुरबानी व ज़रूरतमंद, सहधर्मियों की मदद एवं धर्म रक्षा के लिए 'जिहाद' करने को तैयार रहना चाहिए । ऐसा करने से वह क़ियामत तक धरती के सुख भोगकर मरने के उपरांत जब क़ियामत के दिन क़ब्रों से इन्साफ़ के लिए उठाया जाएगा, तब उसे जन्नत के सुख चिरकाल तक मिलेंगे एवं काफ़िरों को उनके कर्मों के अनुसार जहन्नम के दुख । क्योंकि अल्लाह ही सर्वसमर्थ, अत्यंत कृपाशील व दयावान है ।

जब ओशो ने ख़तना करवाया

तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं होगा कि मैंने अपना सुन्नत (ख़तना) कराया । सिर्फ़ सूफ़ीमत में प्रवेश पाने के लिए । जहां के लोग बिना सुन्नत के व्यक्ति को स्वीकार नहीं करते थे । मैंने कहा ठीक है करो । यह शरीर तो आख़िर नष्ट होने ही वाला है और तुम तो केवल थोड़ी-सी चमड़ी काटने वाले हो 'काटो, लेकिन मैं तो स्कूल में प्रवेश चाहता हूं । यहां तक कि उन्हें भी मेरी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था । मैंने कहा मुझ पर विश्वास करो, मैं तैयार हूं ।

आचार्य रजनीश
(ओशो वर्ल्ड)

हज़रत उम्मे अला अंसारिया (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

हज़रत उम्मे अला (रज़ि॰) एक अंसारी महिला थीं । आपने हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के हाथ पर बैअ़त ली थी । सही बुख़ारी की एक मशहूर रिवायत से साबित है कि वे अंसार की साबक़ीन अव्वलीन में से थीं । यह रिवायत इमाम बुख़ारी (रह॰) ने मशहूर फ़क़ीह हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद बिन साबित से नक़ल की है । वे फ़रमाते हैं कि :

''उम्मे अला (रज़ि॰) एक अंसारी महिला थीं । उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के हाथ पर बैअ़त ली थी ।''

हज़रत उम्मे अला (रज़ि॰) ख़ुद कहती हैं कि हिजरत के बाद अंसार ने मुहाजिरों का बंटवारा क़ुर्रा (लौटरी) निकाल कर किया । हमारे हिस्से में हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन (रज़ि॰) आये । अतएव हम ने उन्हें अपने घर में मेहमान बनाकर रखा ।

जंगे बद्र के बाद हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन (रज़ि॰) बीमार पड़ गये । बीमारी बढ़ती गयी और अंत में उसी बीमारी में उनकी मृत्यु हो गयी ।

जब उनको कफ़न पहना दिया गया तो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) तशरीफ़ लाये । उस समय मैंने (हज़रत उम्मे अला रज़ि॰ ने) कहा : ''अबू अल-साएब, तुम पर अल्लाह की रहमत हो । मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह तआला ने तुम को प्रतिष्ठित किया ।''

नोट : अबू अल-साएब हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन (रज़ि॰) की कुन्नियत थी । यानी वे अबू अल-साएब के नाम से पुकारे जाते थे ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने पूछा : ''भला तुम्हें यह कैसे पता चला कि अल्लाह ने उनको प्रतिष्ठित किया ।''

मैंने कहा, ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान, यदि अल्लाह तआला उनको प्रतिष्ठित न करेगा तो और किसको करेगा ?

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, ''उस्मान (रज़ि॰) को भी इसका विश्वास था और मुझे भी उनके हक़ में मग़फ़िरत की पूरी उम्मीद है । लेकिन अल्लाह की क़सम, मैं अल्लाह का रसूल होकर भी अपने बारे में यह नहीं बता सकता कि मेरे साथ क्या मामला किया जाएगा ।''

व्याख्याकारों ने इस सिलसिले में लिखा है कि आप (सल्ल॰) के इस कथन का अभिप्रेत यह था कि भविष्य के बारे में मैं अपने आप कोई ऐसी बात नहीं कहता बल्कि वही कहता हूं जिसका ज्ञान मुझे अल्लाह तआला देता है । इस तरह आप (सल्ल॰) ने लोगों को इस बात से मना किया है कि किसी की ज़ाहिरी हालत को देखकर उसको अपनी तरफ़ से यक़ीनी तौर पर जन्नती या जहन्नमी कहें ।

यह सुनकर उम्मे अला (रज़ि॰) ने कहा : ''ख़ुदा की क़सम ! आज के बाद मैं किसी के बारे में इस तरह यक़ीनी अंदाज़ में गवाही न दूंगी ।''

2. हज़रत अबू हसीम मालिक (रज़ि॰) की पत्नी

हज़रत अबू हसीम मालिक (रज़ि॰) की गिनती जलीलुल क़द्र सहाबियों में होती थी । आप अंसारियों में से थे ।

'तिरमिज़ी' में है कि एक दिन अल्लाह के रसूल हज़रत

'कान्ति' साप्ताहिक का विशेषांक
जनसेवा और भारतीय मुसलमान
1-7 अगस्त 2010 का अंक पढ़िए
कुछ महत्वपूर्ण प्रस्तुतियां
• इस्लाम में जनसेवा का महत्व ।
• भारतीय मुसलमानों की जनसेवा ।
• विभिन्न संगठनों के जनकल्याण के कार्यों का जायज़ा ।
• विज़न 2016 के परिप्रेक्ष्य में प्रो॰ के॰ए॰ सिद्दीक़ हसन से विस्तृत बातचीत ।
संपादक, 'कान्ति' (साप्ताहिक)
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़ल इन्कलेव, नयी दिल्ली-110025
E-mail : editorkanti@yahoo.com

मुहम्मद (सल्ल०), हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) और हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) के साथ हज़रत अबू हसीम (रज़ि०) के घर तशरीफ़ लाए । उस ज़माने में उनके पास ख़जूर के कई बाग़ और बकरियों के रेवड़ थे । लेकिन कोई सेवक या ग़ुलाम नहीं था और घर का सारा काम वे स्वयं ही किया करते थे ।

आप (सल्ल०) ने उनके घर पहुंचकर उन्हें आवाज़ दी तो उनकी पत्नी ने बताया कि अबू हसीम (रज़ि०) पानी लाने गये हैं । कुछ ही देर में वे पानी का मशक लेकर उपस्थित हुए । आप (सल्ल०) को अपने घर पर आया हुआ देखकर ख़ुशी से फूले न समाये । वे आप (सल्ल०) से लिपट गये और बार-बार कहने लगे । ''मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान ! आप (सल्ल०) इस मिस्कीन के घर पधारे !

फिर आप (सल्ल०) और उनके सहाबियों को अपने बाग़ में ले गये । बैठने के लिए कोई चीज़ बिछा दी और स्वयं खजूरों की एक गुच्छा काट लाए ।

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : ''पक्की खजूरें लाए होते ।''

उन्होंने जवाब दिया, ''मेरे मां-बाप आप (सल्ल०) पर क़ुरबान, इस ख़ोशे में पक्की और अधपक्की हर प्रकार की खजूरें हैं, जो पसन्द हों उसे ही खाएं ।''

खजूरें खिलाने के बाद स्वच्छ, मीठा और ठंडा पानी पिलाया ।

आप (सल्ल०) ने कहा : ''देखो अल्लाह तआला ने कितनी नेमतें अता की हैं । शीतल साया, अच्छी-अच्छी खजूरें, ठंडा पानी, अल्लाह की क़सम ! क़ियामत के दिन उनके बारे में पूछा जाएगा ।''

उसके बाद हज़रत अबू हसीम (रज़ि०) ने आप (सल्ल०) से कहा, ''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! आप कुछ देर यही ठहरें । मैं घर जाकर खाने की व्यवस्था करता हूं ।

आप (सल्ल०) ने ताकीद की कि दूध देने वाली बकरी ज़िब्ह मत करना ।

हज़रत अबू हसीम (रज़ि०) ने बकरी का एक बच्चा ज़िब्ह किया और उसे भूनकर आप (सल्ल०) की सेवा में पेश किया । आप (सल्ल०) ने खाना खाने के बाद पूछा, ''तुम्हारे पास कोई ग़ुलाम है ?''

''नहीं'' उन्होंने कहा ।

आप (सल्ल०) ने उनसे कहा, ''जब मेरे पास क़ैदी आएं तो आना ।''

उन्हीं दिनों दो क़ैदी आप (सल्ल०) के सामने पेश किये गये । आप (सल्ल०) अबू हसीम (रज़ि०) से कहा कि, ''उनमें से एक पसन्द कर लो ।'' उन्होंने कहा ।

''ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! आप जिसे देना चाहें, मुझे स्वीकार है ।''

आप (सल्ल०) ने एक क़ैदी उनके हवाले करते हुए कहा, ''इससे अच्छा बर्ताव करना ।''

वे ग़ुलाम को लेकर घर आये और पत्नी को सारी घटना कह सुनायी । पत्नी ने कहा कि ''आप (सल्ल०) की बात माननी है तो उसको आज़ाद कर दो ।'' उन्होंने उसी समय उसे आज़ाद कर दिया । आप (सल्ल०) को इसकी सूचना मिली तो आप बहुत प्रसन्न हुए और दोनों पति-पत्नी की ख़ूब प्रशंसा की ।

HINDUSTAN TRAVELS

Prop.
ABDUL RASHID
Mob : 9425254335



Ambikapur to Bilaspur 4:30 (Morning)
Vishrampur to Bilaspur 4:25 (Morning)
Raipur to Ambikapur 9:20 (Night)

Address : Implipara, Ambikapur, Surguja-497001 (C.G)

मीरयूला लैला ज़ीसनी

(पोलैंड)

मैं पोलैंड के एक छोटे-से शहर में पैदा हुई । मां-बाप सीधे-सादे और धार्मिक प्रवृत्ति के लोग थे, जिन्होंने अपनी शक्ति भर मेरा बेहतर पालन-पोषण करने की कोशिश की । मैं एक विशेष प्रकार के स्वभाव वाली मध्यम वर्ग की लड़की थी और कैथोलिक पंथ को मानने वाले लोगों में पली-बढ़ी, जो मेरे स्वभाव से मेल न खाता था । घर के धार्मिक वातावरण के कारण मुझ पर चर्च जाना अनिवार्य था । इसलिए परम्परा के अनुसार मैं प्रत्येक रविवार और अन्य दूसरे सभी विशेष समारोहों के अवसर पर चर्च जाया करती थी ।

जहां तक मेरे व्यक्तित्व का संबंध है, मेरा स्वभाव ज़रा अलग तरह का था । मैं कम मेल-जोल रखने वाली, शर्मीली और उदास प्रवृत्ति की लड़की थी । मैं अपने लड़कपन के वर्षों में व्यावहारिक रूप से एकान्तप्रिय लड़की थी । मेरी कोई सहेली तक न थी । बस मैं थी और धर्म पर चिन्तन-मनन । जीवन यूं ही व्यतीत हो रहा था कि मैं अपने परिवार के साथ कनाडा चली आयी । यहां एक नये जीवन का कठिन और असंभावित माहौल मेरी प्रतीक्षा में था । मुझे हर चीज़ आरंभ से सीखनी थी ।

कनाडा में निवास के बाद शीघ्र ही मेरी मुलाक़ात एक लेबनानी छात्र से हुई, जो इस विशाल देश में मेरी ही तरह नया-नया आया था । उसका स्वभाव भी सामान्य स्वभाव से ज़रा हटकर था । मुझे सबसे पहले इसी ने इस्लाम से परिचित कराया, जिसे उस समय तक मैं एक सनकी राह का धर्म समझती थी ।

हम एक-दूसरे से विरोधी दृष्टिकोण रखने के कारण अक्सर लंबी-चौड़ी बातचीत और बहस करते । इससे बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण रखने के बावजूद एक वाक्य कि 'खुदा केवल एक है' हर समय मेरे दिमाग़ में गूंजता रहता । किन्तु मुझे पुर्ण विश्वास था कि ऐसी सोच रखने वाला निस्सन्देह पागल है और कभी भूले से भी यह विचार न आया कि वास्तव में मैं ही ग़लती पर हूं ।

जब से मैं इस लेबनानी लड़के से मिली थी, जीवन बेचैनी का शिकार हो गया था, इस कारण नहीं कि वह मुसलमान था, बल्कि इस कारण कि मैं अब इस सोच तले पिसी जा रही थी कि हम दोनों में से कौन सही है और कौन



ग़लत ?

क़रीब दो-तीन महीने तक मैं इस उधेड़-बुन में रही, तब एक चमत्कार प्रकट होना शुरू हुआ । एक दिन मैं अपने घर वालों के साथ चर्च में थी, तो एकाएक मुझे ऐसा महसूस हुआ कि वह ठीक कहता है । मैंने अपने आपसे कहा, ''कितनी बेतुकी बात है कि ये चर्च वाले कहते हैं कि ख़ुदा, उसका बेटा और रूहुल क़ुदुस तीनों मिलकर एक बनते हैं ।''

इन शब्दों ने मुझे झिंझोड़ दिया और मैं सोचने लगी कि अगर ख़ुदा एक है तो उसके बेटे और रूहुल-क़ुदुस का क्या मतलब है ? यह त्रैवाद या त्रीश्वरवाद का मामला तो बौद्धिक दृष्टिकोण से बिल्कुल ही समझ में न आने वाली बात थी । मुझे तो मुसलमान लेबनानी युवक की बात ही सही लग रही है कि ख़ुदा एक है । उसका कोई साझी नहीं ।

जब से मैंने इस सत्य को पाया था, मैंने शायद ही चर्च में किसी से कोई बात की हो । कुछ ही समय में मेरे मां-बाप को एहसास हो गया कि मैंने चर्च जाना छोड़ दिया है और चर्च से दूर रहने के बहाने तलाश करने लगी हूं । वे समझ गये कि अवश्य ही कोई गड़बड़ है । उन्होंने सारा आरोप इस बेचारे लेबनानी लड़के पर थोप दिया और उसके साथ न केवल कठोर रवैया अपनाया, बल्कि उसे अपमानित भी किया, मगर मेरे व्यवहार में बदलाव न आया ।

मैंने गुप्त रूप से पोलैंड से क़ुरआन की एक प्रति मंगवायी । नमाज़ सीखी और चुपके-चुपके रोज़ा रखा कि कोई न जान सका । इधर मां-बाप को ख़ुश रखने के लिए मैं दिखावे के तौर पर कभी-कभार चर्च भी चली जाती । परन्तु केवल अल्लाह जानता है कि यह सब कुछ मेरे लिए कितना दुखद था और मैं किस बेचैनी में थी ।

मेरे लिए क़ुरआन का अध्ययन एक सुखद अनुभव था । रात को जब सभी अपने-अपने बिस्तरों में दुबके होते, मैं क़ुरआन का अध्ययन आरंभ कर देती । मैं उसे पढ़ती जाती, इस दौरान आंखों से आंसू बहते रहे और मैं मुंह पर तकिया रखकर रोती रहती ।

यह फ़ैसला करने में कि अब मुझे क्या करना चाहिए, क़रीब एक वर्ष लगा । इस बीच मैंने नमाज़ अदा करना और सही ढंग से रोज़ा रखना सीख लिया । अब मेरा जीवन पूर्णत: सुखी था ।

यह सुख और आनन्द उस रौशन दरीचे (खिड़की) से छन-छनकर आ रहा था, जो मेरे पालनहार ने मेरे ऊपर खोल दिया था ।

हर नया दिन एक नया अनुभव लेकर आता और पल-प्रतिपल व्यक्तित्व की पूर्णता की ओर जाने वाला था । मैं बहुत प्रसन्न और कृतज्ञ थी क्योंकि अल्लाह ने मुझे ज्ञान और बोध प्रदान किया था । लेकिन साथ ही जीवन इतना आसान भी न था । यद्यपि मेरा अन्त:करण आशा से पूर्ण और शान्त था, परन्तु बाहर के संसार के जीवन को शेष रखने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ा ।

क़रीब दो वर्ष हुए होंगे कि मैं पूरी तरह से मुसलमान हो चुकी थी और परिवार वालों और मेरे बीच अजनबीयत का पर्दा पड़ गया था । यद्यपि मैं अब भी उनसे प्रेम करती थी । मैं जानती थी कि ज्यों ही उनके कानों में मेरे ईमान लाने की भनक पड़ी, मुझे घर से निकाल दिया जाएगा । मगर मैं प्रतीक्षा में थी, जो कुछ अल्लाह ने मेरे लिए ग़ैब में

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the Society

(Q. Hoda) Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

छिपा रखा था ।

क्रिसमस का अवसर आया, तो और अधिक सहन न कर सकी । मेरा दिल भर आया और मैंने सभी को अपने ईमान लाने के बारे में बता दिया । मुझे अन्दाज़ा था कि इससे वे बहुत दुखी हुए होंगे । मुझे यह भी विचार आया कि यह उनकी खुशी का दिन था । मुझे कुछ और प्रतीक्षा कर लेनी चाहिए थी, मगर अल्लाह की यही मर्ज़ी थी कि मैं और अधिक प्रतीक्षा न करूं । मैं अधिक समय तक अंधकार से समझौता न कर सकी और न ही व्यर्थ कामों और बेकार बातों से भरी इस महफ़िल में ठहर पायी ।

आशंका के अनुसार मुझको घर से निकाल दिया गया । मैंने अपना बैग लिया और रहने के लिए एक जगह तलाश कर ली । दिल इस ख़याल से मसला जा रहा था कि घर वाले छूट गये, मगर मन शीघ्र ही शान्त हो गया कि मैंने अपने पालनहार को पा लिया था ।

पिता के अलावा परिवार के सभी सदस्यों ने मुझसे मुंह फेर लिया । केवल उन्होंने कहा कि मैं आज़ादी से अपना रास्ता चुन सकती हूं । वह अब भी मुझ पर दयावान थे और इस कठिनाई की घड़ी में नैतिक और स्वाभाविक रूप से सांत्वना देते रहे । वह इस्लाम तो शायद ही स्वीकार करें, मगर उन्होंने मुझे यक़ीन दिलाया कि मैं उनकी उसी तरह बेटी हूं जैसे पहले थी और बाप की हैसियत से वे मुझको अब भी चाहते हैं ।

तब से मैं अलग रह रही हूं और जीवन के हर दिन के लिए अल्लाह का शुक्र अदा करती हूं, जिसने मुझे सबसे मूल्यवान चीज़ ईमान और क़ुरआन से पुरस्कृत किया है । उसने उस कृपा के द्वार मुझ पर खोले जब मेरे घर वालों ने मुझ पर अपने द्वार बन्द कर दिये थे । मेरी दुआ है कि ईमान की यह रौशनी उन सभी लोगों तक पहुंचे, जो अब भी उन अंधकारों में भटक रहे हैं जिनमें कभी मैं भी उनकी हमसफ़र थी । मुस्लिम वर्ग से मेरे लिए मीरयूला के स्थान पर मरयम नाम रखा, मगर इस नाम से मुझे अपने पुराने अक़ीदे की याद आती थी । इसलिए मैंने इसकी बजाय अपने लिए लैला का नाम चुना । अरबी में इसका मतलब रात है और चूंकि यह रात ही का समय होता था जब मुझे क़ुरआन पढ़ने का मौक़ा मिलता और मैं अल्लाह के समक्ष गिड़गिड़ाती थी और जब उसने सूरे फ़ातिहा के ज़रिये मुझे ज्ञान और हिदायत से नवाज़ा था ।

SCHOOL WITH A VISION

Admission is going on

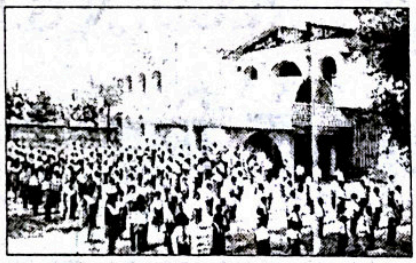

Hostel Facility Available

Setting New Standards in Education (Nursery to VIII)

HIGHLIGHTS

- An enterprise of a group whose impact on education nationally felt
- Support of academician of national level
- Application of joyful learning
- Committed and competent teachers

FACILITIES

- CBSE curriculum
- Own spacious building suitably furnished
- Computer lab with multimedia and internet access
- Library
- Learning toys, games and sports facilities
- Regular Health Checkup
- Counselling tailor made for each students

For more details contact

MAULANA AZAD PUBLIC SCHOOL

Hehal, Chaingada, Ramgarh Cantt. Ph.: 06553-254140, E-mail: maps_he@rediffmail.com

Camp Office : Baragain More, Booty Road, Ranchi, Ph.: 9334142804

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बताया :

अल्लाह तआला क़ियामत के दिन एक आदमी से कहेगा, ऐ आदम के बेटे, मैं बीमार पड़ा था, तू मेरी इयादत को नहीं आया । वह कहेगा, ऐ मेरे रब, कैसे तेरी इयादत को आता और तू तो रब्बुल आलमीन है । अल्लाह कहेगा क्या तुझे मालूम नहीं, मेरा फ़लां बन्दा बीमार पड़ा था पर तू उसकी इयादत को नहीं गया । क्या तुझे मालूम न था अगर तू उसकी इयादत को जाता तो मुझे उसके पास पाता ।

(हदीस)

ग़रीब और नादार लोगों के इलाज का मर्कज़

AL-AZIZ DAIGNOSTIC CENTRE

(RUN & MANAGED BY ISLAMIC CAREER CIRCLE)
A VOLUNTRY ASSOCIATION
GOVT. REGD. N.G.O.

बिल्डिंग की तामीर के लिए मदद की अपील :

Cheques and Drafts in Favour of : ISLAMIC CAREER CIRCLE

Contact

15, East Zakir Nagar
P.O. & P.S. Azad Nagar-832110
Town : Jamshedpur,
Distt. East Singhbhum,
Sub Div. : Dhalbhum,
State : Jharkhand
Mobile No. : 9308172090

क़ुरआन, हिन्दू धर्म-ग्रंथ और राजनीतिशास्त्र

❖ अभिजीत कुमार

क़ुरआन की एक आयत में आता है–"हमने इस किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी है । (क़ुरआन, 6:38) इन्सानी सोच व समझ के दायरे में आने वाली कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जिसका वर्णन क़ुरआन में न हो । क़ुरआन मानव जीवन के विविध पक्षों पर बात करता है–चाहे वह भौतिक हो, सामाजिक हो, आध्यात्मिक हो अथवा राजनीतिक । क़ुरआन की एक और अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह अल्लाह की तरफ़ से भेजी गयी आख़िरी किताब है, अत: यह उन तमाम ग्रंथों की पुष्टि करती है जो इससे पहले भेजे गये थे । स्वयं क़ुरआन में आता है–"और जो किताब हमने तुम्हारी ओर वह्य की है, वही हक़ है, वह उसकी पुष्टि करती है जो उससे पहले अवतीर्ण हुई है । (क़ुरआन, 35:31, 10:37,2,97, 12:111, 3:3, 6:92)

अत: हम देख सकते हैं कि विभिन्न धर्म के धर्म-ग्रंथों की मूल शिक्षाएं भी प्राय: वही है जो क़ुरआन की है । इस क़ुरआन में नाम से केवल 4 आसमानी किताबों का ज़िक्र हुआ है मगर क़ुरआन स्पष्ट कहता है कि हमने हर दौर में किताबें भेजीं ।

दूसरे धर्म-ग्रंथों व क़ुरआन की शिक्षाओं में साम्यता विषय पर अगर आलेख लिखे जाएं तो वह काफ़ी बृहत सामग्री होगी, अत: इस आलेख में प्राय: एक ही विषय (राजनीतिशास्त्र) को लिया गया है । इस विषय पर (राजनीतिशास्त्र) क़ुरआन व हिन्दू धर्म-ग्रंथों की शिक्षाओं की समानताएं प्राय: स्तब्धकारी है ।

शासक (राजा) कैसा हो

क़ुरआन के अनुसार शासक होना कोई सामान्य बात नहीं है । वह इस धरती पर अल्लाह की तरफ़ से नियुक्त किया गया प्रतिनिधि है । राज्य व समाज का कुशलतापूर्वक संचालन करना, प्रजा व राज्य के हितार्थ काम करना तो उसकी महती ज़िम्मेदारी है ही साथ ही उसका यह भी कर्तव्य है कि वह एक ऐसी व्यवस्था क़ायम करे कि समाज और उसकी प्रजा उस सर्वोच्च सत्ता की तरफ़ से विरत न हो, वह स्वयं भी राज्य का संचालन ईश्वर के द्वारा प्रदत्त विधानों के आधार पर करे । एक महान विचारक के शब्दों में सर्वोत्तम शासक वह है जो ईश्वरीय धर्म-विधान के आधार पर शासन चलाता है । क़ुरआन की आयत है–"निस्संदेह हमने तौरात उतारी जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश था, नबी जो आज्ञाकारी थे, उसको यहूदियों के लिए अनिवार्य ठहराते थे कि वे उसका पालन करें ।" (क़ुरआन, 5:44)

शासक से ठीक यही अपेक्षा (कि वह ईश्वरीय विधानों पर चले व प्रजा को भी उस पर चलाये) महाभारत में भी की गयी है जहां कहा गया है–"धर्मशीला-प्रजा-सर्वा: स्वधर्मनिरते नृपे ।" (महा॰ अनुशासनपर्व, अ॰-145) अर्थात राजा को सदा धर्म के साथ प्रजा का पालन करना चाहिए । राजा के स्वधर्मपरायण होने से वहां की सारी प्रजा धर्मशील रहती है ।

क़ुरआन की उक्त आयत में यह बात उस राजा के लिए आयी है, जो नास्तिक है, ईश्वरीय विधानों पर नहीं चलता । क़ुरआन की आयत है–"जो कोई उसके अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही विधर्मी हैं ।" (क़ुरआन, 5:44)

महाभारत में कहा गया है–

अथ येषामधर्मज्ञो राजा भवति नास्तिक: । न ते सुखं प्रबुध्यन्ति न सुखम् प्रस्वपन्ति च ।
सदा भवन्ति चोद्विग्नास्तस्य दुश्चरितैर्नरा: । योगक्षेमा हि बहबो राष्ट्रं नास्या विशन्ति तत् ।।

अर्थात जिसका राजा धर्म को न जानने वाला तथा नास्तिक होता है, वे लोग न तो सुख से सोते हैं, और न सुख से जागते हैं, अपितु राजा के दुराचार से सदैव उद्विग्न रहते हैं । ऐसे राज्य में बहुधा योगक्षेम नहीं प्राप्त होते ।

(महा॰, अनु॰ पर्व, 62141-42)

विदेश नीति

राज्य की विदेश नीति कैसी होनी चाहिए इस बारे में भी क़ुरआन शरीफ़ काफ़ी कुछ कहता है । किसी भी राज्य को अपने पड़ोसी राज्य के साथ किस तरह का व्यवहार करना

चाहिए ? कुरआन की आयत है–''तो जो तुम पर ज़्यादती करे तुम भी उसकी ज़्यादती के बराबर उसके विरुद्ध पेशक़दमी करो ।'' (कुरआन, 2:194)

आगे आता है–''और यदि वह संधि और सलामती की ओर झुके तो तुम भी इनके लिए झुक जाओ ।''

(कुरआन, 8:61)

महाभारत में जब गंगापुत्र भीष्म शरशय्या पर मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं तो श्री कृष्ण जी, युधिष्ठिर व अर्जुन को लेकर उनके पास आते हैं तथा भीष्म से कहते हैं कि वह अर्जुन व युधिष्ठिर को राजनीति संबंधी कुछ उपदेश दे । इस पर उपदेश देते हुए गंगापुत्र भीष्म भी राज्य की विदेश नीति के बारे में वही बात कहते हैं जो कुरआन की इस आयत में है । भीष्म कहते हैं–''राजा को सदा ही उद्योगशील रहना चाहिए, युधिष्ठिर इस बात को तुम हृदयस्थ कर लो । जो संधि लायक़ हो उससे संधि करो जो विरोधी हो उसका डटकर विरोध करो ।''

न्यायी हो

कुरआन के अनुसार शासक ईश्वरीय विधान के तहत नियुक्त प्रतिहारी है, अत: कुरआन शासकों के लिए भी कुछ मानक, कुछ कसौटियां तय करता है । उदा०–(हमने कहा) हे दाऊद ! हमने तुम्हें धरती पर ख़लीफ़ा बनाया है अत: तू लोगों के बीच हक़ के साथ हुकूमत कर ।'' (कुरआन, 38:26) अर्थात कुरआन कहता है कि राजा को सदा न्याय के साथ हुकूमत करना चाहिए, कभी भी पूर्वाग्रह ग्रस्त होकर फ़ैसला नहीं करना चाहिए । न्याय करते समय अपने-पराये का भेद आड़े नहीं आये, इसका ध्यान रखना चाहिए । महाभारत में भी राजा से भी इसी तरह की अपेक्षा की गयी है । कहा गया है–''अशिष्टशासनं धर्म: शिष्टानां परिपालनम् ।'' (महा०, अनु० पर्व, अध्याय-145) अर्थात ''अशिष्ट पुरुषों को दंड देना व शिष्ट पुरुषों का पालन करना राजा का धर्म है ।''

शासन-व्यवस्था

विकेन्द्रित शासन-व्यवस्था का निर्देश भी कुरआन में है । राज्य उत्तम तरीक़े से संचालित होता रहे इसके लिए शासन के प्रत्येक अंग के बीच परस्पर समन्वय व तालमेल का होना अत्यंत आवश्यक है । शासन तभी सुचारू ढंग से चलता है जब शासन व्यवस्था का प्रत्येक अंग अपने से ऊपर वाले का आज्ञापालक हो । इस प्रकार की व्यवस्था जहां भी होती है शासन सुचारू ढंग से चलता है । कुरआन की आयत है–''अल्लाह का आदेश मानो और रसूल का आदेश मानो और उनका जो तुम्हारे अधिकारी लोग हैं ।''

(कुरआन, 4:59)

भारतीय परंपरा में हितोपदेश ग्रंथ में तथा महाभारत में व आनंद रामायण में आता है–''मंत्रियों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वह अपने राजा का आज्ञापालक हो उसके प्रति निष्ठावान व उसका भला चाहने वाला हो तथा उसकी सलाह राज्य के कार्यों के अनुसार हो अन्यथा वे लाह की पुतली की तरह निष्क्रिय होते हैं । राजा भोज ने भी सुचारू व्यवस्था की अनिवार्य शर्त यह ठहरायी थी कि मंत्रीगण राजा का आज्ञापालक हो ।

शासक होने की योग्यता

राजा शासकीय व्यवस्था का आधार है । अत: राजा होने के लिए योग्य होना अत्यंत आवश्यक है । एक अच्छे शासक के जो भी गुण होते हैं, राजा बनने के लिए उस व्यक्ति विशेष में उन गुणों का होना परमावश्यक है । कुरआन की आयत है–''और याद करो जब इबराहीम की उसके रब ने कुछ बातों में परीक्षा ली तो उसने उसे पूरा कर दिखाया, उसने कहा, ''मैं तुझे सब लोगों का नायक बनाने वाला हूं । (कुरआन, 2:124) कुरआन के अनुसार शासक की नियुक्ति पूरी तरह जांच-परख के होनी चाहिए । अयोग्य व्यक्ति को कभी भी शासक नियुक्त नहीं करना चाहिए । हिन्दू ग्रंथों में भी स्पष्ट कहा गया है कि शासक का योग्य होना अनिवार्य है । धर्मराज युधिष्ठिर को राजनीति संबंधी उपदेश देते हुए भीष्म कहते हैं–हे पुत्र, जिस प्रकार समुद्र में टूटी नौका त्याग दी जाती है उसी प्रकार जनता को चाहिए कि वह अहितकर उपदेश देने वाले आचार्य व रक्षा न कर सकने वाले राजा को त्याग दे । (महा०, शांतिपर्व) भीष्म आगे कहते हैं–''राजा आवश्यकतानुसार कठोरता व कोमलता दोनों का अवलंबन करे । जैसे वसंत ऋतु का तेजस्वी सूर्य न ज़्यादा ठंड देता है न ज़्यादा गर्मी । सभी व्यसनों व आसक्तियों को उसे त्याग देना चाहिए ।

आनंद रामायण में वर्णित है श्रीराम चन्द्रजी अपने अनुजों को राजनीति का उपदेश देते हुए कहते हैं–हे अनुज ! ये सात दोष हैं जो अगर किसी में हो तो वह शासक बनने योग्य नहीं–अधिकनिडा, मद्यपान, धूत, वेश्यागमन, आलस्य, ज़्यादा खेलकूद व ज़्यादा शिकार करना । (आ०रा०)

पलाश वन दहकते हैं

प्रकाशक	: नया आयाम प्रकाशन बी॰ 161 हसन ख़ां, मेवात नगर, अलवर (राजस्थान)
मूल्य	: 250 रुपये

हिन्दी कवयित्री मंजु अरुण की कविताओं का संपादन करने के उपरांत श्री विनय मिश्र ने कवयित्री के रचनाकर्म के हवाले से दुश्यंत की ये पंक्तियां बहुत सटीक लिखी हैं–

चट्टानों पर खड़ा हुआ तो छाप रह गयी पांव की
सोचो कितना बोझ उठाकर मैं इन राहों से गुज़रा

मंजु अरुण की कविताओं का संकलन ''पलाश वन दहकते हैं'' 436 पृष्ठों में विभिन्न प्रकार के अनुभवों और अनुभूतियों का समावेश है । कवयित्री की कुछ रचनाओं में यथार्थ बोध और कर्तव्य बोध दोनों झलकता है । मंजु अरुण कहती हैं–

दुनिया
यदि बदलना चाहते हो
तो बदल डालो । पहले स्वयं को
दुनिया समूची । खुद-ब-खुद
बदल जाएगी

मेहनत के मायने को कुछ इस प्रकार स्पष्ट किया गया है–

धूप उठाये सिर पर
और
पैरों में बांधकर रेतीले पठार
जो नहाये होते हैं । पसीने के खारे दरिया में
उन्हीं से समझे जा सकते हैं । मेहनत के मायने ।

अधिकार और कर्तव्य का चित्रण इन शब्दों में देखिए–

अधिकार होते हैं
भरपूर-उपयोग करने के लिए
और कर्तव्य
ताले में बन्द कर
रख लेने के लिए

इराक़ पर अमेरिकी हमले को कवयित्री ने इन शब्दों में पिरोया है–

यह युद्ध नहीं
सत्ता के स्वार्थी सियारों का एक रंगीला उत्सव है
और ऐसे जुनून पर
अब हमें प्रतिबंध लगाना है ।''

इस संकलन में कविताओं के अलावा कवयित्री की कुछ अन्य रचनाएं भी है । पुस्तक पठनीय और संग्रहणीय है ।

प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

अम्बिकापुर से बिलासपुर	रात्रि	23:20
अम्बिकापुर से रायपुर	प्रात:	03:00
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:30
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:25
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:30
मननगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	19:10
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	05:00
अम्बिकापुर से चीरमीरी	प्रात:	06:30
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	16:10
रायगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:40

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

निदाए यतीम (Voice of Orphan Boys)



यतीमख़ाना इस्लामिया, गया।

दीनी व असरी उलोम की अपनी तर्ज की मशहूर अकामती (Residential) तालीमगाह

बिरादराने इस्लाम !

अस्सलामु अलैकुम बरहमतुल्लाह व बरकातहु

•आपका यह क़दीम इदारा 92 साल से इल्म की शमा रौशन किय हुए है। आज इसी के तुफ़ैल से इलाक़ा में मुसलमान और हिन्दुओं के स्कूल, पाठशाला, मदरसा और दूर–दूर तक गांव में मकातिब नज़र आ रहे हैं। आज एक छोटी–सी जगह 'चेरकी' के आसपास बएक–वक्त कई बड़े–बड़े इदारे मिल्लत के फ़ायदे के लिए चल रहे हैं। ग़रज एक चिराग़ से बहुत से चिराग़ रौशन हो गये हैं। • यतीमख़ाना अपने तर्ज़ का वाहिद दीनी व असरी तालीम का संगम होने की बजह कर मशहूर व मुम्ताज है। •अक्टूबर 1917 ई० से ही सही इस्लामी खुतूत पर नयी नस्ल की तालीम व तर्बियत में मसरूफ़ है। • तारीख क़ियाम : अक्टूबर 1917 ई० • कैफ़ियत क़ियाम : जनाब इनायत खान (रह०) ने इदारा की बुनियाद एक उस्ताद और दो (2) यतीम बच्चे से आठ आने (50 पैसे) माहबार किराये की कोठरी में तीस रूपये (Rs. 30/-) की छोटी–सी रक़म से डाली थी। • कफ़ालत : इस वक़्त इदारा में 125 यतीम तोलबा हैं, जिनका सारा ख़र्च इदारा बरदाश्त करता है। • तालीमी साल अप्रैल या मार्च • तालीम : दर्जा अतफाल ता मैट्रिक (Matric) • शोबा–ए–हिफ़्ज : यहां असरी तालीम के साथ हिफ़्ज़ भी कराया जाता है। • तादाद ज़ेरे तालीम तोलबा व तालिबात तक़रीबन 450 • अल्लामा इकाल • अल्लामा शिबली • डा० अबुल खैर • सैयद मोहम्मद नाजिर हुसैन • सैयद मोहम्मद उमर दराज • ख्वाजा गेयासुद्दीन होस्टल • अपना सारा ख़र्च देकर ग़ैर यतीम तोलबा और इदारे के यतीम तोलबा रहते हैं। • तादाद असातज़ा व दीगर मुलाज़मीन 28 • सालना ख़र्च 13 लाख रूपये से ज़ायद • ज़रिया आमदनी : मुस्लिम अवाम के चन्दे।

• याद रखें ! हर साल मैट्रिक (Matric) बोर्ड के इम्तिहान में स्कूल का रिज़ल्ट सौ प्रतिशत (100 %) हुआ करता है। • यहां के तोलबा को मैट्रिक पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनीवर्सिटी में आलमियत के साल अब्वल और दोम में आसानी से दाख़िला मिला जाता है। • खुशख़बरी : • फ़ासलाती निज़ामे तालीम (Centre for Distance Education) का अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (Approved by Aligarh Muslim University, Aligarh) के तहत, यतीमख़ना इस्लामिया, गया (The Gaya Muslim Orphanage) में सी० डी० ई० स्टडी सेन्टर (C.D.E. Study Centre) खुल चुका है। 2009–10 के सेशन में इन्टरमेडिएट दर्जा, ग्यारहवीं (Class XI) और बारहवीं (XII) का फार्म भरा जा रहा है। • कंप्यूटर की भी तालीम शुरू हो चुकी है।

नोट : कुरआरन, अरबी और इस्लामियात की तालीम दर्जा अब्वल ता दर्जा दहुम तक दी जाती है अरबी और अंग्रेज़ी मैट्रिक बोर्ड के इम्तिहान में भी लाज़िमी है।

एक अहम अपील : कफ़ाला स्कीम (Kafala Scheme) के तहत एक यतीम तालिब इल्म पर सालाना ख़र्च (Rs.8,000/-) रूपये का है। आप भी एक यतीम बच्चे का ख़र्च उठा कर कारे सवाब में शरीक हों। जिस शक्ल में मुम्किन हो तआवुन फ़रमा कर अल्लाह से अज्रे अजीम हासिल करें। मसलन, • ज़कात, • अतियात, • सदकात, • पैदावार की ज़कात, • चर्म कुर्बानी, • एक यतीम बच्चे का सालाना ख़र्च देकर, • अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम कमरा या हॉल बनवाना वग़ैरह।

नोट : हॉस्टल और स्कूल में यतीम और ग़ैर–यतीम तोलबा का दाख़िला जारी

• नया तालीमी साल माह अप्रैल से शुरू।

इदारा आपसे फ़राख़दिलाना तआवुन की अपील करता है।

चेक व ड्राफ्ट पर केवल यह लिखे : **"THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE"**

M-9955655960 चेक, ड्राफ्ट और मनीऑर्डर भेजने का पता : फोन नं०–0631–2734428

Hon. Secretary. **THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE**

• Cherki Distt. Gaya, 824237 (Bihar) India

• Bank A/C No.: 10581, Union Bank of India (Main Branch, Gaya)

• **CORE BANKING A/C NO. 300402010010581**

(डॉ०) फ़रासत हुसैन Email : gmocde@yahoo.com Website : www.gmogaya.com (डॉ०) मुहम्मद एहतिशाम रसूल

(सदर) (एज़ाज़ी नाज़िम)

सत्याग्रह

■ मुंशी प्रेमचन्द

(गतांक का शेष)

(4)

लोगों के चले जाने पर मोटे राम ने पुलिस वालों से पूछा, तुम यहां क्यों खड़े हो ?

सिपाहियों ने कहा, साहब का आदेश है, हम क्यों करें ?

मोटे राम : ''यहां से चले जाओ ।''

सिपाही : ''आपके कहने से चले जाएं, कल नौकरी छूट जाएगी तो आप खाने को देंगे ?''

मोटे राम : ''जाता क्यों नहीं है बे, कोई अपराध किया है ?''

सिपाही : ''अच्छा जाओ तो देखें ?''

पंडित जी अपने ब्राह्मणी रोब में आकर उठे और एक सिपाही को इतना ज़ोर का धक्का दिया कि वह दूर ज़ा गिरा । दूसरे सिपाहियों की हिम्मत छूट गयी । पंडित जी को उन सभी ने केवल मोटा समझ लिया था । उनकी शक्ति देखी तो चुपके से चल दिये ।

मोटे राम अब लगे इधर-उधर निगाहें दौड़ाने कि कोई फेरी वाला नज़र आ जाए तो उससे कुछ लें । फिर सोचा कि उसने किसी से कह दिया तो लोग तालियां बजाएंगे । नहीं ऐसी होशियारी से काम करना चाहिए कि किसी को कानों-कान ख़बर न हो । उसी समय एक फेरी वाला नज़र आ गया । ग्यारह बज गये थे, चारों ओर सन्नाटा था, पंडित जी ने आवाज़ दी । फेरी वाला पास आकर : कहिए क्या दूं ? भूख लग आयी ना ? दाना-पानी छोड़ना साधुओं का काम है, हमारा आपका काम नहीं ।''

मोटे राम : ऐसा क्या बकता है, चाहें तो महीनों पड़े रहें भूख-प्यास न लगे । तुझे तो केवल इसलिए बुलाया है कि ज़रा अपनी कुप्पी मुझे दे दे । देखूं तो वहां क्या रेंग रहा है, डर है कि कहीं सांप नहीं हो ।

फेरी वाले ने चिराग़ उतार के दे दिया । पंडित जी उसे लेकर इधर-उधर कुछ खोजने लगे । इतने में चिराग़ उनके हाथ से गिर कर बुझ गया । पंडित जी ने उसे एक ठोकर भी लगा दी कि बचा-खुचा तेल भी बह जाए ।

फेरी वाला : महाराज आपने तो सारा तेल गिरा दिया अब तक चार पैसे का सौदा बेचता । आपने यह खड़ाग बढ़ा दिया ।

मोटे राम : हाथ ही तो है, छूट गया तो क्या मैं हाथ काट डालूं । यह लो पैसे कहीं से तेल डलवालो ।

फेरी वाला : (पैसे लेकर) अब तेल लेकर यहां काहे को आऊंगा ।''

मोटे राम : खोम्चा रखे जाओ, लपक कर थोड़ा तेल ले लो, नहीं तो मुझे सांप काट लेगा, तुम्हें ही हत्या लगेगी । मैं तुम्हारा खोम्चा देखता हूं । डरते हो तो अपने रुपये, पैसे लेते जाओ । फेरी वाला बड़ी उलझन में पड़ा । पैसे निकालता है तो डर है कि पंडित जी बुरा न मानें । सोचेंगे मुझे बेईमान समझता है और छोड़कर जाए तो कौन जाने उनकी नीयत में क्या हो । आख़िर उसने भाग्य पर भरोसा करके खोम्चा छोड़ दिया ।

वह उधर बाज़ार की ओर चला इधर पंडित जी ने खोम्चे पर नज़र डाली । मिठाई बहुत कम बच रही थी । पांच-छः चीज़ें थीं मगर किसी में से भी दो से अधिक निकालने की गुंजाइश नहीं थी । पंडित जी ने सोचा इससे भूख और तेज़ हो जाएगी । शेर के मुंह में ख़ून लग जाएगा । वापस अपनी जगह आ बैठे । लेकिन फिर सोचा कुछ तो डाढ़स हो ही जाएगी । उठे और मिठाई निकाली । मुंह में पहला ही लड्डू डाला था कि देखा खोम्चा वाला कुप्पी जलाए चला आ रहा है । उसके आने से पहले मिठाइयों को ख़त्म करना ज़रूरी था । एक साथ दो-दो मुंह में रखने लगे और अधकुचली ही निगलने लगे । खोम्चा वाला इस क़दम और आगे बढ़ आया था । अब चार-चार, छह-छह मि०इयां एक साथ मुंह में डाल ली । अब न निगलते बनता था और न उगलते । जब वह बिल्कुल सामने आ गया तो पंडित जी ने सारी मिठाइयां निगल लीं । मगर घड़ियाल तो थे नहीं, आंखों में पानी भर आया, गला फंस गया । शरीर के रोंगटे

खड़े हो गये । ज़ोर से खांसने लगे ।

खोम्चे वाले ने कुप्पी बढ़ाते हुए कहा, ''लीजिए देख लीजिए, चले तो हैं आप उपास (उपवास) करने और जान का इतना डर है । आपको क्या चिंता अगर जान भी निकल जाए तो सरकार बाल-बच्चों की परोस्ती (पोषण) करेगी ।'' पंडित जी को गुस्सा तो ऐसा आया कि इस पाजी को खरी-खोटी सुना दें, मगर गले से आवाज़ नहीं निकल सकी । कुप्पी चुपके से ले ली और झूठ-मूठ इधर-उधर देखकर लौटा दी ।

(5)

दूसरे दिन व्यापारियों ने सलाह मशविरा शुरू किया । कांग्रेस वालों में भी हलचल मची । अमन सभा ने भी कान खड़े किये । पंडित समाज ने अलग सभा की और यह तय किया कि पंडित मोटे राम को राजनीतिक मामलों में पड़ने का कोई अधिकार नहीं है । मगर पंडित जी की किसी ने ख़बर नहीं ली । लोग खुलेआम कह रहे थे कि पंडित जी ने सरकार से एक हज़ार रुपये लेकर यह अनुष्ठान किया है ।

पंडित जी सुबह उठे तो शरीर मृत जान पड़ता था । खड़े होते तो सिर में चक्कर आते और ऐसा लगता मानो पेट में कोई बैठा हुआ कुरेद रहा हो । सड़क की ओर आंखें लगी हुई थीं कि कोई मनाने तो नहीं आ रहा है । पूजा-पाठ का समय इसी प्रतीक्षा में बीत गया । इस समय रोज़ पूजा के बाद नाश्ता करते थे । आज मुंह में पानी भी नहीं गया था । पंडिताइन पर गुस्सा आने लगा कि खुद तो रात पेट भर कर सोयी होगी अभी भी जलपान कर चुकी होगी, मगर इधर भूल कर भी नहीं झांका कि मर गये या जीवित हैं । कुछ बात करने के बहाने क्या थोड़ा-सा मोहन भोग बनाकर नहीं ला सकती थी, मगर किसे चिंता है । रुपये लेकर रख लिया, फिर जो कुछ मिलेगा वह भी लेकर रख लेगी, मुझे अच्छा उल्लू बनाया ।

(6)

रात के नौ बजे थे । सेठ भोंदूमल, जो व्यापारी समाज के नेता थे विश्वास भरे स्वर में कह रहे थे-''मान लिया पंडित जी ने लालच में आकर ही यह व्रत किया है, मगर इससे वह कष्ट तो कम नहीं हो सकता जो अन्न जल के बिना किसी जीव को होता है । यह धर्म के विरुद्ध है कि एक ब्राह्मण हमारे ऊपर दाना-पानी छोड़ दे और हम पेट भरकर चैन की नींद सोएं । अगर उन्होंने कोई धर्म विरोधी काम किया है तो इसका दंड उन्हें ही भोगना पड़ेगा, हम क्यों अपने कर्तव्य से मुंह मोड़ें ।''

कांग्रेस के सेक्रेट्री ने कहा, ''मुझे तो जो कुछ कहना था वह कह चुका । आप लोग समाज के नेता हैं, जो कुछ फ़ैसला करेंगे मंज़ूर है । चलिए मैं भी आपके साथ चला चलूंगा, धर्म का कुछ अंश मुझे भी मिल जाएगा । मगर मेरी भी एक विनती सुन लीजिए । आप लोग पहले मुझे वहां जाने दीजिए, मैं अकेले में दस मिनट उनसे बातें करना चाहता हूं । इसमें किसी को क्या आपत्ति हो सकती थी, विनती स्वीकार की गयी ।

सेक्रेट्री साहब मानव कमज़ोरियों से अवगत थे । वे सीधे बाज़ार गये और पांच रुपये की मिठाई ख़रीदी उसमें मात्रा से अधिक सुगंध डलवाया, चांदी के पत्र लगवाये और एक दोने में लिये हुए रूठे ब्राह्मण देवता की पूजा करने चले । एक सुराही में ठंडा पानी लिया और उसमें केवड़ा मिलाया । सुगंध में कितनी शक्ति है, इसे कौन नहीं जानता, इससे तो बिना भूख के भूख लगती है ।

पंडित जी उस समय बदहवास ज़मीन पर पड़े थे । रात को कुछ नहीं मिला, दस-पांच छोटी-छोटी मिठाइयों की क्या गिनती । दोपहर को कुछ नहीं मिला और इस समय भी खाने का समय बीत चुका था । अंग-अंग ढीले पड़ गये थे, आंखें भी नहीं खुलती थीं । होंठ सूख गये थे । जीवन का कोई संकेत था तो बस उनका धीरे-धीरे कराहना । ऐसी कठिन विपदा उन पर कभी नहीं पड़ी थी । अनपच की शिकायत तो उन्हें महीने में दो-चार बार हो जाती थी, मगर ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्होंने भोजन त्याग दिया हो । नगर वालों को, अमन सभा को, सरकार को, कांग्रेस को और अपनी पत्नी को जी भर कर कोस चुके थे । किसी से कोई आशा नहीं थी । अब इतना बल भी नहीं था कि खड़े हो सकें । विश्वास हो गया था कि आज रात को प्राण अवश्य निकल जाएगा ।

सेक्रेट्री ने पुकारा-''शास्त्री जी !''

मोटे राम ने पड़े-पड़े आंखें खोल दीं, उनमें दुख और पीड़ा थी । सेक्रेट्री ने मिठाई का दोना सामने रख दिया और सुराही पर मिट्टी का गिलास रख दिया, फिर बोला-''यहां कब तक पड़े रहिएगा ?''

सुगंध ने अमृत का काम किया, पंडित जी उठ बैठे और

बोले, ''देखो कब तक फ़ैसला होता है ।''

सेक्रेट्री ने कहा–''यहां कोई फ़ैसला नहीं होगा, आज दिन भर पंचायत होती रही मगर कुछ तय नहीं हुआ । कल कहीं शाम को लाट साहब आएंगे, उस समय तक तो न जाने आपकी क्या हालत होगी । आपका चेहरा एकदम पीला पड़ गया है ।

मोटे राम : ''यहीं मरना बदा होगा तो कौन टाल सकता है ? इस दोने में कलाकन्द हैं क्या ?''

सेक्रेट्री : हां तरह-तरह की मिठाइयां है, एक संबंधी के यहां भेजने को विशेष रूप से तैयार करायी हैं ।''

मोटे राम : जभी तो इनमें इतनी सुगंध है, दोना खेलिए तो ।''

सेक्रेट्री ने मुस्कुरा कर दोना खोल दिया । पंडित जी आंखों से मिठाइयां खाने लगे । अंधा आंखें पाकर भी दुनिया को ऐसी दृष्टि से न देखेगा । मुंह में पानी भर आया । सेक्रेट्री ने कहा : आपका व्रत न होता तो दो-चार मिठाइयां आपको चखाता, पांच रुपये सेर के दाम दिये हैं ।''

मोटे राम : ''तब तो बहुत बढ़िया होंगी, मैंने बहुत दिन हुए कलाकन्द नहीं खायी ।''

सेक्रेट्री : ''आपने भी तो बैठे बिठाये झंझट मोल ले लिया, जान ही न रहेगी तो रुपया किस काम आएगा ।''

मोटे राम : ''क्या करूं फंस गया, मैं इतनी मिठाइयों का जलपान कर जाया करता था (हाथ से मिठाइंयों को टटोल कर) भोला की दुकान की होंगी ?''

सेक्रेट्री : ''चखिये दो-चार !''

मोटे राम : ''क्या चखूं धर्म संकट में पड़ा हूं ।''

सेक्रेट्री : ''अजी चखिये भी, इस समय जो आनन्द मिलेगा वह लाख रुपये में भी नहीं मिल सकता, कोई किसी से कहने जाता है क्या ।''

मोटे राम ! मुझे डर किसका है, मैं यहां बिना अन्न जलकर मर रहा हूं और किसी को चिंता ही नहीं है, तो फिर मुझे क्या डर । लाओ दोना इधर लाओ । जाओ सबसे कह देना कि शास्त्री जी ने व्रत तोड़ दिया । भाड़ में जाए बाज़ार और व्यापार । यहां किसी की परवाह नहीं । जब किसी में धर्म नहीं रहा तो मैंने ही धर्म का ठेका थोड़े ही लिया है ।

यह कहकर पंडित जी ने दोना अपनी ओर खींच लिया और लगे बढ़-बढ़कर हाथ मारने । एक ही झण में दोना आधा हो गया । सेठ लोग आकर पाटक पर खड़े थे । सेक्रेट्री ने जाकर कहा, ज़रा तमाशा देखिये । आप लोगों को अब न बाज़ार खोलना पड़ेगा न खुशामद करनी पड़ेगी । मैंने सारी कठिनाइयां दूर कर दीं । यह कांग्रेस का उत्थान है ।

चांदनी रात थी, लोगों ने आकर देखा कि पंडित जी मिठाई ठिकाने लगाने में वैसे ही लीन हैं जैसे कोई महात्मा समाधी में लीन हो ।

भोन्दू मल ने कहा–''पंडित जी के चरण छूता हूं । हम लोग तो आ ही रहे थे, आपने जल्दी क्यों की । ऐसा उपाय बताते कि आपका व्रत भी नहीं टूटता और काम भी पूरा हो जाता ।''

मोटे राम : मेरा काम पूरा हो गया । यह स्वर्ग का आनन्द है, जो धन के ढेरों से नहीं मिल सकता, अगर कुछ श्रद्धा हो तो इसी दुकान की इतनी मिठाई और मंगवा दो ।''[1]

1. हम यह कहना भूल गये कि सेक्रेट्री को मैदान में आते समय पुलिस के सिपाही को चार आने देने पड़े थे । यह नियम के विरुद्ध था, लेकिन सेक्रेट्री ने इस बात पर अड़ना उचित नहीं समझा था ।



अंधकार, प्रकाश और क़ुरआन की शिक्षाएं

■ सैयद वक़ार अहमद हुसैनी

यह अध्याय क़ुरआन मजीद की उन आयतों से बहस करता है जो प्रकाश और अंधकार की विशेषताओं, स्वयं से प्रकाश निकालने वाले और दूसरे पिंडों के बीच अन्तर एवं मानवीय दृष्टि पर उनके प्रभाव तथा अंतरिक्ष की ओर ऊपर जाते समय मानवीय दृष्टि से और मानव की प्रतिक्रियाओं से संबंध रखती हैं। इस सिलसिले में क़ुरआन के मूल शब्द ये हैं–प्रकाश (नूर), अंधकार ('ज़ुलुमात'), चमकना, दीप्त (अज़ाअ), प्रकाशित करना (अज़ाअ, संज्ञा : इज़ाअत), देखना, प्रकाश प्राप्त करना और देखना (अलबसर), अंधा (उमयुन) आदि।

प्रकाश, अंधकार और आकाश की ओर चढ़ाई के समय मानव दृष्टि में परिवर्तनों के बारे में क़ुरआन का बयान–

"प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और अंधेरे और उजाले का विधान किया, फिर भी इन्कार करने वाले लोग दूसरों को अपने रब के समकक्ष ठहराते हैं।" (क़ुरआन, 6:1)

"उनकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी व्यक्ति ने आग जलायी, फिर जब उसने उसके वातावरण को प्रकाशित कर दिया, तो अल्लाह ने उनका प्रकाश ही छीन लिया और उन्हें अंधेरे में छोड़ दिया जिससे उन्हें कुछ सुझाई नहीं दे रहा है। वे बहरे हैं, अंधे हैं, अब वे लौटने के नहीं।"
(क़ुरआन, 2:17-18)

"यदि हम उन पर आकाश से कोई द्वार खोल दें और वे दिन-दहाड़े उसमें चढ़ने लगें, फिर भी वे यही कहेंगे : 'हमारी आंखें मदमाती हैं, बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है!" (क़ुरआन, 15:14-15)

मारांश और व्याख्या

अल्लाह तआला ने प्रकाश और अंधकार पैदा किये हैं और वे बराबर नहीं हैं (क़ुरआन, 13:16, 35:20)। सूर्य स्वयं से प्रकाश निकालने वाला स्रोत है और चन्द्रमा परावर्तित प्रकाश देता है, (क़ुरआन, 10:5, 25:61, 71:16) एक प्रसिद्ध आयत में है : "अल्लाह तआला आकाशों और धरती का प्रकाश है" (24:35)। यह आयत प्रकाश के सदृश्य को प्रस्तुत करती है। यह प्रकाश के विभिन्न स्रोतों, ईंधनों और प्रकाश के बरतनों (दीप पात्रों) और एक अभौमिक वृक्ष का उल्लेख करती है जिसका तेल प्रकाश देता है, यद्यपि उसे किसी आग ने छुआ तक न हो, तब प्रकाश (नूर) क्या है ? इसकी विभिन्न क़िस्में और विशेषताएं क्या हैं ? विभिन्न पदार्थों के साथ संपर्क में आने के बाद प्रकाश का क्या रवैया होता है ? प्रकाश, मानवीय आंख और मानवों की आस्था-व्यवस्था के बीच क्या संबंध हैं ?

क़ुरआन मजीद में ऐसी 23 आयतें हैं जिनमें अंधकार को बहुवचन अर्थात 'ज़ुलुमात' (अंधकारों) के रूप में उल्लेख किया गया है और कहीं भी अंधकार ('ज़ुल्मत') को एकवचन संज्ञा के रूप में ज़िक्र नहीं किया गया है। वैज्ञानिक सन्दर्भ में इसका क्या महत्व है ? अंधकार क्या है ? और वह कैसे उत्पन्न होता या लाया जाता है ?

आयत 2:17 एक दृश्य को बयान करती है। एक आग जलायी गयी है। इसका प्रकाश चतुर्दिक फैल जाता है और चीज़ें दिखाई पड़ने लगती हैं। जब किसी जलने वाले स्रोत से कोई प्रकाश उत्पन्न नहीं किया जाता है तो फिर मनुष्य अपने चतुर्दिक की चीज़ों को नहीं देख सकता। दृष्टि और अंधकार की अनुभूतियां (Sensations) कैसे पैदा होती हैं ? दृष्टि में मानवीय आंख और प्रकाश क्या भूमिका निभाते हैं ?

अंतिम आयतें एक ऐसी वैज्ञानिक दृश्य को प्रस्तुत करती हैं, जिससे हाल में ही हम अंतरिक्ष में पहली उड़ान भरने के बाद अवगत हुए हैं। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर इन आयतों के अवतरण के समय से अब तक लगभग चौदह सौ वर्षों की अवधि तक इसको जानना इन्सान के सैद्धांतिक और परीक्षण संबंधी विज्ञानों (Theoretical and Experimental Sciences) की क्षमताओं और उनके अनुभवों से परे था। जब इन्सान अंतरिक्ष की ओर चढ़ायी जारी रखता है तो धरती, वायुमंडल और इनके चारों ओर का वातावरण एवं दूर के आकाशीय पिंड तथा स्वयं अंतरिक्ष कैसे दिखायी पड़ते हैं ? अंतरिक्ष की ओर चढ़ाई में दिखायी पड़ने वाले बदलते दृश्यों को वे लोग किस प्रकार परिभाषित करते हैं जो ईश्वर के इन्कारी हैं या जो उसको मानते हैं ?

प्रकाश के स्रोत और प्रकृति के बारे में आधुनिक ज्ञान

आधुनिक विज्ञान में नूर (प्रकाश) और ज़ुलुमात (अंधियारियां) क्या हैं ? प्रकाश या दृश्यमान प्रकाश (Visible Light) विकिरक ऊर्जा (Radiant energy) का एक नन्हा-सा हिस्सा है, जिसे हम देख सकते हैं। विकिरक, ऊर्जा जिसे देखा नहीं जा सकता, में अवरक्त (Infrared), अल्ट्रावायलेट, एक्स किरणें और रेडियो तरंगें सम्मिलित हैं, हम लोग उनके बारे में अंधे हैं। प्राकृतिक (सूर्य) और कृत्रिम (मोमबत्तियां, दीपक आदि) प्रकाश-स्रोत अपने प्रकाश को विसर्जित करते हैं, लेकिन अक्सर चीज़ें ऐसा नहीं कर सकतीं। लेकिन हम उन्हें देखते हैं क्योंकि किसी स्रोत से प्रकाश उन तक यात्रा करता है और फिर हमारी आंखों तक पहुंचता है।

वैज्ञानिकों को विश्वास है कि प्रकाश प्रत्येक तत्व के अणुओं (Atoms) से निकलता है। अणु ऊर्जा को अपने में समो सकता है, जबकि उसे उद्दीपित किया जाता है। अतएव जब उसे जलाया जाता है तो वह ऊर्जा को जारी करता है। इससे प्रकाश उत्पन्न होता है। अणु नन्हीं पोटलियों (Thiny Bundles) में ऊर्जा को समोता और विसर्जित करता है। इस प्रक्रिया को फोटोंस (Photons) कहते हैं। जब स्रोत विभिन्न मात्राओं में ऊर्जा विसर्जित करता है, तो भिन्न-भिन्न रंगों का प्रकाश उत्पन्न होता है। न्यूनतम ऊर्जा के फोटोंस (Photons) से लाल रंग का प्रकाश उत्पन्न होता है और नीला प्रकाश सबसे अधिक ऊर्जा वाले फोटोंस से उत्पन्न होता है। सभी सात रंगों (लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, जाम्ब (Indigo) और बैंगनी) पर आधारित श्वेत प्रकाश ऊर्जा के विभिन्न स्तरों के फोटोंस का मिश्रण होता है। प्रकाश की प्रकृति के बारे में दो सिद्धांत विकसित हुए हैं। एक सिद्धांत प्रकाश को कणों (Particles) का निर्गमन ठहराता है और दूसरा यह बयान करता है कि प्रकाश तरंग गति में यात्रा करता है। क्वांटम थ्योरी (Quantum Theory) यह व्याख्या करती है कि दोनों सिद्धांत सच्चे और सही हैं। कुछ परिस्थितियों के अंतर्गत प्रकाश, कण की एक शृंखला की भांति व्यवहार करता है और दूसरी परिस्थितियों में इलेक्ट्रो मैगनेटिक तरंगों की भांति व्यवहार करता है और पदार्थ व प्रकाश के बीच होने वाले कुछ आंतरिक संबंधों जैसे फोटो इलेक्ट्रिक प्रभाव प्रकाश के कण की भांति अपनी प्रकृति को प्रकट करते हैं।

जहां हमको मालूम है कि प्रकाश तरंग-गति में यात्रा करता है, वहीं यह भी पता चला है कि प्रकाश की तरंग, प्रकाश की दिशा में यात्रा के साथ समकोण बनाती हुई विचलित होती है। प्रकाश की तरंगों का एक एम्प्लीट्यूड (Amplitude) अर्थात शक्ति की इकाई–और एक तरंग की लंबाई (किसी भी बिन्दु पर दो निरंतर तरंगों की मध्यवर्ती दूरी) होता है। किसी भी बिन्दु पर से प्रति सेकेंड गुज़रने वाली तरंगों की संख्या को तरंग आवृत्ति (Wave Frequency) कहा जाता है। एम्प्लीट्यूड, प्रकाश की तीव्रता (Intensity) या उसकी दीप्ति को निर्धारित करता है। इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम (Electromagnetic Spectrum) एक ऐसा चार्ट होता है जो इन तरंगों का उनकी आवृत्ति और तरंग की लंबाई के लिहाज़ से संयोजन करता है। दृश्यमान प्रकाश की लंबी तरंगें 4000 से लेकर 7000 एंगस्ट्रम (Angstroms) तक होती हैं। एक एंगस्ट्रम लगभग 0.0000001 मिलीमीटर के बराबर होता है। पूरा स्पेक्ट्रम 0.00000000001

मिलीमीटर (1/10,000 एंगस्ट्रम) या इससे न्यून प्रकाश की लंबाई की छोटी गामा किरणों से लेकर कई मील लंबी रेडियो तरंगों तक फैला हुआ होता है । इस प्रकार इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों से लेकर कई मील लंबी रेडियो तरंगों तक फैला हुआ होता है । इस प्रकार इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों का 'दृश्यमान स्पेक्ट्रम' जिसे हम अपनी आंखों से देख सकते हैं, स्पेक्ट्रम का एक बहुत छोटा-सा भाग होता है जिसके दोनों किनारों पर गहन अंधकार या इन्सान के अंधेपन के क्षेत्र हैं ।

स्पेक्ट्रम का विश्लेषण विभिन्न प्रकाश-स्रोतों के स्पेक्ट्रम का अध्ययन है । जब सूर्य के प्रकाश को किसी प्रिज़्म (Prism) से गुज़ारा जाता है तो प्रकाश की लंबाई फैल जाती है और हमारे 'दृश्यमान स्पेक्ट्रम' के सात रंगों का अनवरत स्पेक्ट्रम बनता है । सूर्य का प्रकाश दृष्यमान प्रकाश की सभी तरंगों की लंबाई को समाहित रखता है, फिर भी लंबी दूरी दूसरे स्रोतों का प्रकाश किसी अनवरत स्पेक्ट्रम पर आधारित नहीं हो सकता । स्पेक्ट्रम में अंधकार अवकाश (Dark Gaps) या लापता रंग हो सकते हैं ।

ऑपटिक्स (प्रकाश का अध्ययन)

जब प्रकाश की कोई किरण किसी वस्तु से टकराती है तो वह परावर्तित हो सकती है । उसमें से गुज़र कर मुड़ सकती है । वस्तु में समाहित भी हो सकती है या इनमें कोई समूह बन सकती है । प्रकाश जब वायुमंडल के कणों की भांति किसी पदार्थ (Matter) से टकराता है तो वह सभी दिशाओं में परावर्तित हो जाता है । प्रकाश के बिखराव की मात्रा और उसका विभाजन कण के आकार की तरंग की लंबाई आदि पर निर्भर होती है । जब प्रकाश की दो तरंगें एकत्र होती हैं तो एक तरंग की ऊंचाई दूसरे की ढलान के साथ एकत्र होती है । यह व्यतिकरण (Interference) प्रकाश की तरंगों को मिटा देता है और अंधकार छोड़ जाता है । ध्रुवीकरण (Polarization) उस समय होता है, जब प्रकाश की किसी किरण में फोटोंस के इलेक्ट्रिक और मैग्नेटिक क्षेत्रों वाले फोटोंस को गुज़रने देता है । केन्द्रीकृत 'सन ग्लास' (Sunglass) प्रकाश के केन्द्रीकृत भाग का मार्ग रोक देते हैं और प्रकाश की चकाचौंध को कम कर देते हैं या अंधकार उत्पन्न करते हैं ।

मानवीय आंखें और दृष्टि

मानवीय आंख वास्तव में वस्तुओं को देखती नहीं है, वह वस्तुओं द्वारा परावर्तित प्रकाश को देखती है । आंख के भागों में कॉर्निया (Cornea) सम्मिलित है, जो आंख के ढेले की बाह्य परत पर कड़े तंतुओं (Tissues) पर आधारित होता है । कॉर्निया प्रकाश की किरणों को अन्दर प्रवेश करने देता है । उसके पीछे आइरिस (Iris) होता है जो मेलानिन (Melanin) पर आधारित होता है । आइरिस शक्तिशाली प्रकाश को समो लेता है । यदि यह ऐसा न करे तो चीज़ें धुंधली और अस्पष्ट नज़र आएंगी । आंख की पुतली, जो आइरिस में एक सुव्यवस्थित खुला भाग होता है, आंख में प्रवेश करने वाले प्रकाश की मात्रा को सुव्यवस्थित करती है ।

आइरिस के पीछे क्रायस्टाललाइन लेंस (Crystalline), रॉड्स (Rods) और कोंस (Cones) से अभिहित कोशिकाओं (Cells) से बनी हुई लचकदार संरचना होती है । वे प्रकाश की किरणों को आत्मसात करते हैं और उन्हें इलेक्ट्रिकल सिगनलों में परिवर्तित करते हैं । दृष्टि स्नायु (Optic Nerve) जो राड्स और कोंस से जुड़े हुए फाइबर स्नायु होते हैं, आंख के परदे (Retina) से इलेक्ट्रिकल सिगनलों को दिमाग़ तक पहुंचाते हैं जिसे दृश्यमान प्रतिबिंब कहते हैं ।

आंख में प्रविष्ट करने वाले प्रकाश की किरणों को आंख के परदे (Retina) पर किसी बिन्दु पर आना चाहिए ताकि एक स्पष्ट दृश्य-बिंब बन सके । कॉर्निया और लेंस आंख के पटल पर लाने वाले अर्थात केन्द्रित करने वाले हिस्से हैं । इसलिए इन्हीं किरणों को अवरुद्ध करना ज़रूरी है ताकि वे एक साथ कॉर्निया पर पहुंचें और इस पर प्रतिबिंब को बनाएं, अतएव लेंस कम या अधिक अपवर्तन के लिए अधिकतर गोल और मोटा बन कर आंख को दूर या नज़दीक की वस्तुओं पर नज़र को केन्द्रित करने की शक्ति प्रदान करता है । आंख के दोष और रोग स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबों को केन्द्रित करने की और उन्हें रंग देने की आंख की क्षमताओं में हस्तक्षेप करते हैं । दोष की प्रकृति के लिहाज़ से अंततः बने प्रतिबिंब के बिगड़े हुए होने से लेकर अंधापन तक हो सकता है । इन्हें 'अंधकार' या अंधेपन का स्तर कहा जा सकता है ।

निष्कर्ष

कुरआन मजीद की कुछ आयतें प्रकाश, आंखें, दृष्टि आदि विषयों का अल्लाह तआला की सृजित चीज़ों की हैसियत से परिचय कराती हैं । इन आयतों में आम आदमी के लिए प्रत्येक काल में बोधगम्य शब्द प्रयुक्त किये गये हैं । ये आयतें प्रश्न भी उठाती हैं और कुछ वैज्ञानिक वास्तविकताओं एवं नैतिक सच्चाइयों के बारे में अल्लाह की निशानियों या सन्देशों को हिदायत के तौर पर प्रस्तुत करती हैं । भड़कायी हुई आग के बारे में अवतरित आयत 2:17 वैज्ञानिक ज्ञान व मीमांसा के ज़रिये हमें किसी स्रोत से निकलने वाले प्रकाश और स्रोत के चतुर्दिक की अंधकारमय चीज़ों से विकिरित और विखंडित प्रकाश में अन्तर करने का अवसर प्रदान करती हैं । जब प्रकाश के स्रोत को बुझा दिया जाता है तो देखने वालों को इन चीज़ों के बारे में अंधेरा या अंधेपन के विभिन्न स्तरों में देखते हुए चतुर्दिक की चीज़ों का दिखायी देना जाता रहता है । इस आयत में एक ओर प्रकाश को स्वयं से निकालने वाले स्रोत प्रकाश और दूसरी ओर अंधेरी चीज़ों जो प्रकाश को केवल विकिरित कर सकती हैं, में अन्तर किया गया है । दृष्टि में मानवीय आंख और प्रकाश की भूमिकाओं की निशानदेही करने वाले उपर्युक्त वाक्य में 'जुलुमात' (अंधकारों) के बारे में कुछ वैज्ञानिक व्याख्याएं प्रस्तुत की गयी हैं ।

1961 ई॰ में अंतरिक्ष उड़ानों के प्रारंभ के समय से अंतरिक्ष यात्रियों और चित्रों ने धरती और अंतरिक्ष के दृश्यों का विवरण प्रदान किया है । धरती के वायुमंडल के ऊपर से आकाश नीले रंग का दिखायी नहीं पड़ता । धरती पर से आकाश का ऐसा दिखायी पड़ना वायुमंडल की परतों में सूर्य के प्रकाश के अवशोषित होने एवं वायुमंडल के कणों के द्वारा प्रकाश के बिखराव के कारण है ।

अंतरिक्ष में मौजूद इन्सान को नीचे धरती की ओर का अंतरिक्ष भाग काले रंग की भांति एक काला आकाश दिखायी देता है, हालांकि उस समय सूर्य चमकता रहता है और सितारे भी नज़र आते रहते हैं । साथ ही धरती एक नीचे परिवेश में घिरी हुई नज़र आती है । आकाश, चन्द्रमा पर से भी दिन में देखा जाए तो काला दिखायी पड़ता है । ऐसा इसलिए होता है कि अंतरिक्ष में धरती के वायुमंडल की भांति सूर्य के प्रकाश को बिखेरने वाले पदार्थ के कण नहीं होते, जो आंखों के लिए नीले आकाश की चिर-परिचित कल्पना पैदा करते हैं । जैसा कि कुरआन में बयान किया गया है, जिन लोगों को इन वैज्ञानिक व्याख्याओं का ज्ञान न हो उन्हें यदि वायुमंडल और अंतरिक्ष में भेज दिया जाए, तो वहां के दृश्य देखकर वे निश्चय ही अपनी दृष्टि और इंद्रिय पर सन्देह करने लगेंगे । **अनु॰ डॉ॰ जबीं अहमद**

सन्दर्भ

पहले की अवतरित अल्लाह की किताबें तौरात और इंजील (कुरआन, 5:44,46) भी नूर (प्रकाश) थीं । अल-कुरआन, 'अल-किताब' और उसके सन्देशों का बार-बार एक नूर (प्रकाश) की हैसियत से हवाला दिया गया है जो मानव जाति को अंधकारों से निकालकर प्रकाश में ले आता है (कुरआन, 5:15, 7:157, 14:1,5 39:22, 57:9, 64:8 आदि)। यद्यपि यह अध्याय दृष्टि (Optics) मानवीय आंख की भौतिक संरचना (Physiology) से और दृष्टि समेत प्रकाश से भौतिकशास्त्र को एक इस्लामी ज्ञान की हैसियत से बहस करता है ।

World Book Encyclopedia 1984 में देखिए "Eye", "Light", "Space Travel" शीर्षक ।

मारूफ़
शू पैलेस
जी॰ई॰ रोड़, बस स्टैंड, बी॰एम॰वाई॰
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एस॰के॰ इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788 6535786

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इंन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ सिमोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं.

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

अमजदी बेगम

(बेगम मौलाना मुहम्मद अली)

❖ डॉ॰ आबिदा समीउद्दीन

अमजदी बेगम प्रख्यात स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मौलाना मुहम्मद अली जौहर की पत्नी थीं । उनका संबंध रामपुर के एक हैसियतदार एवं प्रतिष्ठित परिवार से था । घर में दीनी और मज़हबी किताबों का भंडार होने के कारण मज़हब का अध्ययन बहुत गहरा था । मौलाना मुहम्मद अली जौहर से शादी के बाद सरासर उन्हीं के रंग में रंग गयीं । स्वभाव अत्यधिक संतोष भाव से भरा हुआ था । मौलाना की फ़क़ीराना और क़लन्दराना ज़िन्दगी भी अपनायी और राजनीतिक विचार भी ।

ब्रिटिश साम्राज्य से टकराते रहने के कारण परिवार की आर्थिक विपदा का बी अम्मा (मुहम्मद अली की मां) के उस पत्र से भली-भांति अंदाज़ा लगाया जा सकता है जो उन्होंने मौलाना की नज़रबन्दी के दौरान हफ़्ता नज़रबंदी इस्लाम के सिलसिले में मिस्टर ताजुद्दीन को लिखा था ।

''हमारे नज़रबन्दों में एक भी ऐसा नहीं जिसकी माली (आर्थिक) हालत इस नज़रबंदी में ख़राब न हो गयी हो जिसको बार-बार की याददेहानी के बावजूद हुकूमत की तरफ़ से खाने-पीने की चीज़ों के लिए भी काफ़ी रक़म मिलती हो, अलावा रोज़मर्रा के ज़रूरी ख़र्चों के माली नुक़सानात का मुआवज़ा तो हुकूमत ने एक को भी नहीं दिया । शौकत और मुहम्मद की हज़ारों की आमदनी यकबारगी रुक गयी और घर से पन्द्रह हज़ार रुपये सालाना तीन बरस से देना पड़ रहा है । एक क़र्ज़ देने वाले ने शौकत पर बारह-तेरह हज़ार की नालिश कर दी है और दूसरा एक सिख नालिश की नोटिस दे चुका है । रुई का कारख़ाना तीन साल से बन्द पड़ा है और उसको चलाने के लिए रामपुर आरज़ी तौर पर भी जाने की इजाज़त नहीं मिलती । मुहम्मद का प्रेस भी बंद है । हज़ारों का ख़ानगी और दफ़्तर का सामान पचीस तीस हज़ार रुपये का बाक़ी है । वह ज़ंग, गर्द और कीड़ों की नज्र (भेंट) हो रहा है...नज़रबन्दों में शायद सबसे बड़ी रक़म हुकूमत शौकत और मुहम्मद को देती है । मगर हुकूमत ने ख़ुद अपने तर्ज़े अमल से यह साबित कर दिया है कि जो रक़म एक अर्से तक उन्हें देती रही वह उनकी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को आधा भी पूरा न कर सकती थी ।''

(अख़बार जम्हूर, कलकत्ता, एडिटर क़ाज़ी अब्दुल ग़फ़्फ़ार 15 जुलाई 1918 ई॰)

मौलाना मुहम्मद अली और अमजदी बेगम के अति सुन्दर आपसी संबंधों के चलते ही मौलाना का संघर्ष पूर्ण लंबा जीवन कारावास की विपदा हंसी-ख़ुशी झेलते गुज़र गया मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी लिखते हैं ।

''मियां बीवी में मेल-मुहब्बत शुरू ही से था, आख़िर उम्र में तो कहना चाहिए इश्क़ की कैफ़ियत थी । इश्क़ ऐसा नहीं जिसमें शोरिश सोज़िश हो और जो तमामतर जवानी की पैदावार होता है, बल्कि ऐसा इश्क़ जिसमें ठंडक और सुकून होता है और अरबी में उसके लिए लफ़्ज़ उन्स होता है ।

(अब्दुल माजिद दरियाबादी-मुहम्मद अली की ज़ाती डायरी के चन्द अवराक़, पेज-369)

मौलाना ने उनकी क़ौमी ज़िन्दगी की शुरुआत के बारे में लिखा है, ''अमजदी बेगम हर सम्मेलन, हर यात्रा, ख़िलाफ़त कांफ्रेंस में मौलाना के साथ शरीक रहतीं और बराबर सम्मेलनों तथा दूसरी कार्रवाइयों में भाग लेतीं । उन्होंने ऑल इंडिया नेशनल कांग्रेस की वर्किंग कमेटी में जिसके सम्मेलन 24,25,27,28 दिसम्बर 1921 ई॰ अहमदाबाद में हुए यू॰पी॰ के प्रतिनिधि की हैसियत से शिर्कत की ।''

(A.M.S. G. Zaidi, Encyclopaedia of INC Vol. VIII, 1921-24, p. 66)

गांधी जी के अख़बार, ''यंग इंडिया के अध्ययन से यह बात भली-भांति स्पष्ट हो जाती है कि कांग्रेस का सत्याग्रह आन्दोलन और ख़िलाफ़त फंड के लिए बी अम्मा और अमजदी बेगम ने अपने स्रोतों से करोड़ों का चन्दा जम

किया । उन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन जिसे ख़िलाफ़त कमेटी और कांग्रेस ने संयुक्त रूप से मंज़ूर किया था इसके उद्देश्य अंग्रेज़ी सामग्रियों का बायकाट, शराब की दूकानों पर पिकटिंग, फ़ौजी भरती हराम, अंग्रेज़ी नौकरियों से इस्तीफ़ा को सफल बनाने में असाधारण प्रभावित सिद्ध हुआ । गांधी जी को जनता से परिपचित कराने और उनके दूर-दराज़ के ख़र्चों का बोझ उठाने में ख़िलाफ़त आन्दोलन के रज़ाकारों और मौलाना मुहम्मद अली के परिवार की औरतों द्वारा एकत्र किये गये चन्दों की महत्वपूर्ण भूमिका को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता । इसी कारण जैसा कि पहले बताया जा चुका है, मेल्कम हेली मेम्बर होम ने लेजिस्लेटिव असेम्बली में मौलाना मुहम्मद अली के अपराध गिनाते हुए कहा कि इनके घर की औरतें तक चन्दा जमा करती और विद्रोह करती रहती हैं ।''

अमजदी बेगम की क़ौमी ज़िन्दगी की शुरुआत के बारे में मौलाना मुहम्मद अली ने लिखा है कि, ''उनके अनगिनत जेल के सफ़र इस बात के सुबूत बने कि आज़ादी के जो कुछ क्षण उनकी संगत में गुज़रें उन्हें मूल्यवान जान कर एक क्षण भी अकारथ न किया जाए ।'' मैं कह सकता हूं कि उसने काफ़ी लंबा सफ़र किया है और पब्लिक के ख़र्च पर किया है क्योंकि हुआ यह है कि जब उसने मेरे साथ सफ़र करना शुरू किया तो उसे मेरा ख़्वाहमख़्वाह का परिशिष्ट बनना अप्रिय गुज़रा । और चूंकि वह मुझ से कहीं अधिक अच्छा हिसाब-किताब रखने वाली थीं और कम से कम अपने औरतों के ग्रुप में निस्संदेह वे अच्छी प्रबंधिका भी थीं इसलिए उन्होंने भारतीय नारियों में बड़ी सक्रिया के साथ प्रोपगैंडा करना शुरू कर दिया और ख़िलाफ़त फंड में इतनी रक़में जमा कर ली कि प्रबंधकों ने उन्हें अपनी ओर से सफ़र करने का अनुरोध किया । अत: हमने कई माह इस तरह एक जगह से दूसरी जगह और एक सूबे से दूसरे सूबे में सफ़र करते इकट्ठे गुज़ारे । हम महात्मा गांधी और अपने साथी कार्यकर्ताओं तथा सेक्रेट्रियों की एक छोटी-सी जमाअत के साथ सफ़र कर रहे थे कि 14 सितम्बर 1921 को वाल्टेर रेलवे स्टेशन पर जबकि हम मद्रास और मालाबार के उपद्रवग्रस्त इलाक़े की तरफ़ जा रहे थे, मुझे गिरफ़्तार कर लिया गया । उस समय हम फिर एक-दूसरे से अलग हो गये । लेकिन यह बात मेरे लिए संतोषप्रद है जिसमें कि कुछ मेरा आश्चर्य एवं हैरत भी शामिल है कि अब मेरी पत्नी भी सफ़र कर रही है और वह भी पब्लिक ख़र्च पर ।''

इस गिरफ़्तारी की कहानी का गांधी जी ने विभिन्न अवसरों पर उल्लेख किया है और अमजदी बेगम की संकल्पशक्ति की भी जगह-जगह प्रशंसा की है ।

22 सितम्बर 1921 ई० के यंग इंडिया में गांधी जी ने उस गिरफ़्तारी का विस्तृत वर्णन करते हुए लिखा, ''मौलाना मुहम्मद अली की गिरफ़्तारी उस समय हुई जब हम मद्रास के लिए सफ़र में थे । मैं ट्रेन से ही इन पंक्तियों को लिख रहा हूं । वाल्टेर स्टेशन पर ट्रेन 25 मिनट से भी अधिक देर तक रुकी । मौलाना मुहम्मद अली और मैं ट्रेन से उतर कर एक सभा को संबोधित करने कुछ क़दम चले ही थे कि मैंने मौलाना को ज़ोर-ज़ोर से वह नोटिस पढ़ते हुए सुना जो उन्हें उसी समय दिया गया था । मैं उनसे कुछ क़दम आगे था । इस गिरफ़्तारी के लिए दो गोरे और आधा दर्जन भारतीय सिपाहियों की पार्टी तैनात की गयी थी । अफ़सर इंचार्ज मौलाना को वह नोटिस समाप्त करने से पहले ही बाजू पकड़ कर ले गया । उन्होंने मुस्कुराते हुए हाथ हिला कर ख़ुदा हाफ़िज़ कहा, मैं मतलब समझ गया । अब इस ध्वज को अकेले ही ऊंचा रखना है । ईश्वर मुझे उस साथी के मिशन को पूरा करने की क्षमता प्रदान करे जिसके साथ काम करना मेरे लिए गर्व की बात थी । मैंने सभा को संबोधित किया और जनता को शांत रहने तथा कांग्रेस का प्रोग्राम सफल बनाने पर उभारा । बाद में मुड़ कर मैं उस जगह पर गया जहां मौलाना को हिरासत में रखा गया था और उनसे मिलने की अनुमति चाही, जवाब मिला कि केवल उनकी बेगम और सेक्रेट्री को अनुमति है ।''

(Collected works of Mahatma Gandhi Ministry of Information Govt. of India, Vol. XXI, p.176)

इसी सिलसिले में 25 सितम्बर 1921 ई० के 'फ़ौजियों' में भी अमजदी बेगम के ज़बरदस्त सब्र, धैर्य और त्याग भाव की प्रशंसा में उन्होंने लिखा–

''मुझे बेगम साहिबा मुहम्मद अली के साहस पर असाधारण आश्चर्य है जब वे मौलाना से मिल कर वाल्टेर स्टेशन पर वापस हुईं तो मैंने उनसे पूछा क्या आपके मन में किसी प्रकार का कोई भय तो नहीं ? उन्होंने तुरंत उत्तर दिया, कदापि नहीं'', मेरे पति ने अपना दायित्व पूरा करने से अधिक कुछ नहीं किया । इस गिरफ्तारी के बाद भी वे उसी साहस और हिम्मत के साथ मेरे साथ सफ़र करती

रही । ...नक़ाब पहने वे ज़नाने और मर्दाने सभी सभाओं में शिर्कत करती है और छोटा-सा भाषण भी करती हैं जिसका असर सीधे जनता के दिलों पर होता है । उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति से खादी पहनने, चर्ख़ा कातने और मुसलमानों से समरना फंड में चंदा देने की अपील भी की है । कुछ ही समय पहले उनका जीवन एक सुख-सुविधा का जीवन, सुन्दर एवं कोमल परिधान उनका पसन्दीदा पहनावा था किन्तु अब वे मोटी खादी का हरा नक़ाब पहनती हैं जबकि एक मुस्लिम महिला को अपनी हिन्दू बहन की तुलना में कपड़े भी अधिक पहनने होते हैं और बेगम साहिबा का शरीर भी कुछ हल्का-फुल्का नहीं है । किन्तु वे इन सभी कष्टों को देश और धर्म की ख़ातिर हंसी-खुशी सहन कर रही हैं । मद्रास में मैंने अनुभव किया कि मुस्लिम महिलाओं के सफ़ेद मोटे पहनावे में एक तरह की पाकीज़गी और श्रद्धा झलकती है । हिन्दू महिलाओं के रंग-बिरंगे परिधान मुझे मौजूदा हालात में पसन्द नहीं आये ।'' गांधीजी

(उक्त, पृ॰205)

राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय महिलाओं की सेवाओं के उल्लेख में 29 नवम्बर 1921 ई॰ के यंग इंडिया में गांधी जी ने अमजदी बेगम के लिए ''एक साहसी महिला'' के शीर्षक से विशेष रूप से लिखा :

''बेगम मुहम्मद अली के साथ काम करते हुए मुझे जो अनुभव हुए हैं मैं अपने पाठकों को भी उसमें शरीक करना चाहता हूं । पिछले वर्ष उन्होंने पब्लिक कामों में अपने पति की सहायता करना आरंभ किया । शुरुआत समरना फंड के लिए चंदा करने से हुई । तब से वे हमारे लंबे दुष्कर बिहार, असम, बंगाल के सफ़र में भी शरीक रहीं । उन्होंने महिलाओं की सभाओं से भी संबोधन शुरू कर दिया है और मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि उनमें भाषण करने की योग्यता अपने साहसी पति से किसी भी तरह कम नहीं । उनके भाषण छोटे होने के बावजूद अत्यधिक प्रभावशाली होते हैं । मैं कह नहीं सकता कि वे अपने पति को भी कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक कहने की यह कला सिखा सकती हैं या नहीं ? उनकी सबसे बड़ी परीक्षा तथा उसमें सफल होने का समय उस समय आया जब उनके पति को स्टेशन पर उनसे छीन लिया गया । मैंने उन्हें उस समय देखा है जब वे उस कमरे से निकलीं जहां उनके पति को हिरासत में रखा गया था । वे स्टेशन की ओर जमे हुए क़दमों से चल रही थीं और जब मैंने उनसे पूछा कि क्या वे अपने पति की गिरफ़्तारी के कारण खुश है ? उनका शीघ्र उत्तर था निश्चय ही, वे अपने मुल्क और मिल्लत की ख़ातिर जेल गये हैं'' हमने अपना मद्रास का सफ़र जारी रखा । समुद्र के तट पर ज़बरदस्त जनसभा हुई । श्रोतागण उस समय तक उनसे परिचित नहीं थे । उन्होंने ऊंची आवाज़ में बिना किसी लड़खड़ाहट के सुन्दर हिन्दुस्तानी भाषा में जनता को संबोधित किया और मैं यह महसूस किये बग़ैर न रह सका कि वे वास्तव में साहसी पति की साहसी पत्नी है ।'' (उक्त, पृ॰-218,219)

जेल के कष्टदायक जीवन और प्रिय जीवन साथी से जुदाई के क्षण में मौलाना के लिए क़ौमी ज़िन्दगी में अमजदी

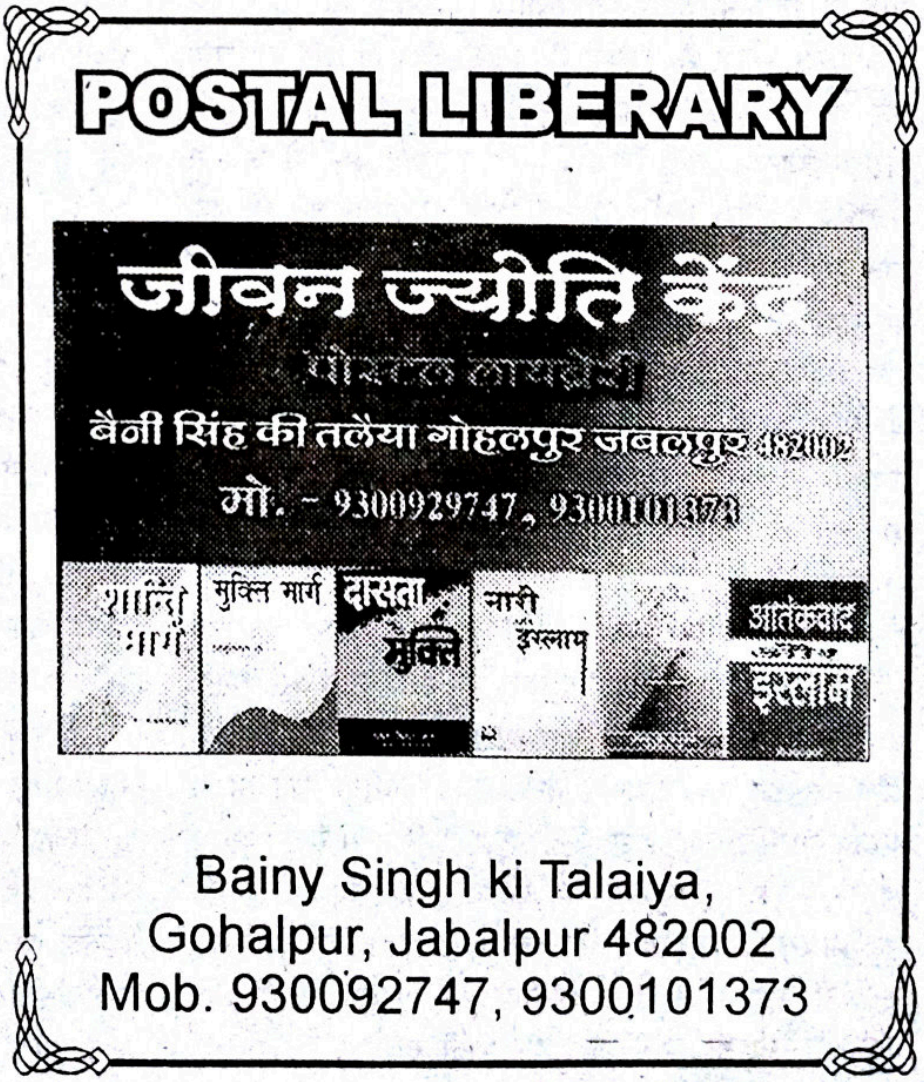

बेगम की शिर्कत और आज़माइश में उनका जमा रहना न केवल अत्यधिक हर्षदायक था बल्कि साहस और दृढ़ संकल्प का उत्प्रेरक भी था ।

हम में और तुम में हुए महबस-ओ ज़िन्दां हाइल
आओ रूया में करें अपनी तमन्ना हासिल ।

''कराची जेल से 18 अक्तूबर 1921 ई० को गांधी जी के नाम एक पत्र में मौलाना मुहम्मद अली ने उन्हें शुक्रिये के तौर पर लिखा :

''प्यारे बापू ! एक अर्से से तबीयत का तक़ाज़ा था कि अब आपको कुछ लिखूं लेकिन कई वजहों से ताख़ीर होती रही लेकिन जब अख़बारों में आपकी क़लम से निकली हुई कुछ तहरीरें मेरी बीवी की तारीफ़ में उन कार्रवाइयों के मुताल्लिक़ जो वे वाल्टेर से मेरी गिरफ़्तारी के बाद करती रही हैं, पढ़ी ! अब तो मुझे मजबूरन आपको अरीज़ा लिखना पड़ा । ग़ालिबन मैंने आप से एक बार कहा था कि हम मियां-बीवी में शादी से पहले ही इश्क़ और मुहब्बत की तड़प पैदा हो गयी थी और यह हिन्दुस्तान में एक ग़ैर मामूली बात है लेकिन हमारी पारिवारिक ज़िन्दगी के बाद हम एक-दूसरे से हर साल जुदा रहे । इस जुदाई ने मेरी अहलिया को पहले से भी ज़्यादा मेरे लिए महबूब और अज़ीज़ शरीके-ज़िन्दगी बना दिया । और गुज़िश्ता अर्से में जब मैं नज़रबंद था उस वक़्त जो राह उसने इख़्तियार की थी उस वक़्त से 1919 ई० तक पुरख़तर ज़िन्दगी में थी । लेकिन हक़ीक़त तो यह है कि वह मेरी नज़रों में जिस क़दर अज़ीज़ और महबूब थी उससे पहले वह मेरी नज़रों में आधी भी न थी । वह रेलवे पुलिस स्टेशन में दाख़िल हुई और निहायत फ़राख़दिली से मुझ से कहा-''हरासां न होना, मेरी और मेरी बच्चियों की फ़िक्र न करना । मुझे अलविदा कहकर रुख़्सत हो गयी और निहायत इस्तिक़लाल के साथ गाड़ी में सवार होकर चली गयी ।...अब आप ने जो कुछ हमारी वकालत और तारीफ़ के बारे में तहरीर फ़रमाया है उनमें सबसे ज़्यादा मुसर्रतबख़्श मेरे लिए यह बात थी कि आप ने मेरी अज़ीज़ और जांबाज़ अहलिया (पत्नी) की तारीफ़ की है । हक़ीक़तन मैं इस क़दर मुतास्सिर हुआ हूं कि इस रश्क-अंगेज़ तारीफ़ का भी मैं ख़याल नहीं करता । मुझे तवक़्क़ो है कि यह आज़माइशी इम्तिहान भी जल्द ख़त्म हो जाएगा और वह जल्द से जल्द अपना काम आज़ादी से जारी रख सकेगी और आप से ऐसी ही रश्कअंगेज़ दाद लेती रहेगी ।''

(रईस अहमद जाफ़री अली ब्रादरान, पी० 550)

27 नवम्बर 1921 ई० के यंग इंडिया में इस पत्र को प्रकाशित करते हुए गांधी जी ने नोट लिखा था कि-इस पत्र के प्रकाशन के कई कारण हैं उनमें से एक कारण यह भी है कि यह ऐसा दस्तावेज़ है जिसमें मौलाना के अन्दर का इन्सान पूरी तरह से देखा जा सकता है ।

(Collected works of Mahatma Gandhi op, p. 350)

वाल्टेर स्टेशन पर गिरफ़्तारी के समय अमजदी बेगम की दृढ़ता और साहसिक रवैये का प्रभाव कितना गहरा और मौलाना को इस पर कितना गर्व था, इसकी अभिव्यक्ति उन्होंने कराची जेल से ही लिखे गये बी अम्मा के नाम एक ख़त में खुलकर की है-

''मैं भी चालीस इक्तालिस साल की उम्र से, मेहमान दाख़िल घर पर आया करता हूं पहले बैतूल की क़ैद, फिर रिहाई होते ही इस क़ैद से ज़्यादा लंबा देश निकाला और अलीगढ़ बम्बई और हम सफ़री सब को मिला कर छह-सात महीने को छोड़ दिया जाए तो कहा जा सकता है कि जून 1919 ई० से आज तक का ज़माना अलाहदगी में ही बसर हुआ और 14 सितम्बर 1921 ई० को वाल्टेर के स्टेशन पर क़ैद की इब्तिदा का ख़याल किया जाए तो यही ग़नीमत है कि अमजदी ज़िन्दा है और इस दुनिया में भी मुलाक़ात का दरवाज़ा अभी बंद नहीं हुआ है वरना मुन्नी ग़रीब किस-किस के बच्चों को पालतीं । आप मेरा यह ख़त अमजदी को भी दिखा दें मेरे कल के रुख़सती अल्फ़ाज़ उसे याद दिला दें कि ख़ुदा पर भरोसा रखो और वही वाल्टेर स्टेशन का सिपाहियाना रवैया जो अब तक क़ायम रखा है क़ायम रखो, जिसने मुझे मुत्मइन कर दिया था कि ख़ुदा की मदद शामिल है तो यह औरत मुसलमान और हिन्दुस्तानी भाइयों के सामने किसी बुज़दिली के इज़हार से न ख़ुद शर्मिन्दा होगी और न अपने बहादुर भाई और अपने शेर दिल हज़ारों मरने वालों को शर्मिन्दा करेगी ।'' (अली बिरादरान, पी० 549)

''मुक़दमा कराची के दौरान अमजदी बेगम कराची चली गयी थीं । मौलाना को सज़ा हो जाने के बाद वे वापस अलीगढ़ आयीं । यूनीवर्सिटी तलबा ने उनके स्वागत में एक जलसा मुहम्मद अली हाल में किया । निहायत दुखे दिल से अच्छी ज़बान से आप ने एक दिलदोज़ तक़रीर की । यूनीवर्सिटी के तलबा ज़ारो-क़तार रो रहे थे, वे तो उनको क्या ढारस देते उल्टे बेगम साहिबा ही उनको ढारस दे रही

थीं। आप ने फ़रमाया बच्चो ! बेशक मौलाना की सज़ायाबी से मैं सख़्त मग़्मूम (दुखी) हूं लेकिन खुदावन्द कुद्दूस पर बेहद भरोसा रखती हूं। आदमी की ज़िन्दगी और मौत का कोई भरोसा नहीं है। ठोकर लगी और आदमी मर जाता है। फांस लगती है और आदमी की ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है यह तो दो बरस की बात है। मैं तो यहां तुम्हारे साथ हूं। अल्लाह चाहेगा तो ये दिन भी निकल जाएंगे।''

(सैयद मुहम्मद हादी-अली बिरादरान, पी॰ 115)

मौलाना मुहम्मद अली जब तक जेल में रहे उनका काम जेल से बाहर उनकी मां और पत्नी अंजाम देती रहीं, जैसा कि 1 दिसम्बर 1926 ई॰ के 'हमदर्द' में मौलाना ने लिखा है–

''हमारे जेल में दाख़िल होते ही हम पर बाहर की दुनिया का दरवाज़ा बन्द हो गया तो मेरी मां ने एक हाथ में तस्बीह और दूसरे में बुढ़ापे की लाठी को लिया, नक़ाब उलट कर वही काम करना शुरू किया जो हम किया करते थे। मगर जिसे हुकूमत ने ख़तरनाक समझ कर हमें जेल में डाल कर हम से छुड़ा दिया था। मेरी अहलिया (पत्नी) ने इससे पहले ही औरतों में, जिनका ज़ौक़ और शौक़ मर्दों से कहीं बढ़कर था इस काम को शुरू किया था और वे मेरी रफ़ीक़ेकार (सहचर) और रफ़ीक़े-सफ़र बन गयी थीं।'' और यह साथ ज़िन्दगी के आख़िरी सांस तक बाक़ी रहा।

1930 ई॰ में मौलाना मुहम्मद अली ज़िन्दगी और मौत से जूझ रहे थे। एक आंख नाकारा हो चुकी थी, दूसरी आंख की दृष्टि भी जवाब दे रही थी। गठिया का रोग भी हो चला था। मधुमेह के हमले बड़े ज़ोरों से हो रहे थे। डॉक्टर पूरी तरह से आराम और इलाज का मशविरा दे रहे थे लेकिन मुजाहिद था कि मैदाने जंग के लिए मचला हुआ था। इसी सख़्त बीमारी की हालत में गोलमेज़ कांफ्रेंस में शिरकत के उद्देश्य से वे लंदन रवाना हुए। हर बार की तरह इस बार भी अमजदी बेगम इस आख़िरी सफ़र में भी साथ-साथ रहीं। इस सफ़र के बारे में मौलाना ने कहा था, ''मैं समझता हूं कि मेरा मज़हबी फ़र्ज़ है कि इस कांफ्रेंस में शरीक हूं और वहां सुल्ताने जाबिर और रिआया-ए-जाबिर दोनों के सामने हक़ कहकर अफ़ज़ल जिहाद करूं यहां तक कि इस काम में मर जाऊं, इसलिए क़र्ज़ दाम लेकर-भीख मांग कर, जिस तरह भी हो सके तीन-चार हज़ार दिरहम फ़राहम कर के अपनी अहलिया को साथ ले चलूंगा इसलिए कि वह ज़िन्दगी के सारे मरहलों और मंज़िलों में मेरी रफ़ीक़े सफ़र रही हैं।''

(मुहम्मद अली-ज़ाती डायरी के चंद अवराक़, Vol. II, p. 156)

मौलाना की कड़ी बीमारी और मौत के बीच के क्षणों में, अमजदी बेगम ने जो पत्र हिन्दुस्तान अपनी बेटी के नाम लिखे वे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज़ हैं। डॉक्टरों के बहुत कहने के बावजूद मुल्क और मिल्लत की ख़ातिर मृत्यु शैया पर भी मौलाना मुहम्मद अली की आख़िरी सांस तक निरंतर काम किये जाने की लगन इन पत्रों के आईने में अच्छी तरह देखी जा सकती है। उनके अंतिम दिनों की व्यस्तताओं का विवरण का एकमात्र स्रोत भी यही पत्र हैं, जैसे :

492, मरटन रोट

S.W.I. 11 नवम्बर 1930 ई॰

प्यारी ज़ुहरा...तुम्हारे अब्बा की तबीयत फिर तीन रोज़ से ख़राब है। क्योंकि यहां आने के बाद लोगों से मिलना-जुलना रहता है। कमज़ोर बहुत हो गये हैं इस वजह से थक जाते हैं। 17 से कांफ्रेंस शुरू है वहां जाना होता है। सुबह दस बजे वे वहां जाते हैं। तुम्हारे अब्बा की बीमारी ने मुझे थका दिया है। चूंकि कोई आदमी नहीं काम करने के लिए इसलिए थक जाती हूं। ख़त लिखने की भी फुर्सत नहीं मिलती.....

तुम्हारी वालिदा अमजदी

(रईस अहमद जाफ़री-अली बिरादरान, पी॰ 614)

हाइड पार्क होटल, नाइट्स ब्रिज लंदन

27 नवम्बर 1930 ई॰

S.W.I.

...तुम्हारे अब्बा की तबीयत अच्छी है लेकिन पैरों और रानों पर वरम बहुत ज़्यादा है इस वजह से दो रोज़ से पलंग पर हैं, आराम कर रहे हैं। (उक्त, पृ॰- 615)

इन पत्रों में अधिकतर लोगों से मुलाक़ात का उल्लेख है जिसमें बेगम भोपाल महाराजा अलवर, महाराजा जाम, महाराजा और महारानी बड़ौदा के नाम ख़ास हैं।

हाई पार्क नाइट्स ब्रिज लंदन

14 दिसम्बर 1930 ई॰

S.W.I.

.....इस हफ़्ते तुम्हारे अब्बा पलंग पर लिख रहे हैं लेकिन

इस्लामी तालीमात

❖ इस्लाम-दर्शन	डॉ० गणेशदत्त सारस्वत, पी०एच०डी०	40.00
❖ इस्लाम धर्म	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	42.00
❖ इस्लाम भविष्य की आशा	सय्यद .क़ुत्ब	24.00
❖ इस्लाम में औरत का स्थान और मुस्लिम पर्सनल लॉ	प्रो० उमर हयात खाँ ग़ौरी	55.00
❖ इस्लाम में उदारता	मतीन तारिक़ बाग़पती	40.00
❖ इस्लाम में जनसेवा	मौलाना मलिक हबीबुल्लाह क़ासमी	10.00
❖ इस्लाम में पाकी और सफाई	नसीम ग़ाज़ी फलाही	20.00
❖ इस्लाम में पति पत्नी के अधिकार	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	50.00
❖ इस्लाम में मानव-अधिकार	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
❖ इस्लाम संदेहों के घेरे में	मुहम्मद .क़ुत्ब	110.00
❖ इस्लामी अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त और उद्देश्य	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	6.00
❖ इस्लामी जिहाद की वास्तविकता	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	15.00
❖ इस्लामी ज़िन्दगी	नसरुल्लाह ख़ां अज़ीज़	50.00
❖ इस्लामी तालीमात	मौलाना सुलैमान क़ासमी	35.00
❖ इस्लामी शरीअत	माइल ख़ैराबादी	45.00
❖ इस्लामी संदेश और मुसलमानों की ज़िम्मेदारी		10.00
❖ उदारता का सही अर्थ	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	5.00
❖ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा(रज़ि)	माइल ख़ैराबादी	45.00
❖ ऊंच-नीच, छूत-छात	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	5.00
❖ एक इंसान दो किरदार	माइल ख़ैराबादी	7.00
❖ एक ईश्वर की कल्पना	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां	26.00
❖ एकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	30.00

Markazi Maktaba Islami Publishers

D-304, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Ph: 26971652, 26954341, 26946447 (D) • Fax: 26917858

E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www. mmipublishers.net

जब से यहां आए हैं लोग बहुत आते रहते हैं और टेलीफ़ोन पर भी बातें करते रहते हैं । ज़्यादा आराम नहीं करते जैसा कि उनकी आदत है । अब चार-पांच रोज़ से उस डॉक्टर का इलाज शुरू किया है जिसको महाराजा अलवर ने भेजा था ।.....

.....कल तुम्हारे अब्बा का फ़ाक़ा था, सूजन है, इसकी वजह से डॉक्टर पलंग से उठने नहीं देते । वैसे तबीयत अच्छी है । तुम दुआ किये जाओ और परेशान न हुआ करो । जिस काम के लिए आये बीमारी की हालत में उसमें कामयाबी हो और हम सब ज़िन्दा और सलामत खुशी-खुशी अपने घर जाएं ।'' (उक्त, पृ०- 616-618)

और वह मिशन क्या था जिसकी ख़ातिर ज़िन्दगी और मौत की कशमकश में भी वे ब्रिटिश साम्राज्य से संघर्षरत थे । मुल्क और मिल्लत की ख़ातिर । स्वराज और राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दू-मुस्लिम एकता ।

हाइ पार्क, नाइट्स बिज लन्दरन

26 दिसम्बर 1930 ई०

S.W.I.

प्यारी जुहरा दुआ ! तुम ज़िन्दा और सलामत और तन्दुरुस्त रहो । तुम पर जो अपने मां-बाप की वजह से परेशानी गुज़री होगी उसका मुझे भी अंदाज़ा है । लेकिन क्या किया जाए अख़बार वाले नहीं मानते, लिख देते हैं, मेरी राय नहीं थी । इस ख़त में दिल का दौरा पड़ने के बाद की तफ़सील और ख़ानदान की माली मुश्किलात का भी ज़िक्र है । तुम्हारे ख़ुतूत जिसमें तुमने रुपये का लिखा था, तुम्हारे अब्बा के नाम था । वह उनको नहीं दिखा सके । सिर्फ़ कह दिया कि जुहरा का ख़त आया है, वह ख़ैरियत से है तो रोने लगे कि अरे मेरी बेटी का नामालूम क्या हाल होगा । साहब ने जनवरी में भोपाल से चचा को ख़त लिख दिया था । अगर मेरा रुपया नहीं भी था तो क्या था । मेरा रुपया जब जमा होता था और बरसों रहा तो तमाम ख़ानदान के ख़र्च में आता था, और अब मुझे ज़रूरत है तो हज़ार नहीं, चार हज़ार नहीं, सिर्फ़ तीन-चार सौ रुपये का हमारा किसी को एतिबार नहीं । ...मैं यहां से रोज़ देती बल्कि साहब कह रहे थे, मैंने बीमारी की वजह से नहीं भेजा कि हम परदेस में हैं, हम क्या करेंगे ।'' (उक्त, पृ०-620)

अमजदी बेगम का ख़त 9 जनवरी 1931 ई० का मौलाना के देहांत के बाद का है जिसमें अत्यधिक धैर्य एवं सहनशीलता के बावजूद एक मां ने बेटी के सामने अपना कलेजा निकाल कर रख दिया है ।

''प्यारी जुहरा, मैं ज़िन्दा हूं लेकिन मुर्दों से बदतर मेरी क़िस्मत में क्या लिखा है कि अब तक ज़िन्दा रही । जिसकी दुनिया को ज़रूरत थी वे मुझ को और तुम को तन्हा छोड़ कर चले गये । इसी का हर वक़्त ख़ौफ़ रहता था, वह सामने आकर रहा । मेरी भी दुआ क़ुबूल नहीं हुई । उनका दिल ही हिन्दुस्तान जाने को नहीं चाहता था । जब कभी जाने का नाम आता तो कहते थे मैं अभी नहीं जाऊंगा, जब पूरा काम हो जाए, उसके बाद पैरिस जाऊंगा इलाज कराऊंगा और आ जाऊंगा ।

.....दो डॉक्टरों के साथ यहां के मिस्टर नहरा हैं । वे भी आये थे, मुझ से कहा कि चाय मंगाओ । चाय आयी, सब पीते रहे, मिस्टर नहरा ने कहा, आप ने इसका कुछ जवाब नहीं दिया कि बेगम साहिबा से झंडा उठवाना चाहते हैं, उन्होंने कहा भाई अभी हिन्दू मुसलमानों का मामला ठीक हो जाने दो । मैं ही था कि कनाडा में झंडा उठाया था और मैं ही हूंगा जो हिन्दुस्तान का झंडा उठाऊंगा । अभी इसका मौक़ा नहीं है...डॉक्टर मानक ने एक रोज़ कहा भाई मुहम्मद अली तुम्हारी हालत एक शीशे के ग्लास की तरह है, अगर उसको एहतियात से रखा जाए तो बरसों तक रह सकता है लेकिन अगर उसको ज़मीन पर मार दो तो टूट जाएगा, और तुम्हारा इलाज सिवाय इलाज के कुछ नहीं, मैं तो आप को यही राय देता हूं कि आप हिन्दुस्तान जल्द चले जाइए ।''

(उक्त, पृ०-622-625)

और अंततः शीशा टूट गया । आज़ादी का मुजाहिद लंदन इस संकल्प के साथ गया था कि गुलाम हिन्दुस्तान वापस नहीं होगा । ख़ुदा ने अपने प्यारे बन्दे की लाज रख ली । आख़िरी सांस आज़ाद लंदन में ही ली, और फ़िलिस्तीन में दफ़न किये गये ।

अमजदी बेगम के लिए यह दुख तो जान लेवा था । हालांकि लंदन से वापसी के बाद काफ़ी समय तक वे ख़िलाफ़त कमेटी से जुड़ी रहीं लेकिन अन्दर ही अन्दर घुलती रहीं और लगभग पन्द्रह वर्ष बाद आख़िरत के सफ़र पर रवाना हुईं अर्थात परलोक सिधार गयीं ।

आज़ाद हिन्दुस्तान में मौलाना मुहम्मद अली जौहर जैसे आज़ादी के दीवाने और शहीदे-क़ौम को कभी श्रद्धा सुमन अर्पित नहीं किये गये ।

निदाए यतीम (Voice of Orphan Girls')

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना, गया।

लड़कियों के लिए जदीद और मुकम्मल इस्लामी तर्ज़ तालीम से मुज़ैयन क़ौमी सतह का मेयारी रिहायशी (Residential) इदारा



इस्लामी भाइयों और बहनों ! अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहु

यह आपका जाना–पहचाना इदारा जो तक़रीबन 23 वर्षों से क़ौमी ख़िदमत अंजाम दे रहा है अलहम्दुलिल्लाह इदारा बहुत ही बुलन्द मक़ासिद के तहत बजूद में आया है और झोंपड़े से महल बनने की भरपूर कोशिश कर रहा है। आप हज़रात की खुसूसी तवज्जुहात से ही इदारा तमाम मुश्किलात के बावजूद दिन–बदिन तेजी से तरक्की की मंजिलें तय करता जा रहा है।

• इदारा 21 दिसम्बर 1986 ई० से ही सही इस्लामी खुतूत पर यतीम के साथ–साथ गरीब और गैर–यतीम तालिबात की तालीमी ख़िदमात अंजाम दे रहा है। • यहां की तालिबात को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनीवर्सिटी में आलमियत के साल अव्वल व दोम में आसानी से दाख़िला मिल जाता है। • शोबा–ए–हिफ़्ज की तालिबात को हिफ़्ज के साथ–साथ मैट्रिक (Matric) तक की तालीम दी जाती है। • **तालीमी साल (Educational Session)** : अप्रैल ता मार्च • तालीमी मराहिल • नर्सरी • इब्तिदाई • सानवी • आला • शोबा हिफ़्ज व तजवीद • Distance Education तादाद यतीम तालिबात–110 बैरूनी तालिबात् अपने खर्च पर दारूल अकामा (Boarding) में रह कर तालिम हासिल करें। करने वाली और बाहर से आकर जाने वाली इसके अलावा है। • तादाद असातज़ा, मुअल्लिमात और दूसरे मुलाज़मीन : 30 • सालाना ख़र्च (Annual Expenditure) : बारह लाख रूपये (Rs. 12,00,000) से ज़ायद (तामीरी ख़र्च को छोड़कर) • ज़रिया आमदनी : मुस्लिम अंवाम के चन्दे।

नोट : यतीम तालिबात का सारा ख़र्च : पैर के नाखुन से लेकर सर के बाल तक या कहिए एड़ी से लेकर चोटी तक इदारा पूरा करता है।

यतीमखाना की ख़बरें : • शोबा–ए–तालीम बालग़ान **(Adult Education)** : की बुनियाद 20 जून 2002 ई० को एक नवजवान शदीशुदा औरत से पडी थी। • शोबा–ए–हिफ़्ज **(Qura'n Memorization)** : 6 तालिबात ने दीनी वे असरी तालीम क साथ दरजा दहुम में पहुंचते –पहुंचते हिफ़्ज मुकम्मल कर लिया। वह हाफिज़े कुरआन क़रार दी गयीं और मैट्रिक पास करके घर चली गयीं और बाकी बच्चियां हिफ़्ज के साथ–साथ असरी तालीम भी हासिल कर रही हैं। • **बिहार स्कूल इगज़ामिनेशन बोर्ड** : गुज़िश्ता कई सालों से लगातार मैट्रिक (Matric) बोर्ड के इम्तिहान में यतीम व गैर–यतीम तालिबात का तक़रीबन सद फीसद रिजल्ट रहता है। नोट – 1992 से मैट्रिक की तालिम शुरू ओर 1993 से 2009 तक 58 यतीम बच्चियों और 32 गैर–यतीम बच्चियों ने मैट्रिक का इम्तिहान पास किया और एक यतीम बच्ची ने बेगम तारा रशीद शेरवानी एवार्ड भी हासिल किया था। • हजरत ख़ोद जंतुल कोबरा वोकेशनल सेन्टर (Vocational Centre) • अगस्त 2003 से बाज़ाबता तरीक़ा पर इदारा में कटाई व सिलाई का सेन्टर चल रहा है। अब पेंटिंग मेंहदी और फूल–पत्ती मशीन से सिखाने का कोर्स भी शुरू होने वाला है। • कटाई व सिलाई 6 बैच 70 तालिबात और तीन बैच ज़री वर्क्स में 42 तालिबात का, सबको सरकारी सनद तक़सीम की जा चुकी है। • जल्द ही कंप्यूटर की तालीम शुरू •साल 2008 से इदारा मे यतीम व गैर–यतीम तालिबात की इन्टरमेडिएट (ग्यारहवी Class XI) की तालीम शुरू। • **तालीमी फंड बैतुल माल बराए–तालीम (Bait-ul-Mal for Education)** : नादार व गरीब बच्चियों को फ़िलहाल छोटे पैमाने पर मुफ़्त तालीम देने का भी नज़्म है। कफाला स्कीम (Kafla Scheme) के तहत एक यतीम बच्ची की तालीम व तर्बियत व खुर्दो नोश पर सलाना आठ हज़ार रूपये (Rs. 8,000) खर्च आता है। आप भी एक यतीम बच्ची की कफालत का बार उठाकर कारेखैर मं शरीक हों। याद रखें, इदारा का कोई मुस्तकिल आमदनी का जरिया नहीं है। आपकी तरफ से जो ज़कात व अतियात की रक़में मिला करती हैं वह सिर्फ "यतीम बच्चियों" पर ही ख़र्च की जाती है। अतियात या दूसरे मद की रक़मों से हम स्कूल वगैरह चला रहे हैं।

• रमज़ानुल मुबारक का महीना पहुंचते–पहुंचते इदारा माली मुश्किलों में घिर जाता है। हर साल सालाना अख़राजात की तकमील अहले खैर और हमदर्द हजरात के कर्जों ही के जरिया पूरी की जाती है। इदारा के अज़ीम मंसूबों को पये तकमील तक पहुंचाने के लिए आपके तआवुन की सख्त जरूरत है। तआवुन की मुख़्तालिफ़ शक्लें हैं मसलन • ज़कात • अतियात • सदक़ात • पैदावार की जक़ात • दीनी कुतुब • एक यतीम बच्ची का सलाना ख़र्च, • वालदैन या अपने और रिश्तेदारों के नाम कमरा और हॉल बनवाना, • कर्ज की अदायगी और ज़मीन की ख़रीदारी • स्टाफ की माहाना तनख्वाह के लिए (Rs. 65,000) रूपयें • तामीरी कामों के लिए, ईंट, सीमेन्ट, छड़ और दीगर सामान या उरा की कीमत वगैरह।

याद रखें ! ज़कात अपके माल को पाक करती है। इदारा आपके फ़राख़दिलाना और मुख़लिसाना तआवुन का मुन्तजिर है।

● नोट : स्कूल और हॉस्टल में दाख़िला जारी ● नया तालीमी साल : माह अप्रैल से शुरू

चेक व ड्राफ़्ट पर केवल यह लिखें : "THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

बराए राबिता (ख़त, चेक व ड्राफ्ट और मनी आर्डर भेजने का पता)

General Secratary, THE GAYA MUSLIM GIRL'S ORPHANAGE

At : Kolowna, Po. - Cherki Distt. Gaya 824237 (Bihar) India

फोन : (0631) 2734437, मोबाइल : 9934480190

☎ **CORE BANKING A/C No. 310402010007752**

Bank A/c No. 7752, Union Bank of India. (Main Branch, GAYA)

इक़बाल अहमद ख़ान : *बानी–ए–इदारा व एज़ाज़ी जेनरल सेक्रेट्री*

email : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, website : www.gmgo.org

अपराधों के पीछे

''ग़ाज़ियाबाद का सनसनीख़ेज़ निठारी हत्याकांड का इतिहास क्या प्रतापगढ़ जनपद में भी दोहराया जा रहा है । निठारी कांड की तरह यहां भी मासूम बच्चे एक के बाद एक ग़ायब हो रहे हैं । ग़ायब हो रहे बच्चों के घरों में कोहराम मचा हुआ है । ग़ायब बच्चों के परिजन पुलिस और आला अधिकारियों के दफ़्तरों की ख़ाक छान रहे हैं । लेकिन निठारी कांड की तरह यहां भी पुलिस कानों में तेल डाल कर सोई हुई है । पिछले चार महीनों में जनपद मुख्यालय सहित अन्य इलाक़ों से कम से कम छह बच्चे ग़ायब हो चुके हैं । ख़ुद पुलिस के आंकड़ों के अनुसार तीन वर्ष में कुल 21 बच्चे ग़ायब हो चुके हैं पर पुलिस न तो इन बच्चों का पता लगा पायी है और न ही बच्चों के ग़ायब होने के सिलसिले पर लगाम लगा पायी ।'' (राष्ट्रीय सहारा, 8 मई 2010)

सच्चाई यह है कि सरकार और प्रशासन अपराधों पर नियंत्रण पाने के बजाय उन्हें बढ़ावा देने का ही काम करते हैं । कई बार तो प्रशासन अपराधियों की सीधे-सीधे पुश्त पनाही करता नज़र आता है । जहां तक निठारी कांड का सवाल है तो इस पर चलने वाली क़ानूनी कार्रवाई ने अपराधियों को बहुत हौसला दिया और वे प्रतापगढ़ में इसे दोहराने के लिए प्रोत्साहित हुए । हालांकि पुलिस-प्रशासन की ओर से पहले तो निठारी में हो रही लगातार बच्चों की हत्या को दबाये रखने की बहुत कोशिश की गयी, मगर कई दर्जन बच्चों की हत्या के बाद जब ''ग़लती'' से यह भेद खुल गया तो मीडिया सहित पूरा तंत्र इससे जुड़े लोगों को बचाने में जुट गया । इसी बीच अंग व्यापार और उससे कई सफ़ेदपोशों को जुड़े होने की ''अफ़वाह'' भी आयी मगर मीडिया ने उसे तुरंत ही ब्लैक आउट कर दिया । अंत में भी क्या हुआ कोली को ही बली का बकरा बनाकर सारे आरोप उस पर सिद्ध कर दिये गये । देश की जनता ने भी बड़े आराम से इस बात को स्वीकार कर लिया कि इतने बड़े पैमाने पर लगातार हो रही बच्चों की हत्या के पीछे कोई मोटिव नहीं था, बल्कि एक अमीर आदमी का नौकर यूं ही उनकी हत्या कर रहा था ।

बुराई की प्रेरणा

''भले ही आपको अटपटा लगे कि बच्चे नन्ही उम्र में झूठ बोलते हैं, बड़े होकर सफलता की बुलंदी चूमते हैं । जी हां, बच्चों में बचपन से ही सच्चाई एवं ईमानदारी का भाव भरने की सामान्य धारणा के विपरीत एक नये अध्ययन में दावा किया गया है कि जो बच्चे झूठ बोलते हैं, वे बड़े होकर सफल नागरिक बनते हैं । शोधकर्ताओं ने पाया है कि बचपन में झूठ बोलने वाले बच्चे बाद के जीवन में काफ़ी सफल होते हैं । वास्तव में दो वर्ष की आयु में झूठ बोलने की क्षमता, बच्चे के मस्तिष्क के तेज़ी से विकास करने का संकेत होता है और उसके सफल होने की संभावना काफ़ी बढ़ जाती है । अध्ययन में पाया गया है कि बच्चा जितने अच्छे तरीक़े से झूठ बोल रहा होगा, बाद के वर्षों में उसमें उतनी तेज़ी से अक़्ल आएगी ।'' (राष्ट्रीय सहारा, 18 मई 2010)

ऐसा लगता है कि बुराई के झंडावाहक जल्दी से जल्दी अपने एजेंडे को पूरे विश्व में लागू करना चाहते हैं । उन्हें इसकी इतनी जल्दी है कि नवजवान नस्ल में आ चुके बिगाड़ से उन्हें संतोष नहीं हो रहा है, वे बिल्कुल बचपन से ही मानवता को बिगड़ा हुआ देखना चाहते हैं । सच्चाई यह है कि प्रत्येक बच्चा वास्तविक मानव प्रकृति या मानव स्वभाव पर पैदा होता है । यानी ईश्वर प्रत्येक मनुष्य को सभी मानवीय गुणों से परिपूर्ण करके ही इस संसार में भेजता है । उसे अच्छाई और बुराई के बारे में पूरी तरह बता दिया जाता है और इनके परिणामों से भी अवगत कर दिया जाता है । इसके बाद जब वह बच्चा अपने आसपास के माहौल का एक अंग बन जाता है तो इससे प्रभावित होने लगता है । बुराइयों में स्वाभाविक रूप से अधिक आकर्षण होता है और हमारे समाज में बुराइयां हैं भी अधिक । अत: वह बच्चा एक-एक करके बुराइयां अपनाने लगता है और अपना स्वाभाविक मानवीय गुण एक-एक करके त्यागने लगता है, अर्थात वह अपनी प्रकृति से दूर होता जाता है । स्पष्ट है इसमें थोड़ा समय लगता है, लेकिन जो लोग बुराई को संसार में स्थापित करना चाहते हैं, वे आरंभ से ही बच्चों को बुराई के मार्ग पर लगाने के लिए उनके माता-पिता को प्रेरित कर रहे हैं । यह अध्ययन उसी की ओर एक क़दम है ।

INFORMATION BROCHURE



- Almanar Social Service a registered society. Bridging the gap between giving and recieving ends.
- Working in the field of education, health and employment generation.
- A unique charitable institution in Jharkhand.
- Projects in progress : Model primary school, Health centre, Mobile medical unit, Training centre for income enhancement for men and women.
- Last year activities : Blanket distribution to poor families, Iftaar arrangment for slum dwellers, Eid gifts, Gifts to flood affected victims, Blood donors group and comp, Eye checkup and catarach operation of needy.
- All these expenses are shared by people like you. Donate for education fund, Health fund income enhancement fund to be used for needy.

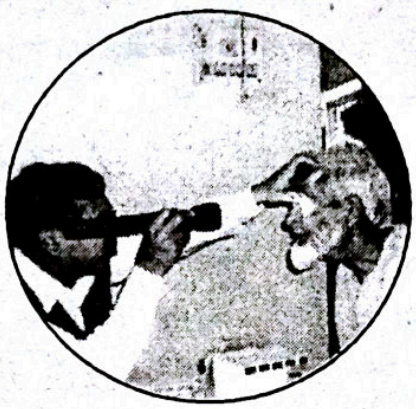

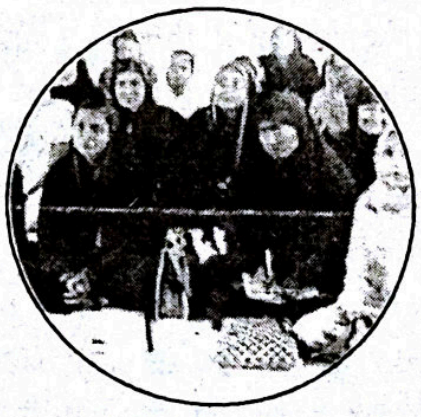

المنار سوشل سروس

Almanar Social Service

(An NGO registered societies Act XXI of 1860

President
Abul Arif
(M.Sc.)

Office : Jharna Road, Near Eidgaah Azadnagar, Jamshedpur-832110
Tel. : +91-657-6542806, +91-9279149654

Secretary
Haider Imam
(B.com. PG Dip)

Our Bank A/c No. 29601010007675
CANARA BANK
Kabir Memorial School, Zakir Nagar, Mango, Jamshedpur (Jharkhand)

दुष्यंत की ग़ज़लें

फिर धीरे-धीरे यहां का मौसम बदलने लगा है,
वातावरण सो रहा था अब आंख मलने लगा है ।

पिछले सफ़र की न पूछो, टूटा हुआ एक रथ है,
जो रुक गया था कहीं पर, फिर साथ चलने लगा है।

हमको पता भी नहीं था, वो आग ठंडी पड़ी थी,
जिस आग पर आज पानी सहसा उबलने लगा है ।

जो आदमी मर चुके थे, मौजूद हैं इस सभा में,
हर एक सच कल्पना से आगे निकलने लगा है ।

बातें बहुत हो रही हैं, मेरे-तुम्हारे विषय में,
जो रास्ते में खड़ा था पर्वत, पिघलने लगा है ।

कहीं पे धूप की चादर बिछाके बैठ गये,
कहीं पे शाम सिरहाने लगाके बैठ गये ।

जले जो रेत में तलवे तो हमने ये देखा,
बहुत से लोग वहीं छटपटाके बैठे गये ।

खड़े हुए थे अलावों की आंच लेने को,
सब अपनी-अपनी हथेली जलाके बैठ गये ।

दुकानदार तो मेले में लुट गये यारो !
तमाशबीन दुकानें लगाके बैठ गये ।

लहू-लुहान नज़ारों का ज़िक्र आया जो,
शरीफ़ लोग उठे, दूर जाके बैठ गये ।

ये सोचकर कि दरख़्तों में छांव होती है,
यहां बबूल के साये में आके बैठ गये ।

पेड़ न काटें, पेड़ लगाएं

आओ हम जंगल को बचाएं
पेड़ न काटें, पेड़ लगाएं
हर दिल में एहसास यह रख दें
बात यह हर इन्सां को बताएं
पेड़ न काटें, आग की ख़ातिर
ईंधन कोई और जलाएं
ख़तरे में हैं पेड़ हमारे
ख़तरे से हम उनको बचाएं
नयी नस्लों की ख़ातिर 'आदिल'
आओ हम भी पेड़ लगाएं ।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने वृक्षारोपण के लिए जनसामान्य को उभारा और कहा, "जो व्यक्ति किसी बंजर ज़मीन को हरी-भरी बनाएगा, उसे ईश्वर की तरफ़ से बदला मिलेगा" और कहा, "जो व्यक्ति कोई पेड़ लगाए, जब तक वह वृक्ष रहेगा, पुण्य मिलता रहेगा" और कहा, "वृक्षारोपण करते समय यदि सूचना मिले पृथ्वी विनाश होने वाली है, तब भी वृक्ष ज़रूर लगाया जाए ।" पैग़म्बर (सल्ल०) ने युद्ध के दौरान भी पेड़ों की कटाई और फ़सलों को तबाह करने से मना किया है । **–आसिफ़ ख़ान 'आदिल'**

ईश्वर है सबका स्वामी

ईश्वर एक सबहि का स्वामी ।
दूजा कोउ जगत् मा नाहीं ।।
आदम, इबराहीम, मुहम्मद, ईसा ।
इहि सब हईं दूत जगदीशा ।।
इन्हुं को ईश न कहउ भ्राता ।
इहिं सब आहीं ईश्वर-दासा ।।
वह तउ पुत्र न पिता कहावइ ।
समगुण औरू कोउ नहिं पावइ ।।
शिक्षा देत यही कुरआना ।
प्यारे ! अस गुर भूलि न जाना ।।

–अलाउद्दीन हमज़ा रहमानी
बाराबंकी

बिहार व झारखंड का एक मिसाली इदारा

इदारा मदीनतुल उलूम सोसायटी (रजिस्टर्ड)

ज़ाकिर नगर, आज़ादनगर, जमशेदपुर, झारखंड

का परिचय

और उसके तहत चलने वाले इदारों के नाम

- मदरसा मदीनतुल उलूम
- एम॰ओ॰ अकेडमी हाईस्कूल
- मदीनतुल उलूम कौंसिल ऑफ़ इस्लामिक एजुकेशन
- मदीनतुल उलूम इंस्टीट्यूट ऑफ़ इन्फारमेशन टेक्नॉलोजी
- मदीनतुल उलूम मस्जिद
- सैयद सुलैमान नदवी हॉल
- मर्कज़ मुताला-ए-इस्लामी
- मदीनतुल उलूम टेक्नीकल इंस्टीट्यूट
- सैयद मौदूदी हॉल

फूड पॉइजनिंग

फूड पॉइजनिंग एक आम बीमारी है । यह बीमारी गर्मी के मौसम में ज़्यादा फैलती है । फूड पॉइजनिंग तीन तरह से होती है । यह बीमारी खाने-पीने की चीज़ों पर मंडराते मक्खी, मच्छरों से ज़्यादा फैलती है । बासी भोजन या गंदे पानी से बनाए जाने वाली चीज़ों से भी इन बीमारियों के फैलने की आशंका बनी रहती है । इसके अलावा बाज़ार में मिलने वाले गन्ने का रस, कटे फल और गोल गप्पे आदि से भी फूड पॉइजनिंग होता है । मरीज़ को शुरुआत में पेट में मरोड़ उठता है, नाभि के आसपास तेज़ दर्द होना, सिर चकराना, उलटी-दस्त, ब्लड प्रेशर कम हो जाना फूड पॉइजनिंग के अहम लक्षण हैं ।

इस बीमारी को लेकर लोगों के मन में अलग-अलग धारणाएं हैं । दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन के नर्सिंग होम के चेयरमैन डॉक्टर वी॰के॰ मोंगा कहते हैं कि इस बीमारी से बचाव का सबसे आसान तरीक़ा है कि कटे हुए फल बिल्कुल न खाएं, गंदे पानी से बने पदार्थ न खाएं, बाज़ार में मिलने वाला गन्ने का रस न पिएं, पानी उबालकर पिएं और समय-समय पर पानी, ग्लूकोज, रूहअफ़ज़ा आदि पीते रहें ।

डॉक्टर मोंगा बताते हैं कि फूड पॉइज़निंग में डायरिया की स्थिति में दूषित भोजन के ज़रिये शरीर में घुसने वाला बैक्टीरिया सबसे पहले आंतों को नुक़सान पहुंचाता है । उस कमी को पूरा करने के लिए भरपूर मात्रा में तरल पदार्थों का सेवन करें । पानी की कमी को पूरा करने के लिए जीवन रक्षक घोल, जैसे फलों का रस, सूप वग़ैरह भी पी सकते हैं । फूड पॉइज़निंग होने की सूरत में पानी का भरपूर इस्तेमाल करें नहीं तो कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ सकती है और अमाशय उत्तेजित हो सकता है । उल्टी-दस्त यानी डायरिया होने से शरीर में मौजूद सारे ज़रूरी इलेक्ट्रोलाइट्स (जैसे पोटेशियम, सोडियम व ग्लूकोज) बाहर निकल जाते हैं और शरीर कमज़ोर हो जाता है । ऐसे में इलेक्ट्रॉल पावडर वग़ैरह का इस्तेमाल किया जा सकता है या फिर आधा चम्मच शहद या ग्लूकोज सीरप का फ्रूट जूस (पोटेशियम के लिए) में मिलाकर उसमें चुटकी भर नमक मिक्स कर लें । इसे दिन भर पीते रहने से शरीर में पोटेशियम, ग्लूकोज और सोडियम क्लोराइड की आपूर्ति हो जाती है ।

क्या करें क्या न करें

- फूड पॉइजनिंग हो तो मुंह में हाथ डालकर ज़बरदस्ती उल्टी करने की कोशिश न करें ।
- डायरिया और उल्टी के बाद पौष्टिक भोजन लेने की कोशिश न करें ।
- आसानी से पचने वाले खाद्य पदार्थ ही लें, पतली खिचड़ी, छाछ, सब्ज़ी के सूप आदि लेना फ़ायदेमंद रहेगा ।

सावधानियां

- खाना बनाने से पहले अच्छी तरह हाथ धो लें ।
- प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थों को कच्चा न खाएं ।
- गर्म या फिर ज़्यादा ठंडी चीज़ें ही खाने की आदत डालें ।
- अगर भोजन बासी हो तो बिल्कुल न खाएं ।
- जंगली मशरूम का सेवन न करें ।
- घरेलू डिब्बाबंद पदार्थों को खाने के पहले गर्म करें ।
- ज़्यादा दिन तक फ्रिज में रखे भोजन का सेवन भी बिल्कुल न करें ।
- पानी उबाल कर पिएं ।
- समय-समय पर पानी, ग्लूकोज या फलों के रस लें ।
- कटे हुए फल बिल्कुल न खाएं ।

–ज़िल्ले रहमान

अपने दुख कम लगते हैं,
जब दूसरों के दुखों से
उनकी तुलना की जाए ।
(स्पेनी उद्धरण)

पुस्तक प्रकाशन

आज कितने ही लोग ऐसे हैं, जिन्होंने विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, वाणिज्य शोध आदि अनुशासनों में उच्च शिक्षा-प्रशिक्षण प्राप्त किया है, लेकिन वे सरकारी सेवाओं के मुहताज बने हुए हैं । दूसरी ओर वे मुर्ग़ी पालन, डेरी, ट्रांसपोर्ट, कपड़ा या दवा व्यवसाय जैसे स्व-रोज़गार को हेय मानते हैं । इन उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं के लिए पुस्तक प्रकाशन के उद्यम में व्यापक संभावनाएं हैं ।

इसके लिए कुछ पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं । भारत सरकार के श्रम मंत्रालय में रोज़गार और प्रशिक्षण महानिदेशालय अल्पकालिक पाठ्यक्रम चलाता है । दिल्ली और इलाहाबाद में कुछ निजी संस्थान भी प्रिंटिंग का प्रशिक्षण देते हैं । यदि किसी ने एम॰बी॰ए॰ किया हुआ हो तो वह एक अतिरिक्त लाभ हो सकता है ।

एक प्रकाशक ने कहा कि प्रकाशन में आने से पूर्व आप देश भर की यात्रा करें । रेलवे प्लेटफार्म, स्कूल-कॉलेजों और पुस्तकालयों का निरीक्षण करें और देखें कि लोगों की रुचियां क्या हैं, किस तरह के प्रकाशनों की कमी है । इन दिनों कई विषयों पर पुस्तकों की ख़ूब मांग है और इसमें व्यापक संभावना है । ख़ास तौर पर हिन्दी में इस विषय से संबंधित पुस्तकों की घोर कमी है ।

प्रकाशन शुरू करने के लिए न्यूनतम पूंजी 30-40 हज़ार है । वैसे यह आप पर निर्भर करता है कि आप किस पैमाने पर कारोबार करना चाहते हैं । यदि बड़े पैमाने पर करना चाहते हों तो इसके लिए डेढ़ लाख रुपये की आवश्यकता होगी । तभी व्यावसायिक बैंक आसान शर्तों पर शिक्षित युवाओं को स्वरोज़गार हेतु ऋण उपलब्ध कराते हैं ।

एक प्रकाशक ने कारोबार की परेशानियों के बारे में कहा कि कभी-कभी यदि ग़लत चुनाव हो जाता है, तो पुस्तकें नहीं बिकतीं । तब पुस्तकें डंप करनी पड़ती हैं । दूसरे इनके उचित रख-रखाव की समस्या है । इन दिक़्क़तों की तुलना में फ़ायदे बहुत हैं । आप केबिन में बैठ कर संसार भर के लोगों से संवाद क़ायम करते हैं । यह अपने आप में बहुत बड़ा रोमांच है । आप प्रबुद्ध लेखकों, संपादकों और प्रतिष्ठित लोगों के संपर्क में रहते हैं ।

यह आशंका हो सकती है कि दृश्य-श्रव्य माध्यम के बढ़ते प्रचार से पुस्तकों के प्रति ज़नरुचि कम हो गयी है, ऐसे में इस व्यवसाय में आना बुद्धिमानी नहीं होगी । लेकिन कई प्रकाशक इस बात से साफ़ इन्कार करते हैं कि प्रकाशन में कोई मंदी आयी है । पुस्तक को पढ़ना कम नहीं हुआ है । टेलीविज़न से लोग ऊब चुके हैं । साक्षरता के प्रसार से संभावनाएं बढ़ गयी हैं ।

किसी पुस्तक के प्रकाशन में औसतन तीन महीने लगते हैं । इस तरह इस कारोबार में आपकी पूंजी का लाभ भी शीघ्रता से मिलने लगता है ।

फलते-फूलते इस कारोबार की बारीकियों को समझने के लिए आप यदि किसी प्रकाशक के यहां कुछ दिन नौकरी कर लें, तो यह आपके भविष्य के लिए एक अनुकूल योग्यता होगी ।

● संपादन प्रभाग

Niyaz Ahmed
Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877
STAR
Hosiery Centre
Wholesaler
Readymade & Handloom
B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G)

आतंकवादी

❖ डॉ॰ पूरन सिंह
(नयी दिल्ली)

उस दिन मेरी ड्यूटी मंदिर के बिल्कुल पास में ही थी । मैंने देखा कि बाहर मंदिर परिसर में गोलियां चलने लगीं थीं । पता चला कि आतंकवादियों ने हमला बोल दिया । दो आतंकवादी तो भाग गये, लेकिन एक किसी तरह बचकर सीधा मंदिर की ओर ही गोलियां चलाता आ रहा था । मैंने पोज़ीशन लेकर उस पर गोलियां चलाना शुरू किया तो वह धराशायी हो गया था । मैं भागकर उसके पास गया और उसके सिर पर पुनः गोलियां चलाने लगा था । मुझे भ्रम था कि कहीं वह ज़िंदा न हो ।

आतंकवादी उल्टा पड़ा हुआ था । मैंने उसे सीधा किया तभी मेरी नज़र उसके बाएं हाथ पर पड़ी जिस पर "मुहम्मद अली" लिखा हुआ था । अभी मेरी नज़र उठी ही थी कि उसके दाएं हाथ पर लिखे नाम पर अटक गयी जिसे नाम लिखने वाली मशीन से मिटाने का प्रयत्न किया गया था फिर भी कुछ अक्षर चमक रहे थे । 'सिंह' तो मैंने पढ़ लिया लेकिन शेष अक्षर मैं नहीं पढ़ सका था । तब तक मेरे अन्य साथी वहां आ गये थे । कुछ समय पश्चात आला आफ़िसर भी पहुंच गये थे ।

आतंकवादी मारा गया था ।

उसके पास से पासपोर्ट और अन्य दस्तावेज़ बरामद हुए ।

थोड़ी देर बाद शहर में कर्फ्यू लग गया था । टी॰वी॰ पर समाचार प्रसारित किया जा रहा था, "देश के सबसे बड़े मंदिर पर हमला । तीन में से दो आतंकवादी बच निकले । एक को मौक़े पर ही मार डाला गया । वह अलक़ायदा का प्रशिक्षित आतंकवादी था । उसके तार पाकिस्तान से जुड़े माने जाते हैं । वह.....एक पेशेवर आतंकवादी हो सकता है । अलक़ायदा ने इस हमले की ज़िम्मेदारी ली है ।"

मैं समाचार सुन रहा था और बार-बार यही सोच रहा था कि आख़िर उसके दाएं हाथ पर पूरा नाम क्या था ? जिसे मिटाने का प्रयत्न किया गया था । और क्यों वह अपने साथ वीज़ा और पासपोर्ट लेकर चला था ? ये दोनों सवाल आज तक मेरे मस्तिष्क में घूम रहे हैं । अलक़ायदा ने इसकी ज़िम्मेदारी क्यों ले ली ? जबकि वह किस 'क़ायदा' का आतंकवादी था यह बात तो शायद कोई जानता ही नहीं ।

कविता

ख़ुदा

कौन कहता है
ख़ुदा नहीं है
तुम्हें अपने होने
पे यक़ीं नहीं है ।
ये माना कि
देखा नहीं उसे
हवा, में ख़ुशबू को
कोई झूठला नहीं सकता ।
आये हो वहीं से
जाना है वहीं पर
तुम भूल गये उसको
ये और बात है ।
सूरज, चांद तारे
दरख़्त, दरिया और हवा
ख़ुदा का और कौन-सा
जलवा देखोगे
देखा नहीं जिसे
मानने से है इन्कार
फिर तो अपने पूर्वजों
से भी होगा तुम्हें इन्कार ।
ख़ुदा नाम पर यक़ीं
नहीं तुम्हें
सच तुम क़ाबिले यक़ीन
नहीं ।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा
छिन्दवाड़ा (म॰प्र॰)

PERWEZ ALAM

"अल्लाह उस आदमी के साथ दयालुता का मामला करेगा जो क्रय-विक्रय और क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने में नरमी और शालीनता बरते।" (हदीस)

0657-2439882
0657-6548732

UNIQUE ELECTRICAL POINT

EXCLUSIVE RANGE IN SPARE PARTS

DEALS IN : HOME ELECTRICAL APPLIANCES, SALE & SERVICE

SPECIALIST :

Spare Parts of Home Electrical Appliances,
Aqua Guard, R.O., Washing Machine,
Fan, Mixie, Iron, Pump, Geyser &
Other Electrical Accessories.

हमारे यहां घर में इस्तेमाल होने वाले बिजली के सामान और उसके पार्ट्स मिलते हैं, जैसे–पंखे, कूलर, प्रेस, वॉशिंग मशीन, अक्वा गार्ड, गीज़र और वाटर पम्प।

एक बार ख़िदमत का मौक़ा दें

संपर्क :

Shop No. O-1, Tank Road, Sakchi, Jamshedpur-831001

चंगेज़ ख़ान और मुसलमान

● एहसान शौक़

एशिया प्राय:द्वीप के सारे बड़े-बड़े बहादुरों, लड़ाकों और वहशी ख़ानाबदोश क़बीलों को मंगोल झंडे के नीचे जमा करने के बाद चंगेज़ ख़ान की नज़रें मरुस्थल के उस पार नये इलाक़ों पर जम गयीं, जो सदियों से क़ाफ़िलों के आवागमन के लिए उपयोगी थे और जहां मध्य एशिया के शहर आबाद थे ।

चीन की संस्कृति व सभ्यता पांच हज़ार वर्ष पुरानी थी, मगर चीनवासी उन्नतिशील थे । वे 'क्वान्तीं (चीनी फ़लसफ़े के अनुसार आसमान का बेटा) को जंग का देवता मानते थे और जंगी चालों के बहुत माहिर थे । वे दूसरे फ़नों की तरह लड़ाई को भी एक फ़न समझते थे और आमतौर पर मरुस्थलीय मैदानों में युद्धाभ्यास किया करते थे, जबकि चीन का बूढ़ा शहंशाह ताजदार ज़रीन बहुत ही कमज़ोर और अय्याश शासक था और उसका उत्तराधिकारी 'यनकंग' था । शहंशाह के सैर व शिकार के दौरान, चीन की दीवार के उस पार रहने वाले क़बीलों के दिलों में जब हीन भावना जागृति हुई, तो चंगेज़ ख़ान ने चीन की दीवार के उस पार नयी सरज़मीन पर आक्रमण करने से पहले चीन के पहलू में स्थित फ़ाख़ताइयों और किरगिज़ों के ख़ानाबदोश क़बीलों को पराजित करके फिर चीन के उन लुटेरों और डाकुओं का दमन करने के लिए अपने घुड़सवार दस्ते रवाना किये, जिन्होंने 'नानलो' के पास क़ाफ़िलों के दक्षिणी रास्तों पर लूट-मार, क़त्लोग़ारत का बाज़ार गर्म कर रखा था ।

'हया' के क़ज़्ज़ाकों को लड़ाई में पराजित करने के बाद चंगेज़ ख़ान ने 'हया' के राजघराने की एक औरत से शादी करके हया के सरदारों से समझौता कर लिया, ताकि चीन की दीवार के दाएं-बाएं दोनों तरफ़ से अपनी सेना की रक्षा कर सके । उन्हीं दिनों जब चीन का बूढ़ा बादशाह मर गया और उसके बाद उसका बेटा वाइवंग सिंहासन पर बैठा, तो उसने पूर्वी गोवी मरुस्थल में बसने वाले ख़ानाबदोशों से लगान वसूलने के लिए अपना एक प्रतिनिधिमंडल गोवी मरुस्थल की ओर भेजा । शहंशाह का यह प्रतिनिधिमंडल जब चंगेज़ ख़ान से लगान मांगा, तो चंगेज़ ख़ान से टका-सा जवाब देते हुए कहा कि ऐसे बेहूदा व्यक्ति को सिंहासन पर बैठने का कोई हक़ नहीं है ।

इसी रात चंगेज़ ख़ान ने अरख़ूनों, तरख़ानों, पश्चिमी तुर्कों और नये वफ़ादार सरदारों को अपने ख़ेमे में बुलवाया और उनके मश्विरे से चीनी दूतों को शहंशाह के नाम अपना पैग़ाम दिया और उन्हें वापस भेज दिया । चीनी दूतों से चंगेज़ ख़ान का जवाबी उत्तर सुनकर शहंशाह वाइवंग गुस्से में आकर चंगेज़ ख़ान को सबक़ सिखाने के लिए अपने एक सेनानायक 'फोचीन' के नेतृत्व में एक विशाल सेना चंगेज़ ख़ान पर आक्रमण करने के लिए भेजी, जहां चंगेज़ ख़ान की वहशी फ़ौजों का सेनानायक जबीनोयान अपने लश्कर के साथ डेरा डाले हुए था । चीन की सेनाओं ने पूरी ताक़त के साथ मंगोलों पर आक्रमण किया, मगर मंगोल बहादुरों ने बड़े-बड़े हल्क़ों का चक्कर काटकर चीन के फ़ौजी दस्तों को तितर-बितर कर दिया । जाड़ों का मौसम बीतते ही चंगेज़ ख़ान ने चीन के उत्तरी क्षेत्रों में आबाद लियावोतुंग के शहज़ादों को अनगिनत तोहफ़े भेजे और फिर उनसे दोस्ती का समझौता करके उन्हें उत्तरी चीन पर आक्रमण करने के लिए उकसाया, ताकि उनका प्रभुत्व दोबारा स्थापित हो सके ।

वहशी और जंगजू क़बाइल आमतौर पर उत्तरी दिशा से चीन पर आक्रमण किया करते थे, मगर चीन में आबाद करोड़ों निवासी चहारदीवारी के सुरक्षित व मज़बूत घेरे में अपने आपको बिल्कुल सुरक्षित समझते थे, क्योंकि उनका विचार था कि इस चीन की महान दीवार को पार करके कोई आक्रमणकारी उन तक नहीं पहुंच सकता ।

गोवी मरुस्थल में कई युद्ध के दौरान चंगेज़ ख़ान ने चीन की दीवार का अच्छी तरह से निरीक्षण किया था । चीन पर आक्रमण करने से पहले चंगेज़ ख़ान अपने मंगोल क़बीले के दिल से चीन के शहंशाह का डर निकालता रहा और चुपचाप जंगी तैयारियां करता रहा । गोया उस अवधि में चंगेज़ ख़ान चीन के गद्दारों, अपने मुख़बिरों, जासूसों और सिपाहियों के द्वारा चीन और चीन के वासियों के बारे में

जानकारी प्राप्त करता रहा । इसके अतिरिक्त चीन की ऊंची दीवारों वाले मज़बूत शहरों के संचित धन-दौलत और नदियों के बारे में भी पूछताछ करता रहा ।

हर तरह से छानबीन कर लेने के बाद चंगेज़ ख़ान ने चीनी साम्राज्य से युद्ध करने के लिए इस अवसर को उचित समझा । चंगेज़ ख़ान ने अपनी सेना को जबी नोयान, मकोली और सोबदाई बहादुर के नेतृत्व में विभाजित करके एक साथ चारों दिशाओं से चीन पर आक्रमण करने का आदेश दिया । मंगोल घुड़सवारों के दस्ते शिकारी जानवरों की-सी चालाकी और होशियारी से चीन की महान दीवार के पास पहुंचे और उन्होंने तीरअंदाज़ी करके चीन की दीवार के रक्षकों और पैदल सेनानियों को तितर-बितर कर दिया और बड़ी आसानी के साथ मंगोल सेना चीन की दीवार के पास पहुंच गयी, क्योंकि चीनी शासक ने जो वहशी फ़ौजें अपनी फ़ौज में भर्ती की थी, वे सबकी सब मंगोल सेना से आ मिली ।

इसके बाद चीनी शहंशाह के द्वारा भेजी गयी नयी फ़ौज मंगोल ख़ानाबदोशों का मुक़ाबला करने के लिए जब पहाड़ों की भूल-भुलैया में दाख़िल हुई, तो मंगोल सेना के सरदार जबी नोयान ने चीनी फ़ौजों के चारों ओर एक चक्कर काटकर अपनी सेना के साथ चीनियों पर भीषण आक्रमण कर दिया, जिससे फ़ौज में बेपनाह भगदड़ मच गयी । मंगोलों ने चीनियों की शक्ति को कुचलने के लिए दरिंदगी का ऐसा तांडव किया कि चीनी सेना को गाजर-मूली की तरह काटकर उसमें भय व व्याकुलता फैला दी । छोटे-छोटे मज़बूत क़िलेबन्द शहरों पर अपना अधिकार करते हुए मंगोल सेना "ताईयंग फो" तक जा पहुंची । यद्यपि ताईयंग फो के घेराव के दौरान चंगेज़ ख़ान घायल हो गया था, मगर वह पूर्णतया चीन पर अधिकार करने का विचार दिल से न निकाल सका । चंगेज़ ख़ान हर जंग से अनुभव प्राप्त करता था और अनुभव प्राप्त करने का यह सिलसिला विजय की हालत में बदलता चला आ रहा था ।

रास्ते में मंगोल सेना ने बड़ी बेदर्दी और क्रूरता से शहरी निवासियों का क़त्लेआम किया और शहरों में आग लगा दी, ताकि कोई दुश्मन मंगोल सेना की यलग़ार को रोक न सके । उत्तरी चीन के कई शहरों पर अधिकार करने के बाद मंगोल सेना आंधी और तूफ़ान की तरह सिंहासन "यन कुंग" की तरफ़ बढ़ी, जहां बड़ी-बड़ी नदियों के किनारे ताज़ादम चीनी सेना मंगोलों का सामना करने के लिए खड़ी थी । यन कुंग के रास्ते में बाग़ों के आसपास के क्षेत्रों और चरागाहों में से गुज़रते हुए चंगेज़ ख़ान को चीनी फ़ौजों से कई बार झड़प हुई, क्योंकि सख़्त घेराबन्दी के बावजूद मंगोलों को क़दम-क़दम पर चीनी निवासियों के हस्तक्षेप का भी सामना करना पड़ रहा था ।

पतझड़ का मौसम आया, तो चंगेज़ ख़ान ने अपनी सेना का रुख़ चीन की तरफ़ मोड़ दिया और चीन के लियावतांग का घेराव कर लिया । एक भीषण संघर्ष के बाद चंगेज़ ख़ान ने अंततः लियावतांग पर अधिकार कर लिया । जिन लोगों ने चंगेज़ ख़ान की अधीनता स्वीकार कर ली, तो चंगेज़ ख़ान ने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया । मौसमे बहार में जब चरागाहों में ख़ूब घास उग आयी और नयी मुहिम के लिए जंगी घोड़े खा-पीकर ताज़ादम हो गये, तो चंगेज़ ख़ान ने चीनी कारीगरों और इंजीनियरों को ज़बरदस्ती भर्ती करके दोबारा तीन दिशाओं से चीन पर आक्रमण कर दिया । चंगेज़ ख़ान के तीनों बेटे चुग़ताई, ओग़दाई और तोलाई, जो बोरताई से पैदा हुए थे, चूंकि चंगेज़ ख़ान बोरताई से बेपनाह मुहब्बत करता था और उसकी इन हक़ीक़ी औलाद को अपना उत्तराधिकारी समझता था । चंगेज़ ख़ान ने अपने विशाल साम्राज्य को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए अपने बड़े बेटे जोची ख़ान को शिकार विभाग के पद पर नियुक्त किया था । दूसरे बेटे चुग़ताई को क़ानून और सज़ा का विभाग और तीसरे बेटे ओग़दाई को परामर्श व विचार विनिमय का काम सौंपा था तथा चौथे बेटे तोलाई को सेना के एक दस्ते का सेनानायक नियुक्त किया था । चंगेज़ ख़ान के इन तीनों बेटे ने दक्षिण की ओर से चीन के शांसी प्रांत को जीत लिया ।

उत्तर में जोची ख़ान जो चंगेज़ ख़ान का सबसे बड़ा पुत्र कहलाता था, खंगान की पहाड़ी श्रृंखला को पार करते हुए लियावतांग जा पहुंचा । इसी युद्ध में चंगेज़ ख़ान ने पेशक़दमी करके यनकुंग (राजधानी) के परोक्ष में बड़े समुद्र को पार करके आसपास के देहातों को मलियामेट कर दिया । शहर के मकानों में आग लगाकर आबादी के सारे मर्दों और बच्चों को क़त्ल कर दिया । हवांगहो नदी के उत्तर के सारे प्रांतों को जीतने के बाद कई दिनों तक चंगेज़ ख़ान ने यनकंग का घेराव किये रखा । अंततः जब उसकी सेना में बहुत-से चीनी सेनाध्यक्ष अपनी सेना सहित मंगोलों से आ मिले, तो चीनी शहंशाह को और अधिक दुख-दर्द और कठिनाई तथा परेशानी को सह सकने की हिम्मत न रही ।

अनु॰ : **इरशाद अली ख़ान**

मौसमों का महत्व

❐ विद्या प्रकाश

बरसात का मौसम था । आकाशमंडल में काले कजरारे मेघ छाये हुए थे । हल्की-हल्की बूंदाबांदी हो रही थी और रह-रहकर आसमान में चपल गति से बिजली चमक कर जीवधारियों के हृदय को अपनी तेज़ आवाज़ के साथ कंपा डाल रही थी । ठंडी-ठंडी हवा का झोंका बह रहा था और जलबिन्दुओं में भीगे दरख़्त अच्छे लग रहे थे ।

अब्दुल, अकरम और अज़हर रिहाइशगाह के दालान में तख़्त पर बैठे मौसम संबंधी बातचीत में मशग़ूल थे । तीनों दोस्त थे और एक ही मुहल्ले में पास-पास रहते थे ।

अब्दुल ने कहा, 'गर्मी का मौसम कोई मौसम है । धूल-धक्कर उड़ रही है और आफ़ताब आसमान से आग उगल रहा है और धरती तवा-सी जल रही है । हवा में नाक़ाबिले बरदाश्त आंच और उमस होती है । इससे अच्छा तो बरसात का मौसम है ।

ठंडी हवा के झकोरों में बेला के फूल की नाचती लरज़ती झाड़ी कितनी सुहावनी लगती है और फूलों के राजा गुलाब की लाल पंखुड़ियों पर वर्षा की सफ़ेद बूंद मोती-सी झिलमिल चमकती, कितनी प्यारी लगती है । बरसाती पानी में काग़ज़ की नौका चलाने में कितना मज़ा आता है, जब बच्चे किलकारी मारकर उसके पीछे-पीछे भीगते हुए भागते हैं ।'

अकरम ने असहमति जताते हुए कहा, 'बरसात में तो चारों तरफ़ बदबूदार कीचड़ हो जाती है जो देखने में बुरी लगती है । सर्दी का मौसम मौसमों में सबसे बेहतर और ख़ूबसूरत है । इस मौसम में बाज़ार में गोभी, मटर वग़ैरह नयी-नयी, हरी लजीज़ सब्ज़ियां आ जाती हैं । जितना जी चाहे खाओ । नुक़सान नहीं होता और न मेदा ख़राब होता है । इन दिनों आदमी स्वेटर, कोट, मफ़लर, पुलोवर, कार्डिगन, कनटोप आदि वस्त्र पहनता है । जो बात इस मौसम में है वह बरसात और गर्मी में कहां ?'

अब तक चुपचाप बैठा अज़हर बोला, 'अमां क्या बात करते हो ? जाड़े में जहां भी जाओ, घर से बाहर निकलो, बदन पर कपड़ों का एक मन का बोझ लादकर जाओ । वर्षा में पानी झमाझम बरस रहा है । कमरे में एक जगह चुपचाप कूपमंडूकवत पड़े रहे । मन ऊब जाता है । गर्मी में शरीर पर हल्का-फुल्का कपड़ा डाले, पिकनिक पर जाओ या सिनेमा-सरकस पर निकलो । सफ़र में न रज़ाई-गद्दा ले जाने की फ़ज़ीहत और न किसी तरह की क़िल्लत । गर्मी में फ़ायदा और आराम है ।

अकरम के अब्बू गलियारे से गुज़र रहे थे । उन्होंने तीनों मित्रों की मौसम से मुताल्लिक़ पसन्द-नापसन्द की बातें सुनी और वे गंभीर स्वर में बोले, 'अल्लाह ने सर्दी, गर्मी और बरसात के मौसमों को बामक़सद बनाया है । गर्मी का मौसम न हो तो किसानों की फ़सल कैसे पके ? पानी न बरसे तो आदमी की पानी की ज़रूरत कैसे पूरी हो ? जाड़े का मौसम न हो तो मौसमों के बीच संतुलन कैसे क़ायम हो और कैसे हमें मौसमों की अहमियत का एहसास हो ? बारी-बारी से अपने-अपने मुक़र्रर वक़्त पर आकर ये मौसम मनुष्य की ज़िन्दगी की ज़रूरियात को पूरा कर जाते रहे हैं । अपनी-अपनी जगह पर सभी मौसमों की बराबर क़ीमत और बराबर अहमियत है । अल्लाह की इस नेमत के लिए हमें हमेशा उसका शुक्रगुज़ार और एहसानमंद होना चाहिए ।

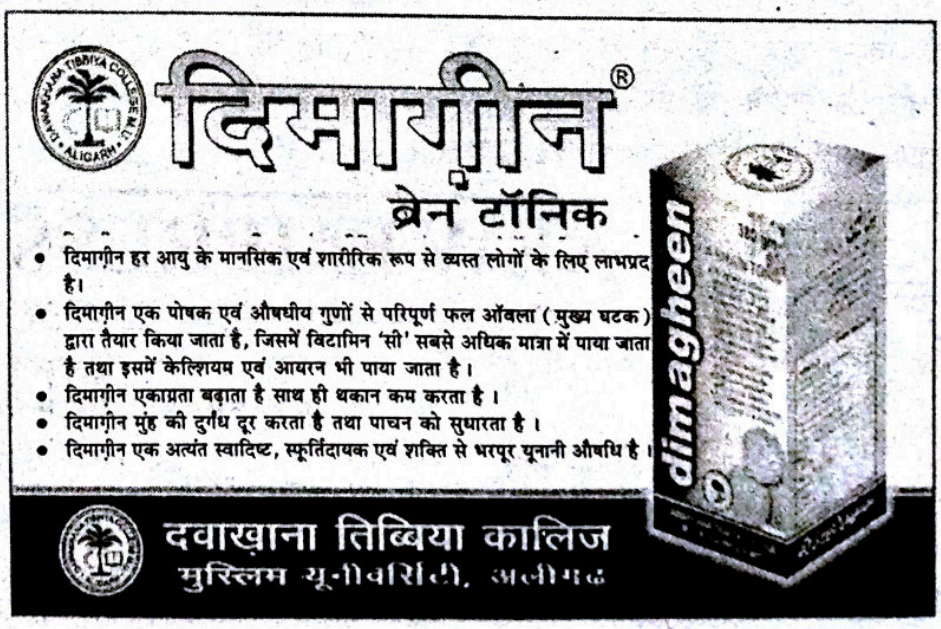

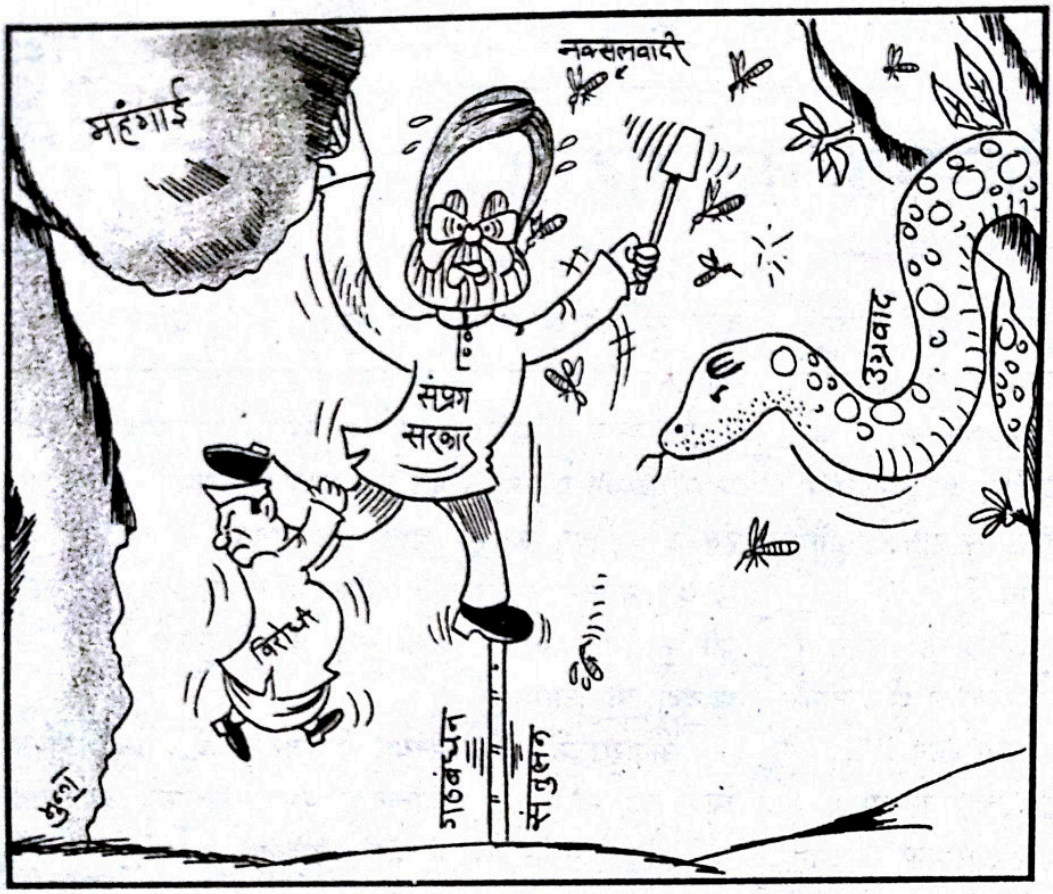

प्लास्टिक के पेड़

अब वह दिन दूर नहीं जब आप अपने घर पर गमलों में प्लास्टिक उगा सकेंगे । वर्षों से वैज्ञानिक ऐसे प्लास्टिक की खोज में लगे हुए थे जो जैविक तरीक़े से शीघ्र नष्ट हो जाए । आम प्लास्टिक जैविक तरीक़े से नष्ट होने में वर्षों लगा देते हैं । आख़िरकार वैज्ञानिकों ने प्लास्टिक का उत्पादन करने वाले ऐसे पौधे बना लिए हैं, जिनसे पैदा होने वाली प्लास्टिक पर्यावरण मित्र होगी ।

अब तक प्लास्टिक पेट्रोलियम पदार्थों से बनती आयी है, किन्तु कुछ वर्ष पूर्व वैज्ञानिकों को जीवाणुओं से भी प्लास्टिक बनाने में सफलता मिली थी । मगर उत्पादन लागत अधिक होने के कारण बड़े पैमाने पर उसका उत्पादन नहीं किया जा सकता था ।

प्लास्टिक अस्ल में विशाल ऑर्गेनिक पॉलिमर के बने कृत्रिम रेशे हैं, जिन्हें बहुमूल्य प्राकृतिक खनिज ईंधनों (तेल, कोयला, पेट्रोलियम या प्राकृतिक गैस) से प्राप्त किया जाता है । आमतौर पर प्लास्टिक को नष्ट होने में वर्षों लगते हैं, लेकिन मोनसांटों के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित पौधों से उत्पादित प्लास्टिक न सिर्फ़ पर्यावरण के अनुकूल होगी बल्कि उसकी उत्पादन लागत भी कम आने की आशा है ।

फ़िलहाल इसका मूल्य पेट्रोलियम प्लास्टिक की तुलना में अधिक है किन्तु एक बार व्यावसायिक उत्पादन शुरू हो जाने पर मूल्यों में कमी की आशा की जा सकती है ।

इससे पहले कि प्लास्टिक की बड़े पैमाने पर खेती की जा सके, वैज्ञानिक उससे होने वाले लाभ-हानि का विश्लेषण करने में लगे हैं । निकट भविष्य में किसानों को एक नयी नक़दी फ़सल मिलने वाली है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है।

NEW EMPRESS MILLS
1st Phase Industrial Area BALOTRA-344022 (Raj.)
Visit us. www.Empress. com. E-mail : empresspoplin@hotmail.com
(M) SAYED PARWAN ALI 09214408133
LILLY लिली गोल्ड GOLD
Superior Nighty
KAJAL काजल गोल्ड GOLD
MFG. OF : HIGHCLASS STANDARD POPLIN & NIGHTY PRINTS

AL KABIR POLYTECHNIC

A Muslim Minority Unaided Institution
Recognised by SBTE, Govt. of Jharkhand
& Approved by AICTE Govt. of India

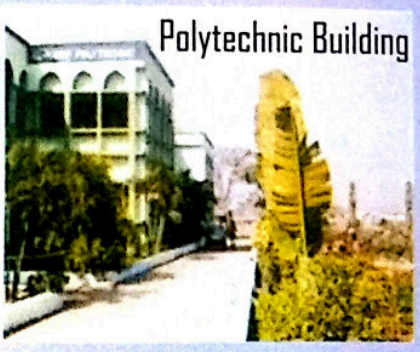
Polytechnic Building

The institute in its academic program imparts three year diploma courses in engineering in following branches.

- Civil Engg.
- Electrical Engg.
- Mechanical Engg.
- Automobile Engg.
- Computer Science & Engg.
- Electronics & Communication Engg.


Laboratories and workshop

★ ★ ★

Kabir Nagar, P.O. Kopali, Via-Mango,
Jamshedpur-831012, Jharkhand
Tel. : 06591-260092, Tele Fax : 06591-260414
E-mail : principal_akpjsr@rediffmail.com
Website : www.al-kabirjsr.com

Posted on 20-21 June 2010
July 2010
E-mail: kantidelhi@rediffmail.com
Publishing Date: 18.06.2010

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11

अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है । (क़ुरआन)

SAMIR KHAN **09890954240**

Let there Be light

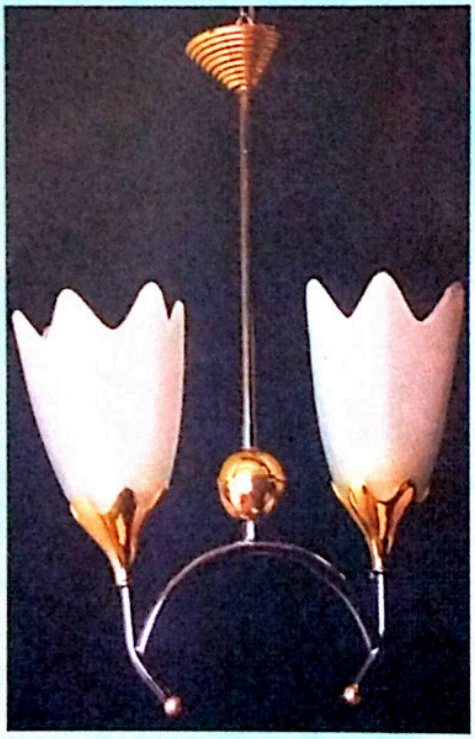

Let there Be light

- CHANDELIERS
- FIBER OPTICS
- CEILING LAMPS
- WALL LAMPS
- PICTURE LIGHTS/
- TRACK LIGHTS

- TABLE LAMPS
- FLOOR LAMPS
- SPOT LIGHTS
- GATE LIGHTS
- OUTDOOR LIGHTS
- UNDERWATER LIGHTS
- PEDASTAL

TAISIR
Enterprises

Next To Joao Menezes Pharmacy, Mapusa, Goa-403507
Tel. : 3226752, 2264813, Fax : 2262772
E-mail : taisirgoa@gmail.com